

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की पत्रिका

वर्ष- 14, अंक - 10-11, सितंबर-अक्टूबर 2026, मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarathi@gmail.com

राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार



रोहतक के शिक्षक अनिल कौशिक को मिला
राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार

शिक्षत्व

शिक्षक हुए थे सुब्रह्मण्यम अय्यर
सिखाने की थी आग प्रबल।
रोपा था स्वप्न विज्ञानी बनने का
जिस कलाम के हृदय में,
पोखरण में किया उसने
उन्नत माँ का भाल।
पढ़ाते-पढ़ाते ही चल बसा
भारती का अनुपम लाल।

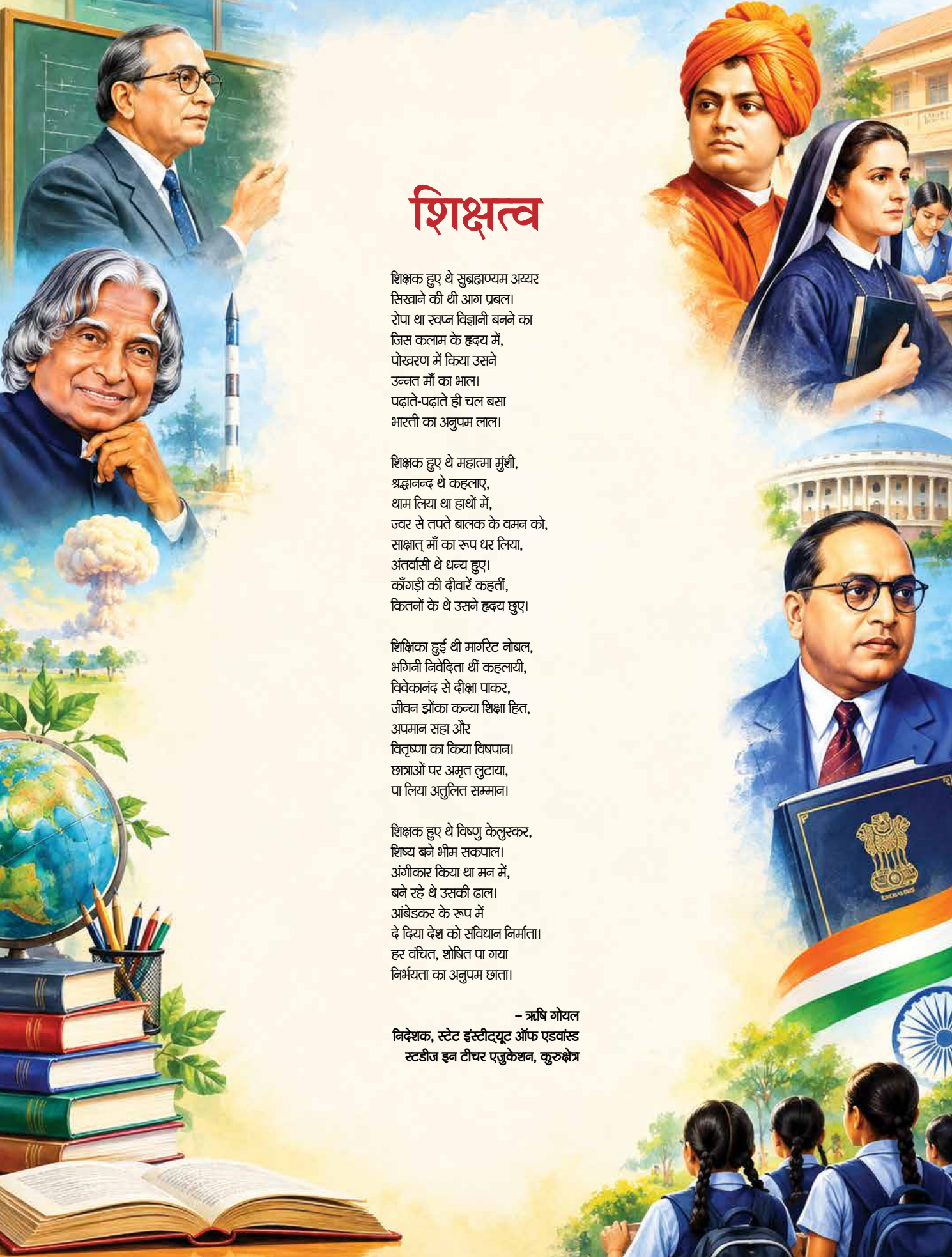
शिक्षक हुए थे महात्मा मुंशी,
श्रद्धानन्द थे कहलाए,
थाम लिया था हाथों में,
ज्वर से तपते बालक के वमन को,
साक्षात् माँ का रूप धर लिया,
अंतर्वासी थे धन्य हुए।
कॉंग्रेस की दीवारें कहलीं,
कितनों के थे उसने हृदय छुए।

शिक्षिका हुई थी मार्गरेट नोबल,
भगिनी निवेदिता थीं कहलायीं,
विवेकानंद से दीक्षा पाकर,
जीवन झोंका कन्या शिक्षा हित,
अपमान सहा और
वितृष्णा का किया विषपान।
छात्राओं पर अमृत लुटाया,
पा लिया अतुलित सम्मान।

शिक्षक हुए थे विष्णु केलुस्कर,
शिष्य बने भीम सकपाल।
अंगीकार किया था मन में,
बने रहे थे उसकी ढाल।
आंबेडकर के रूप में
दे दिया देश को संविधान निर्माता।
हर वंचित, शोषित पा गया
निर्भयता का अनुपम छाता।

— ऋषि गोयल

निदेशक, स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ एडवॉंस्ड
स्टडीज इन टीचर एजुकेशन, कुरुक्षेत्र





सितंबर-अक्टूबर 2026

प्रधान संरक्षक
नायब सिंह
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
महीपाल ढांडा
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
विजय सिंह दहिया
प्रधान सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल

जितेंद्र कुमार
महानिदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

मनिता मलिक
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

स्वप्निल रविंद्र पाटिल
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद्

डॉ. आर्या राठी
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिजाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य : 15 रुपये, वार्षिक : 150 रुपये

Published & Printed by **Parveen Sangwan**
on behalf of President, Shiksha Lok Society-
cum-Director General Secondary Education,
Haryana. Published from office of Director
General Secondary Education, Haryana,
Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5,
Panchkula.

Printed by M/s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd.
at its printing press B-278, Okhla, Industrial
Area, Phase -I,
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

शिक्षा ही वह कुंजी
है, जो ज्ञान, अवसर
और सफलता के द्वार
खोलती है।

- | | |
|---|----|
| » विद्यार्थियों में आत्मविश्वास जगाना शिक्षकों का विशेष दायित्व | 5 |
| » सिलेबस से बाहर निकलकर बच्चों की जिंदगी में झाँकना होगा | 7 |
| » शिक्षक केवल ज्ञान नहीं, विवेक और संस्कार भी प्रदान करता है : राज्यपाल | 8 |
| » एआई और रोबोटिक्स के दौर में शिक्षक की भूमिका और भी महत्वपूर्ण | 12 |
| » गुरु चरित्र-निर्माता ही नहीं, बल्कि जीवन का मार्गदर्शक- महीपाल ढांडा | 14 |
| » रोहतक के शिक्षक अनिल कौशिक को मिला नेशनल अवॉर्ड | 16 |
| » नव-नियुक्त 1054 प्राथमिक शिक्षकों का ओरिएंटेशन कार्यक्रम | 18 |
| » अटल टिकरिंग लैब्स के शिक्षकों का पाँच दिवसीय प्रशिक्षण | 19 |
| » साहस, प्रकृति और संस्कृति की अविस्मरणीय यात्रा | 20 |
| » रंगों से सपनों की उड़ान | 22 |
| » बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी शिक्षक गुलशन कुमार | 24 |
| » खेल-खेल में विज्ञान | 28 |
| » मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला | 30 |
| » महान कौन ? | 31 |
| » Call of the Wild | 32 |
| » Green Schools: Building a Sustainable Future | 34 |
| » The Beauty of October | 37 |
| » Diwali - The Festival of Lights and New Beginnings | 38 |
| » Dussehra - Why Good Always Wins | 40 |
| » Gandhi Jayanti - The Power of Truth | 42 |
| » World Space Week - Our Journey to the Stars | 44 |
| » Festivals that Bring us Together - Unity in Diversity | 46 |
| » Save Our Earth - A Festival for Nature | 48 |

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है।
यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।



गुरुर्ब्रह्मा
गुरुर्विष्णुः
गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरु साक्षात् परं ब्रह्म
तस्मै श्रीगुरवे नमः



विद्यार्थियों में आत्मविश्वास जगाना शिक्षकों का विशेष दायित्व -राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू

राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार' से सम्मानित आज के सभी पुरस्कार विजेताओं को मैं हार्दिक बधाई देती हूँ। देश के द्वितीय राष्ट्रपति, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती को शिक्षक दिवस के रूप में मनाकर, हमारे देशवासी, उनके प्रति एवं समस्त शिक्षक समुदाय के प्रति, सम्मान व्यक्त करते हैं। जो समाज शिक्षकों का सम्मान करता है, वह समाज सही अर्थों में प्रगतिशील होता है।

शिक्षकों के बीच आकर, मेरे अंदर विद्यमान विद्यार्थी और शिक्षक दोनों ही जीवंत हो जाते हैं। मुझे अपने शिक्षकों का सादर स्मरण होता है। उनके स्नेह और मार्गदर्शन के बल पर ही मैं अपनी जीवन-यात्रा में यहाँ तक पहुँच पाई हूँ। साथ ही, मुझे अपने विद्यार्थी भी याद आते हैं जिन्हें मैंने ओडिशा के राइरंगपुर में स्थित, श्री ऑरोबिंदो इंटीग्रल स्कूल में पढ़ाया था। मैंने अपने विद्यार्थियों से भी बहुत कुछ सीखा है। उन विद्यार्थियों के प्यार को मैं अपने जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि मानती हूँ। मैं भी कभी शिक्षक समुदाय की सदस्या रही हूँ, इससे मुझे विशेष सार्थकता का अनुभव होता है।

देवियों और सज्जनों!

सावित्रीबाई फुले, आधुनिक युग में, विद्यालय में पढ़ाने वाली, भारत की पहली शिक्षिका के रूप में जानी जाती हैं। बालिकाओं की शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने क्रांतिकारी पहल की थी और 19वीं सदी में, बालिका विद्यालयों की स्थापना की थी। आज के दिन, क्रांति-ज्योति-स्वरूपा, महान शिक्षिका, सावित्रीबाई फुले की स्मृति को, मैं सादर नमन करती हूँ।

बीसवीं सदी के आरंभ में पश्चिम बंगाल के बोलपुर जिले में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 'शांति-निकेतन' की तथा ओडिशा के पुरी जिले में प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी 'उत्कल मणि' पंडित गोपबन्धु दास ने 'वन विद्यालय' यानी ओपन एयर स्कूल की स्थापना की थी। उन विद्यालयों की स्थापना के पीछे यह उदात्त विचार था कि प्रकृति की गोद में विद्यार्थियों का सहज विकास होता है। देश को बहुआयामी योगदान देने वाले तथा सर्जनात्मक शिक्षा के प्रति विशेष रूप से समर्पित उन विभूतियों को मैं सादर नमन करती हूँ।

इस सभागार में लद्दाख से लेकर अंडमान एंड निकोबार आइलैंड्स तक तथा अरुणाचल प्रदेश से लेकर गुजरात तक, पूरे देश में शिक्षण के श्रेष्ठ प्रतिमान स्थापित करने वाले शिक्षक उपस्थित हैं। यह प्रसन्नता की बात है कि पुरस्कार विजेताओं में, गाँव के स्कूलों में पढ़ाने वाले शिक्षकों की संख्या अधिक है। मुझे आशा है कि इस वर्ष के पुरस्कार विजेताओं की अध्यापन एवं प्रशिक्षण



पद्धतियाँ और उपलब्धियाँ, अन्य शिक्षकों को भी शिक्षण में उत्कृष्टता के लिए प्रेरित करेंगी।

पुरस्कार विजेताओं के योगदान और उपलब्धियों पर केन्द्रित फिल्मों को देखकर, मेरा यह विश्वास और दृढ़ हुआ है कि निष्ठावान शिक्षक अग्रिम पवित्र के राष्ट्र-निर्माता होते हैं।

आज पुरस्कृत सभी शिक्षकों ने समान रूप से प्रभावशाली और अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। लेकिन समय की सीमा के कारण मैं केवल एक उदाहरण का उल्लेख करूँगी। हम सबने देखा कि राजस्थान के झालावाड़ जिले के एक गाँव के स्कूल में, अपने शिक्षक के मार्गदर्शन में बच्चे, अत्यंत आधुनिक माध्यमों की सहायता से जीव-विज्ञान का अध्ययन करते हैं। इससे, यह स्पष्ट होता है कि बड़ी सोच के बल पर, छोटे से छोटे स्थान पर, प्रबुद्ध शिक्षक और जिज्ञासु विद्यार्थी, उच्च-स्तरीय पठन-पाठन के आधुनिक उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं। मुझे यह जानकर प्रसन्नता होती है कि इस सभागार में उपस्थित शिक्षकों ने, ऐसे प्रेरक प्रयासों से, शिक्षण कार्य को नए आयाम दिए हैं।





‘शिक्षा मंत्रालय’ द्वारा स्कूलों, उच्च शिक्षण संस्थानों एवं पॉलीटेक्निक्स में अध्यापन करने वाले श्रेष्ठ शिक्षकों, तथा ‘कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय’ द्वारा चुने गए सुयोग्य प्रशिक्षकों के योगदान को, राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दी गई है। देश के विकास में, एकेडेमिक एक्सीलेंस, रिस्कल डेवलपमेंट और एन्ट्रेप्रेन्योरशिप का बहुत अधिक महत्व है। भारत को नॉलेज सुपर-पावर बनाने के साथ-साथ, रिस्कल कैपिटल ऑफ द वर्ल्ड के रूप में स्थापित करना, हमारी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं में शामिल है।

यहाँ उच्च-शिक्षा के क्षेत्र में पुरस्कृत आचार्यगण उपस्थित हैं। उनके लिए तथा पूरे देश के आचार्यों के लिए उच्च-शिक्षा में भारत का गौरवशाली इतिहास लक्ष्य भी प्रस्तुत करता है और कसौटी भी। ह्वेन सांग ने लिखा है कि नालंदा-विक्रमशिला में पढ़ाने वाले आचार्यों का यश दूर-दूर के देशों तक फैल चुका था। उनका चरित्र पूर्णतः निर्मल और अनिन्दनीय था। आचार्यगण जानते थे कि समुद्रों और पर्वतों को पार करके, अनेक कष्ट सहन करके, विदेशों के छात्र उनके पास अपनी ज्ञान-पिपासा लेकर आते थे।

भारत के विश्व-विख्यात आचार्यों की परंपरा को नोबेल पुरस्कार विजेता आचार्य सीवी रामन जैसे शिक्षकों ने आधुनिक युग में आगे बढ़ाया। वे अपने विद्यार्थियों के साथ खूब घुल-मिलकर मॉडर्न फिजिक्स के विभिन्न विषयों पर चर्चा करते थे। जब विद्यार्थी उनसे कोई अच्छा प्रश्न करते थे तो वे पुस्तकों से हटकर, अपने विलक्षण

अध्यापन से ऐसी जिज्ञासा जागृत करते थे कि उनके विद्यार्थी उन प्रश्नों के समाधान से जुड़े, विश्व के महान वैज्ञानिकों के मूल ग्रन्थों में अवगाहन करने लगते थे।

देवियों और सज्जनों!

भारत के प्रथम राष्ट्रपति, डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने कहा था कि बच्चों की देखभाल करना, पौधों को जड़ से सींचने के बराबर है। स्कूल एजुकेशन शिक्षा व्यवस्था का आधार है। ज्ञान और कौशल तो कभी भी प्राप्त किए जा सकते हैं, परंतु बचपन में ही सदाचार की शिक्षा देना अधिक प्रभावी सिद्ध होता है। आरंभिक कक्षाओं में बच्चों के बौद्धिक, शारीरिक और नैतिक विकास पर निष्ठापूर्वक ध्यान देकर हमारे शिक्षक अच्छे विद्यार्थियों और कर्तव्य-निष्ठ नागरिकों की भावी पीढ़ियों तैयार करते हैं।

विद्यार्थी ही शिक्षकों की पहचान होते हैं। विद्यार्थी अपने शिक्षकों द्वारा पढ़ाया गया पाठ्यक्रम भले ही भूल जाएँ, उनके व्यवहार को वे सदैव याद रखते हैं। अनेक विद्यार्थी आर्थिक दृष्टि से कमज़ोर परिवारों से आते हैं, कुछ अपने परिवार में पहली पीढ़ी के विद्यार्थी होते हैं, कुछ विद्यार्थी गाँव के किसी सामान्य स्कूल से शहर के बड़े स्कूल में आते हैं और थोड़ा असहज हो जाते हैं, कुछ विद्यार्थी स्वभाव से ही संकोची होते हैं, कुछ विद्यार्थियों में बहुत प्रतिभा होती है, लेकिन उनमें आत्मविश्वास की कमी होती है तथा कुछ विद्यार्थियों को चिट्ड़न विद स्पेशल नीड्स की श्रेणी में रखा जाता है।

ऐसे सभी विद्यार्थी, जो किसी कारण से कोई कमी

महसूस करते हैं, उनमें आत्मविश्वास जगाना और उन्हें आगे बढ़ाना शिक्षकों का विशेष दायित्व है। संस्कृत भाषा के शब्द ‘उद्धार’ का अर्थ होता है - खड़ीचकर बाहर निकालना या नीचे से ऊपर ले आना। विद्यार्थियों का उद्धार करने का पुनीत अवसर केवल शिक्षकों को ही उपलब्ध होता है।

हमारे संविधान में निहित ‘अवसर की समानता’ के आदर्श को कार्यरूप देने का सबसे प्रभावी माध्यम शिक्षा है। हमारे देश में प्राइमरी स्कूल डॉपआउट रेट 12 वर्ष पहले लगभग साढ़े चार प्रतिशत था। अब यह डॉपआउट रेट नहीं के बराबर है। यह उपलब्धि शिक्षकों के प्रयासों से संभव हो सकी है। इस राष्ट्रीय सफलता के लिए मैं सभी शिक्षकों की सराहना करती हूँ।

हम सभी देशवासी विकसित भारत के निर्माण के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रहे हैं। विश्वस्तरीय शिक्षा व्यवस्था के बल पर ही विकसित राष्ट्र का निर्माण संभव है। हमारे शिक्षक शिक्षा व्यवस्था में प्राण-वायु का संचार करते हैं। हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि हमारे देश में एक भी विद्यार्थी, अच्छी शिक्षा के अवसरों से वंचित न रहे। मैं चाहूँगी कि हमारे शिक्षक अपने स्नेह और समर्पण से सभी विद्यार्थियों में ज्ञान, परेणा, नैतिकता और संवेदनशीलता का संचार करें। इन्हीं कामनाओं के साथ मैं अपनी वाणी को विराम देती हूँ।

धन्यवाद! जय हिन्द! जय भारत!

साभार : भारत के राष्ट्रपति की आधिकारिक वेबसाइट





प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शिक्षक दिवस के अवसर पर कहा कि शिक्षक दिवस समाज में शिक्षकों के अहम योगदान की सराहना करने का दिन है। उन्होंने यह भी कहा कि यह डॉ. एस. राधाकृष्णन को श्रद्धांजलि देने का भी दिन है। इसके अलावा प्रधानमंत्री ने नेशनल टीचर्स अवॉर्ड (राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार) विजेताओं के साथ मुलाकात की झलकियाँ भी साझा कीं।

प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा- 'शिक्षक दिवस हमारे समाज में शिक्षकों के अहम योगदान की सराहना करने का दिन है। यह डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को श्रद्धांजलि देने का दिन भी है।'

पीएम मोदी से संवाद करते समय एक महिला अध्यापिका ने बताया कि वह बच्चों को नवाचारी तरीके से साक्षात्कार लेना सिखा रही हैं। इस पर प्रधानमंत्री ने पूछा कि बच्चे घर जाकर मम्मी-पापा का भी इंटरव्यू करते होंगे? पीएम मोदी की इस बात पर महिला टीचर ने 'हाँ' में जवाब दिया। फिर पीएम मोदी ने कहा कि बच्चे अपने माता-पिता से पूछते होंगे कि खाना क्यों पकाया? ऐसा क्यों पकाया? यह निर्णय किसने किया था? बजट कितना खर्च किया था? इस पर महिला अध्यापिका ने कहा कि मेरे स्कूल के सारे बच्चे रिपोर्टर ही बनना चाहते हैं।

एक अन्य शिक्षिका ने पीएम मोदी को बताया कि वह बच्चों को केमिस्ट्री पढ़ाने के साथ एनवायरमेंट एजुकेशन भी पढ़ाती हैं। वह बच्चों को कॉन्फिडेंस के साथ पब्लिक स्पीकिंग के लिए भी मेंटर करती हैं और उन्हें राज्य, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों तक पहुँचाया है। इस पर प्रधानमंत्री ने पूछा, 'आप बच्चों को पब्लिक स्पीकिंग सिखाती हैं। अगर मैं आपका विद्यार्थी हूँ और एक अच्छा वक्ता बनना चाहता हूँ, तो मुझे क्या करना चाहिए? कोई टिप्स दीजिए।' जवाब में शिक्षिका ने कहा, 'आपको कॉन्फिडेंस में रहना चाहिए।' इस पर प्रधानमंत्री

सिलेबस से बाहर निकलकर बच्चों की जिंदगी में झाँकना होगा- प्रधानमंत्री मोदी

और शिक्षिका दोनों हैंस पड़े। शिक्षिका ने कहा, 'सर, आपका ऑरा देखकर मुझे थोड़ा डाउट हो गया।'

प्रधानमंत्री मोदी ने संवाद को आगे बढ़ाते हुए कहा कि हो सकता है कि कोई बच्चा शिक्षा में ठीक नहीं होगा। लेकिन परमात्मा ने हर एक को कोई न कोई ताकत दी है। उसके टैलेंट पहचानने के लिए कोई कोशिश करते हैं आप टीचर लोग?

इस पर एक महिला टीचर ने कहा, 'बहुत सारी कोशिश करते हैं। असल में वही हमारी कोशिश होती है, क्योंकि मेरा मानना है कि हमारे विद्यालय या हमारी कक्षा में जितने बच्चे हैं, उन सभी में अलग-अलग खूबी है। अलग-अलग टैलेंट है, अलग-अलग चैलेंज है और एक शिक्षक के नाते मैं उन सारे टैलेंट्स की पहचान करती हूँ।'

एक अध्यापक ने कहा, 'आपने (पीएम मोदी) एकलव्य खेल कर एक स्कूल नहीं बनाया, बल्कि लगभग मेरे हिसाब से कई परिवारों को जोड़ा है। ऐसे लोगों को जोड़ा जो फर्स्ट जनरेशन लर्नर हैं, जिन्होंने कभी स्कूल नहीं देखे। उनके बच्चे आज हमारे यहाँ से एनआईटी, आईआईटी का सपना देख रहे हैं। मेडिकल क्वालीफाई कर रहे हैं।'

एक शिक्षिका ने कहा कि उसके शोध का विषय ब्रेस्ट कैंसर रहा है। ब्रेस्ट कैंसर आज भी एक ऐसा विषय है जिसमें महिलाएँ बात करने से बहुत हिचकती हैं। इस पर पीएम मोदी ने कहा, 'आप इसी विषय में काम कर रही हैं

तो मैं काशी का सांसद हूँ। मैंने वहाँ ब्रेस्ट कैंसर अवेयरनेस अभियान शुरू किया है। मुझे खुशी है कि महिलाएँ सामने से आकर अपना चेकअप कराती हैं। पहले ऐसी स्थिति नहीं थी। दूसरे, एक अच्छा अनुभव आया। अभी तो एक दिन में अधिकतम लोगों की जाँच करने का गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड उन्होंने रजिस्टर किया।'

प्रधानमंत्री ने आगे कहा, 'एक विषय है स्क्रीन टाइम, जो अब एक तरह का एडिक्शन बन गया है। मेरे मन में एक विचार आता है, अगर बच्चा खेलकूद में ज्यादा रुचि लेने लगे, मैदान में खेलने लगे तो वह धीरे-धीरे इस एडिक्शन से बाहर आ सकता है। हमें बच्चों को ज्यादा से ज्यादा क्रिएटिविटी से जोड़ना चाहिए और ऐसे कार्यक्रमों को आदत बनाना चाहिए।'

प्रधानमंत्री ने कहा, 'अब जैसे इंग्स का मामला है। कई बार पता ही नहीं चलता कि क्या हो रहा है, कोई आकर कुछ दे जाता है। क्या इस बारे में शिक्षकों में लगातार जागरूकता है? क्या कोई बारीकी से यह ऑब्जर्व कर रहा है कि किसी बच्चे के व्यवहार में बदलाव तो नहीं आ रहा? मैं पूरे शिक्षा जगत से कहना चाहता हूँ कि हमें किताबों और सिलेबस से बाहर निकलकर बच्चों की जिंदगी में झाँकना होगा। बचपन को मरने नहीं देना है और बचपन को बनाए रखने का सबसे बड़ा काम शिक्षक ही कर सकता है।'

साभार : प्रेस सूचना ब्यूरो (पीआईबी)
भारत सरकार





शिक्षक केवल ज्ञान नहीं, विवेक और संस्कार भी प्रदान करता है : राज्यपाल



डॉ. प्रदीप राठौर



हरियाणा में शिक्षक दिवस के अवसर पर राज्यपाल प्रो. असीम कुमार घोष और मुख्यमंत्री श्री नारायण सिंह सैनी ने स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा पंचकूला

में आयोजित राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट एवं असाधारण योगदान देने वाले 79 शिक्षकों को सम्मानित किया।

मुख्यमंत्री श्री नारायण सिंह सैनी ने शिक्षक दिवस के अवसर पर महत्वपूर्ण घोषणा करते हुए कहा कि आगामी शैक्षणिक सत्र से उच्चतर शिक्षा, तकनीकी शिक्षा और प्रौद्योगिकी शिक्षा से जुड़े शिक्षकों को भी राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। वर्तमान में यह पुरस्कार केवल विद्यालय शिक्षा से जुड़े शिक्षकों को दिया जाता है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले सभी शिक्षकों को प्रोत्साहित करना सरकार की प्राथमिकता है।

शिक्षक केवल ज्ञान नहीं, विवेक और संस्कार भी प्रदान करता है - राज्यपाल

समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते



हुए राज्यपाल प्रो. असीम कुमार घोष ने सभी सम्मानित शिक्षकों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह सम्मान केवल व्यक्तिगत उपलब्धि का सम्मान नहीं है, बल्कि पूरे शिक्षक समुदाय, शिक्षा व्यवस्था और हरियाणा के उज्ज्वल भविष्य का सम्मान है।

राज्यपाल ने कहा कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जीवन इस बात का प्रेरक उदाहरण है कि शिक्षण केवल एक पेशा नहीं, बल्कि समाज-निर्माण का सशक्त

माध्यम है। शिक्षक दिवस केवल शिक्षकों को बधाई देने का अवसर नहीं, बल्कि शिक्षा के महत्व को स्वीकार करने और शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन भी है।

उन्होंने कहा कि आज शिक्षा की दुनिया तेजी से बदल रही है। इंटरनेट और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी आधुनिक तकनीकों के माध्यम से विद्यार्थी कुछ ही क्षणों में दुनिया भर की जानकारी प्राप्त कर सकता है, लेकिन जानकारी और ज्ञान में अंतर है तथा ज्ञान और विवेक में भी अंतर है। तकनीक सूचना दे सकती है, लेकिन शिक्षक विवेक प्रदान करता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस उत्तर दे सकती है, लेकिन शिक्षक सही प्रश्न पूछना सिखाता है। राज्यपाल ने कहा कि तकनीक के इस युग में शिक्षक की भूमिका कम नहीं हुई है, बल्कि और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

शिक्षा का उद्देश्य केवल सफल व्यक्ति नहीं, अच्छा इंसान बनाना भी है-

राज्यपाल ने कहा कि आज के शिक्षक का दायित्व केवल पाठ्यक्रम पूरा करना और परीक्षा परिणाम देना नहीं है। शिक्षक को ज्ञान के साथ-साथ विद्यार्थियों के चरित्र का भी निर्माण करना है। उसे विद्यार्थियों में अनुशासन, ईमानदारी, परिश्रम, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करनी है।



क्या दिया जाता है सम्मान में?

- » शॉल,
- » मेडल,
- » प्रमाण पत्र,
- » एक लाख रुपये की सम्मान रशि
- » और दो अग्रिम वेतन वृद्धियाँ।

उन्होंने कहा कि यह भी सुनिश्चित करना आवश्यक है कि कोई बच्चा आर्थिक अथवा सामाजिक परिस्थितियों के कारण शिक्षा की दौड़ में पीछे न रह जाए। विशेष रूप से बेटियों को समान अवसर प्रदान करना और उनकी शिक्षा को प्रोत्साहित करना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है।

राज्यपाल ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल यह तय करना नहीं होना चाहिए कि बच्चा भविष्य में क्या बनेगा, बल्कि इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि वह कैसा मनुष्य बनेगा। हमें ऐसे डॉक्टर चाहिए, जिनमें सेवा की भावना हो; ऐसे वैज्ञानिक चाहिए, जो मानवता के हित में कार्य करें; ऐसे अधिकारी चाहिए, जो न्याय और संवेदनशीलता के साथ निर्णय लें; ऐसे उद्यमी चाहिए, जो रोजगार के अवसर पैदा करें और ऐसे नागरिक चाहिए, जो देश एवं समाज के प्रति जिम्मेदार हों।

विद्यार्थियों को केवल परीक्षाओं के लिए नहीं, जीवन के लिए तैयार करें -

राज्यपाल ने शिक्षकों का आह्वान करते हुए कहा कि विद्यार्थियों को केवल परीक्षाओं के लिए तैयार न करें, बल्कि उन्हें जीवन के लिए तैयार करें। उन्हें केवल नौकरी प्राप्त करने के लिए नहीं, बल्कि समाज के लिए उपयोगी बनने के लिए तैयार करें। उन्हें केवल उत्तर न दें, बल्कि प्रश्न पूछना भी सिखाएँ, क्योंकि प्रश्न करने वाला विद्यार्थी ही भविष्य का शोधकर्ता और नवप्रवर्तक बनता है।

2047 के विकसित भारत की नींव आज की कक्षाओं में रखी जा रही है-

राज्यपाल ने वर्ष 2047 के विकसित भारत का उल्लेख करते हुए कहा कि विकसित भारत की मज़बूत नींव आज की कक्षाओं में रखी जा रही है। उन्होंने कहा कि आज किसी विद्यालय में पढ़ रहा बच्चा कल वैज्ञानिक बन सकता है। कोई बेटा देश की महान प्रशासक बन सकती है और कोई विद्यार्थी सिखलाई, चिकित्सक अथवा शिक्षक के रूप में देश की सेवा कर सकता है। उस भविष्य की मज़बूत नींव आज शिक्षक रख रहा है। उन्होंने कहा कि भारत का भविष्य संसद में जितना आकार लेता है, उतना ही विद्यालय की कक्षाओं में भी आकार लेता है और उस भविष्य का सबसे महत्वपूर्ण वास्तुकार शिक्षक है।

सम्मान नई जिम्मेदारी की शुरुआत-

राज्यपाल ने शिक्षकों को संबोधित करते हुए कहा कि यह पुरस्कार उनकी यात्रा का अंत नहीं, बल्कि एक नई जिम्मेदारी की शुरुआत है। राज्य ने उनके उत्कृष्ट



कार्यों को पहचान दी है। अब उनकी जिम्मेदारी है कि वे अपने अनुभव अन्य शिक्षकों के साथ साझा करें, नई पीढ़ी के शिक्षकों का मार्गदर्शन करें, अपने विद्यालयों को और बेहतर बनाने में योगदान दें तथा विद्यार्थियों में उत्कृष्टता के साथ-साथ मानवीय मूल्यों का भी विकास करें।

मुख्यमंत्री ने दी बधाई-

मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने शिक्षक दिवस पर प्रदेश के सभी शिक्षकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि यह दिवस शिक्षकों के प्रति सम्मान, कृतज्ञता और उनके योगदान को स्मरण करने का अवसर है। उन्होंने कहा कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जीवन आदर्श शिक्षक के रूप में सदैव प्रेरणा देता है। भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वोच्च रहा है। शिक्षक केवल बच्चों को परीक्षा में सफल नहीं बनाता, बल्कि उनके व्यक्तित्व को आकार देकर उन्हें जीवन की चुनौतियों का सामना करने योग्य बनाता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस,

रोबोटिक्स और डिजिटल तकनीक के दौर में जानकारी सहज उपलब्ध है, लेकिन संस्कार, विवेक और मानवीय संवेदनाएँ केवल शिक्षक ही विकसित कर सकता है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से शिक्षा को समझ, कौशल, नवाचार और भारतीय मूल्यों से जोड़ा गया है। उन्होंने बताया कि हरियाणा में स्कूल शिक्षा का बजट बढ़ाकर 18,538 करोड़ रुपये किया गया है। मॉडल संस्कृति विद्यालय, पीएम श्री विद्यालय और सीएम-ईईई स्कूल विकसित किए जा रहे हैं। अटल टिकरिंग लैब, विज्ञान प्रयोगशालाओं, कौशल बिजनेस चैलेंज, सुपर-100 और बुनियाद जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को आधुनिक शिक्षा और बेहतर अवसर दिए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि शिक्षकों के निरंतर व्यावसायिक विकास के लिए सीपीडी फ्रेमवर्क तैयार किया गया है। निपुण हरियाणा के तहत प्रशिक्षण के अगले चरण में लगभग 32 हजार पीआरटी शिक्षकों को प्रशिक्षण देने की योजना है।





शिक्षक- ज्ञान, संस्कार और भविष्य के मार्गदर्शक



शिक्षक केवल पाठ्यक्रम पूरा करने और विषय का ज्ञान देने तक सीमित नहीं होते, बल्कि वे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, संस्कारों के विकास और उनमें आत्मविश्वास जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रत्येक विद्यार्थी की अपनी प्रतिभा, रुचि और सीखने की क्षमता होती है। एक शिक्षक का दायित्व है कि वह इन विशिष्टताओं को पहचानकर प्रत्येक विद्यार्थी को आगे बढ़ने के लिए उचित अवसर और प्रोत्साहन प्रदान करे। शिक्षक का विश्वास और सकारात्मक मार्गदर्शन विद्यार्थी के भीतर छिपी संभावनाओं को नई उड़ान दे सकता है।

आज शिक्षा का स्वरूप निरंतर बदल रहा है। तकनीकी प्रगति, नवाचार और नई शिक्षण पद्धतियों के साथ कदम मिलाते हुए विद्यार्थियों को ज्ञान के साथ-साथ रचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान, सहयोग और जिम्मेदारी जैसे जीवन-कौशल से समृद्ध करना भी आवश्यक है। इस परिवर्तन में शिक्षकों की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

राज्य स्तरीय शिक्षक दिवस समारोह के अवसर पर राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षकों को मैं हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ। उनकी निष्ठा, समर्पण और शिक्षा के क्षेत्र में दिए गए अमूल्य योगदान को मैं नमन करती हूँ। मुझे विश्वास है कि हमारे शिक्षक अपनी कर्मठता, संवेदनशीलता और नवाचारपूर्ण दृष्टिकोण से हरियाणा की शिक्षा व्यवस्था को निरंतर सुदृढ़ करते रहेंगे तथा विद्यार्थियों को अपने सपनों को साकार करने के लिए प्रेरित करते रहेंगे।

- डॉ. ऋचा राठी

अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन), माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

सुभाष शर्मा, सम्प्रति प्रधानाचार्य, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, खुड्डा कलौं, अंबाला

सुभाष शर्मा ने 5 मई 1998 को पंचकूला के राजकीय उच्च विद्यालय खेतपुराली में टीजीटी हिंदी शिक्षक के रूप में अपनी शिक्षक सेवा शुरू की। गाँव से शुरू हुआ उनका शिक्षक जीवन शीघ्र ही विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के मिशन में बदल गया। उन्होंने शिक्षा को केवल कक्षा तक सीमित नहीं रखा, बल्कि ग्रामीण विद्यार्थियों, विशेषकर बेटियों की शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए व्यक्तिगत स्तर पर भी प्रयास किए। वर्ष 2007 में पदोन्नति के बाद वे अंग्रेजी प्रवक्ता बने। शिक्षा के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण भी उनके कार्यों का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा।

5 दिसंबर 2025 को प्रधानाचार्य के पद पर पदोन्नत होकर उन्होंने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खुड्डा कलौं, अंबाला में कार्यभार संभाला। विद्यालय पहुँचते ही उन्होंने छात्रों के जर्जर शौचालयों, मध्याह्न भोजन कक्ष और अन्य सुविधाओं में सुधार को प्राथमिकता दी। गैर-सरकारी संगठनों के सहयोग से छात्रों के शौचालयों का सुधार करवाया, मध्याह्न भोजन कक्ष को नया स्वरूप दिया तथा एनएसईएस प्रयोगशाला का नवीनीकरण करवाया। शिक्षा के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें **राज्य शिक्षक पुरस्कार-2024** से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर शिक्षा मंत्री श्री महीपाल दांडा ने कहा कि शिक्षक दिवस केवल पुरस्कार वितरण का समारोह नहीं, बल्कि भारतीय गुरु-परंपरा और शिक्षकों के योगदान को स्मरण करने का अवसर है। गुरु केवल ज्ञान नहीं देता, बल्कि विद्यार्थियों के चरित्र का निर्माण करते हुए उन्हें जीवन की सही दिशा दिखाता है। उन्होंने कहा कि एक दशक पहले हरियाणा में बोर्ड परीक्षा परिणाम लगभग 40 प्रतिशत था, जो आज बढ़कर 90 प्रतिशत के ऐतिहासिक स्तर तक पहुँच गया है। इसके पीछे शिक्षकों की अतिरिक्त कक्षाओं, व्यक्तिगत सहयोग और अथक प्रयासों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

शिक्षा मंत्री ने बताया कि 'निपुण हरियाणा' के तहत डिजिटल मूल्यांकन, विद्यार्थियों को निःशुल्क स्टेनरी, ईस और बैग तथा विद्यालयों में इयूल डेस्क और आधुनिक कक्षाओं की व्यवस्था की जा रही है। 26 स्कूलों में फ्रेंच और जर्मन भाषाएँ शुरू की गई हैं। 'सुपर-100' की सीटें 400 से बढ़ाकर 500 की गई हैं। मिशन बुनियाद, 2,238 स्किल लैब्स, इंटरनेट और स्मार्ट बोर्ड के माध्यम से विद्यार्थियों को आधुनिक शिक्षा एवं वैश्विक अवसरों से जोड़ा जा रहा है। मेवात कैंडर में 1,200 नए पीआरटी शिक्षकों की नियुक्ति से शिक्षा व्यवस्था को और मजबूती मिली है।

प्रधान सचिव ने बताई चयन की पारदर्शी प्रक्रिया-

इससे पूर्व, स्कूल शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव श्री विजय सिंह दहिया ने राज्यपाल महोदय व अन्य सभी गणमान्य अतिथियों का अभिनन्दन करते हुए कहा कि प्रदेश में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, विद्यालयों की मूलभूत सुविधाओं के विस्तार, भवनों के आधुनिकीकरण तथा शिक्षकों के सम्मान और कल्याण की दिशा में अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं।

उन्होंने शिक्षक दिवस के अवसर पर प्रदेश के सभी अध्यापक-अध्यापिकाओं को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि यह दिन शिक्षकों के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से उन सभी शिक्षकों को बधाई दी गई, जिन्हें उत्कृष्ट कार्य के लिए राज्यस्तरीय अध्यापक सम्मान प्रदान किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि समारोह में पिछले दो वर्षों के 79 उत्कृष्ट अध्यापकों को राज्यस्तरीय अध्यापक सम्मान प्रदान किए जा रहे हैं। इनमें 59 पुरुष और 20 महिला अध्यापक शामिल हैं। इन शिक्षकों का चयन केवल उनके नियमित कार्य के आधार पर नहीं, बल्कि उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन, नवाचार, विद्यार्थियों को सीखने में योगदान, विद्यालय सुधार, सामाजिक सहभागिता तथा शिक्षा के प्रति उनके समर्पण को ध्यान में रखते हुए किया गया है।

उन्होंने अध्यापक सम्मान की प्रक्रिया के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि विभाग का प्रयास रहा है कि यह प्रक्रिया अधिक से अधिक पारदर्शी, निष्पक्ष और व्यापक प्रतिनिधित्व वाली हो। इच्छुक शिक्षक निर्धारित प्रक्रिया के अनुरूप ऑनलाइन आवेदन करते हैं। इसके





बाद जिला स्तर पर निर्धारित मानदंडों के आधार पर योग्य शिक्षकों की पहचान और अनुशंसा की जाती है। प्रत्येक शिक्षक के कार्यों और उपलब्धियों का मूल्यांकन एक निश्चित अंक प्रणाली और निर्धारित भारों के आधार पर किया जाता है। जिला स्तरीय समितियाँ प्रत्येक श्रेणी में अपने जिले के श्रेष्ठ अध्यापकों के नामों की अनुशंसा कर निदेशालय को भेजती हैं। इसके बाद निदेशालय स्तर पर गठित राज्यस्तरीय समिति इन अनुशंसाओं का पुनर्मूल्यांकन करती है और इसके पश्चात् अंतिम सूची तैयार की जाती है। अंतिम सूची को सरकार की विधिवत् स्वीकृति प्रदान की जाती है।

उन्होंने बताया कि इस पूरी प्रक्रिया का उद्देश्य यही है कि जो शिक्षक वास्तव में उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं, उन्हें उनकी योग्यता, उपलब्धियों और योगदान के आधार पर सम्मान मिले। विभाग ने यह भी सुनिश्चित करने का प्रयास किया है कि अध्यापक सम्मान में केवल किसी एक विशेष श्रेणी के शिक्षक ही शामिल न हों, बल्कि विभिन्न श्रेणियों के शिक्षकों को उचित प्रतिनिधित्व दिया जाए।

इसका संदेश स्पष्ट है कि हर स्तर पर कार्य करने वाले शिक्षक के लिए सम्मान का अवसर सरकार प्रदान करती है और उनके योगदान को पहचान देती है। जिन 79 शिक्षकों को सम्मानित किया जा रहा है, वे केवल पुरस्कार प्राप्त करने वाले शिक्षक नहीं हैं, बल्कि पूरे शिक्षक समुदाय के लिए प्रेरणा और उदाहरण हैं। उन्होंने सम्मानित शिक्षकों से अनुरोध किया कि वे अपने अनुभव, नवाचार और अपनी अच्छी कार्य-प्रणालियों को अपने विद्यालयों तथा अपने साथी शिक्षकों तक अवश्य पहुँचाएँ, ताकि उनके उत्कृष्ट कार्यों का लाभ अधिक से अधिक विद्यार्थियों और विद्यालयों को मिल सके। उन्होंने प्रदेश के सभी शिक्षकों को विश्वास दिलाया कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में और शिक्षा मंत्री के मार्गदर्शन में हरियाणा सरकार शिक्षकों के सम्मान, उनके कल्याण और उनके व्यावसायिक विकास के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

उन्होंने शिक्षक दिवस के पावन अवसर पर सभी से यह संकल्प लेने का आह्वान किया कि हर बच्चा सीखे, हर शिक्षक सम्मान के साथ आगे बढ़े और हर विद्यालय सीखने एवं उत्कृष्टता का केंद्र बने। उन्होंने प्रदेश के सभी शिक्षकों को शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित कीं।

इस अवसर पर राज्यपाल के सचिव श्री विजय कुमार भाविकही, माध्यमिक शिक्षा विभाग के महानिदेशक श्री जितेंद्र कुमार, मौलिक शिक्षा निदेशक श्रीमती मनिता मलिक, उपायुक्त श्री सतपाल शर्मा, पंचकूला के महापौर श्री श्याम लाल बंसल, जिला भाजपा अध्यक्ष श्री अजय मित्तल, मुख्यमंत्री के मीडिया सचिव श्री प्रवीण आत्रेय, शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, शिक्षक और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

drpradeepprathore@gmail.com



बदलते शैक्षिक परिवेश में शिक्षक की नई भूमिका

आज शिक्षा का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। तकनीकी विकास ने शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को नए आयाम दिए हैं। ऐसे समय में शिक्षक के लिए आवश्यक है कि वह स्वयं भी निरंतर सीखता रहे और नई तकनीकों, डिजिटल संसाधनों तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों से परिचित हो। इन तकनीकों को अपनाने का उद्देश्य शिक्षक की भूमिका को कम करना नहीं, बल्कि शिक्षण को अधिक प्रभावी, रुचिकर और विद्यार्थी-केंद्रित बनाना है।

एक शिक्षक तभी भविष्य की पीढ़ी को भविष्य के लिए तैयार कर सकता है, जब वह स्वयं बदलते समय के साथ सीखने और आगे बढ़ने के लिए तत्पर रहे। तकनीक के साथ-साथ मानवीय संवेदनाएँ, नैतिक मूल्य, रचनात्मक चिंतन और विद्यार्थियों के प्रति संवेदनशीलता शिक्षक की भूमिका के मूल आधार बने रहें—यह भी उतना ही आवश्यक है।

मुझे विश्वास है कि हरियाणा के शिक्षक नवाचार, तकनीकी दक्षता और अपने अनुभव का समन्वय करते हुए विद्यार्थियों के लिए सीखने के नए अवसर सृजित करेंगे और प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था को नई ऊँचाइयों तक ले जाने में अपना योगदान देते रहेंगे।

— प्रवीण सांगवान

संयुक्त निदेशक, आईईटी, ईडीयू
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा, पंचकूला

मदन लाल 'मधु', मौलिक स्कूल मुख्याध्यापक, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, मूसेपुर (करनाल)

मदन लाल 'मधु' को 26 वर्षों का शिक्षण अनुभव है। वे शिक्षण कार्य के साथ-साथ निरंतर लेखन करते रहे हैं और हरियाणवी बोली में उनकी तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास के साथ उनकी रुचि साहित्यिक एवं रचनात्मक गतिविधियों में भी रही है।

उनके मार्गदर्शन में विद्यालय के 4 से 5 विद्यार्थी प्रतिवर्ष मिशन बुनियाद तथा एनएमएमएस की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर रहे हैं। सड़क सुरक्षा एवं प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित गतिविधियों में भी विद्यालय ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है और सड़क सुरक्षा संबंधी प्रतियोगिता में विद्यालय जिले में प्रथम रहा। मुख्यमंत्री स्कूल सौंदर्यकरण योजना के अंतर्गत विद्यालय खंड स्तर पर प्रथम स्थान पर रहा। इन उपलब्धियों के पीछे विद्यार्थियों को निरंतर प्रेरित करने, उनकी क्षमताओं को पहचानने और उन्हें उचित मार्गदर्शन देने का विशेष योगदान रहा है। शिक्षण और लेखन के माध्यम से वे विद्यार्थियों में ज्ञान के साथ-साथ रचनात्मकता और आत्मविश्वास विकसित करने का प्रयास करते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें राज्य शिक्षक पुरस्कार-2024 से सम्मानित किया गया।





एआई और रोबोटिक्स के दौर में शिक्षक की भूमिका और भी महत्वपूर्ण: मुख्यमंत्री



डॉ. सुदेश रानी



मुख्यमंत्री ने शिक्षक दिवस पर सभी शिक्षकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि यह समारोह शिक्षा के प्रति उनके समर्पण और

कृतज्ञता प्रकट करने का अवसर है। उन्होंने कहा कि आज महान शिक्षक, भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी का जन्मदिन भी है, जिन्होंने अपना जन्मदिन शिक्षकों को समर्पित कर दिया। इसीलिए उनके जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। वे महान दार्शनिक, आदर्श शिक्षक और कुशल राजनीतिज्ञ थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान हमेशा ऊपर रहा है। गुरु वह है, जो बच्चों के भीतर छिपी संभावनाओं को पहचानता है। माता-पिता बच्चे को जन्म देते हैं, लेकिन शिक्षक उसके व्यक्तित्व को आकार देता है। वह बच्चे को केवल परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं कराता, बल्कि जीवन की चुनौतियों का सामना करने योग्य बनाता है।

शिक्षकों का वास्तविक पुरस्कार विद्यार्थियों के जीवन में बदलाव-

मुख्यमंत्री ने सम्मानित शिक्षकों से संवाद करते हुए कहा कि आप शिक्षकों की भी ऐसी ही कोई कहानी होगी। किसी ने स्कूल छोड़ चुके बच्चे को वापस कक्षा

तक पहुँचाया होगा। किसी ने अपनी जेब से विद्यार्थी के लिए किताब खरीदी होगी। किसी ने छुट्टी के बाद पढ़ाई में कमजोर बच्चे को अतिरिक्त समय दिया होगा। किसी ने बेटी के माता-पिता को समझाकर उसकी पढ़ाई जारी रखवाई होगी। किसी ने विज्ञान प्रयोगशाला न होने पर स्थानीय वस्तुओं से मॉडल बनाया होगा; और किसी ने विद्यार्थी की आँखों की उदारी पढ़कर उसे गलत रास्ते पर जाने से बचाया होगा। उन्होंने कहा कि पुरस्कार पाने के लिए मंच पर आप भले ही आज आए हैं, लेकिन आपका पुरस्कार उसी दिन तय हो गया था, जिस दिन किसी बच्चे ने आपसे कहा होगा, 'गुरुजी, आपने मेरा जीवन बदल दिया।'

तकनीक के युग में शिक्षक की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण-

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज समय तेजी से बदल रहा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स, डिजिटल टेक्नोलॉजी और इंटरनेट ने ज्ञान के अनगिनत द्वार खोल दिए हैं। बच्चे एक क्लिक पर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन जानकारी और ज्ञान में अंतर होता है। मशीन सूचना दे सकती है, पर संस्कार नहीं। एआई पाठ तैयार कर सकती है, लेकिन किसी निराश बच्चे के कंधे पर हाथ रखकर उसमें विश्वास नहीं जगा सकती। यह कार्य केवल शिक्षक कर सकता है। इसलिए तकनीक के युग में शिक्षक की भूमिका कम नहीं हुई है, बल्कि और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। इसी बात को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भी समझा। उन्होंने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति



बनाकर शिक्षा को रटने की प्रवृत्ति से निकालकर समझ, कौशल, नवाचार और भारतीय मूल्यों से जोड़ने का मार्ग प्रशस्त किया। अब शिक्षा का लक्ष्य डिग्री के साथ योग्य, आत्मनिर्भर, संवेदनशील और राष्ट्रनिष्ठ नागरिक तैयार करना हो गया है।

शिक्षा में निवेश से मजबूत हो रहा हरियाणा का भविष्य-

उन्होंने कहा कि हम हरियाणा में भी इसी दृष्टिकोण के साथ शिक्षा व्यवस्था में निरंतर सुधार कर रहे हैं। हम मानते हैं कि शिक्षा पर खर्च होने वाला प्रत्येक रुपया हमारे बच्चों और प्रदेश के भविष्य में किया गया निवेश है। इसीलिए, चालू वित्त वर्ष के लिए स्कूल शिक्षा का बजट बढ़ाकर 18,538 करोड़ रुपये किया है। यह वर्ष 2014-15 में मात्र 8,400 करोड़ रुपये था।

प्रदेश में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दायरा बढ़ाने के लिए मॉडल संस्कृति विद्यालयों की संख्या 218 की गई है। इसके साथ ही, 251 पीएम श्री विद्यालय विकसित किए गए हैं और इस वर्ष 250 विद्यालयों को सीएम-ईईई स्कूलों के रूप में विकसित किया जा रहा है। इन विद्यालयों में हिंदी और अंग्रेजी, दोनों माध्यमों के विद्यार्थियों को आधुनिक एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के बेहतर अवसर मिलेंगे।

इसी प्रकार, बच्चों को उनके घर के समीप बेहतर शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए 719 उत्कृष्ट विद्यालय खोले गए हैं। पढ़ाई के साथ बच्चों को खेलों में प्रोत्साहन देने के लिए 3,328 विद्यालयों में खेल मैदान विकसित किए जा रहे हैं। इसके लिए प्रत्येक विद्यालय को एक लाख रुपये दिए जा रहे हैं। इसके साथ ही, प्रत्येक जिले में एक विद्यालय को उत्कृष्ट खेल विद्यालय के रूप में विकसित किया जा रहा है।





नवाचार और आधुनिक तकनीक से जुड़ रही शिक्षा-

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश के विद्यालयों में नवाचार, विज्ञान और आधुनिक तकनीक आधारित शिक्षा को बढ़ावा दिया जा रहा है। अटल टिंकरिंग लैब तथा विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित आधारित प्रयोगशालाओं के माध्यम से बच्चों को रोबोटिक्स, 3डी प्रिंटिंग, कोडिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ऑगमेंटेड रियलिटी जैसी तकनीकों से परिचित कराया जा रहा है।

गणित में बच्चों की रुचि बढ़ाने के लिए हरियाणा गणित ओलंपियाड शुरू किया गया है। विद्यार्थियों को इसरो और डीआरडीओ जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों का भ्रमण करवाया जा रहा है।

युवाओं को रोजगार सृजन के लिए प्रोत्साहन-

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार ने युवाओं को नौकरी माँगने वाला नहीं, बल्कि रोजगार देने वाला बनाने के लिए कौशल बिजनेस चैलेंज शुरू किया है। इसके माध्यम से विद्यार्थी अपने नए विचारों को विकसित करके उन्हें स्टार्टअप का रूप दे सकते हैं। चयनित 67 टीमों को एक-एक लाख रुपये तक की प्रारंभिक सहायता दी जा रही है।

इसके अतिरिक्त, एक विद्यालय को स्कूल ऑफ एक्सीलेंस इन स्किल एजुकेशन के रूप में विकसित किया जा रहा है, ताकि विद्यार्थी आधुनिक कौशल सीख सकें। इतना ही नहीं, सरकारी स्कूलों के प्रतिभाशाली बच्चों के लिए सुपर-100 और बुनियाद कार्यक्रमों को और मजबूत बनाया है। सुपर-100 की सीटें 400 से बढ़ाकर 500 की गई हैं तथा बुनियाद कार्यक्रम के लिए दो नए आवासीय केंद्र खोलने का निर्णय लिया है।

उन्होंने कहा कि उन्हें यह बताते हुए खुशी हो रही

सुरेंद्र कुमार, पीजीटी अंग्रेजी, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सांगा (भिवानी)

शिक्षक द्वारा अंग्रेजी के 72 पाठ एजुसेट पर प्रसारित किए गए तथा ऑनलाइन शिक्षण के माध्यम से 200 से अधिक शैक्षिक वीडियो तैयार किए गए। इन प्रयासों से विद्यार्थियों को विद्यालय के साथ-साथ डिजिटल माध्यम से भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री उपलब्ध हुई। विद्यार्थियों की विषयगत समझ को मजबूत करने और उन्हें बोर्ड परीक्षाओं के लिए बेहतर ढंग से तैयार करने पर विशेष ध्यान दिया गया। इसके परिणामस्वरूप बोर्ड परीक्षा परिणामों में निरंतर सुधार हुआ और लगातार 7 वर्षों तक विद्यालय का बोर्ड परीक्षा परिणाम 100 प्रतिशत रहा।

शिक्षा के प्रति समर्पण का परिचय देते हुए शिक्षक ने अपने वेतन से 1.25 लाख रुपये की राशि शिक्षा के क्षेत्र में दान की। उनके मार्गदर्शन और विद्यार्थियों की मेहनत का उल्लेखनीय परिणाम वर्ष 2023 में देखने को मिला, जब कक्षा 12वीं की छात्रा नेहा चावला ने हरियाणा में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। यह उपलब्धि विद्यालय, शिक्षक और विद्यार्थियों के लिए गौरव का विषय बनी। शिक्षा के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें **राज्य शिक्षक पुरस्कार-2024** से सम्मानित किया गया।

मीनाक्षी शर्मा, टीजीटी संस्कृत, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, अजराना खुर्द (कुरुक्षेत्र)

मीनाक्षी शर्मा ने राजकीय माध्यमिक विद्यालय, अजराना खुर्द (कुरुक्षेत्र) में टीजीटी संस्कृत के रूप में कार्य करते हुए शिक्षा को रचनात्मक एवं नवाचारपूर्ण बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। विद्यालय में नवाचार संबंधी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को सीखने के नए अवसर उपलब्ध करवाए गए। उनके प्रयासों से विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या में भी वृद्धि हुई। उन्होंने शिक्षण को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखते हुए समाज में जागरूकता लाने वाले विभिन्न विषयों को भी अपनी रचनात्मक गतिविधियों का माध्यम बनाया। इन विषयों पर उन्होंने सैकड़ों स्वरचित कविताएँ लिखीं, जिनके माध्यम से विद्यार्थियों और समाज को विभिन्न सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया गया। उनकी कविताओं और रचनात्मक लेखन ने विद्यालयी वातावरण में साहित्यिक अभिरुचि को बढ़ावा देने के साथ विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित किया। शिक्षा, नवाचार, साहित्य और सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें **राज्य शिक्षक पुरस्कार-2025** से सम्मानित किया गया।

सुमन सहारण, पीजीटी भूगोल, शहीद मेजर विनय चौधरी राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, डिफेंस कॉलोनी, जौड़

सुमन सहारण ने भूगोल विषय के शिक्षण को रोचक, व्यावहारिक और अनुभवात्मक बनाने के लिए विद्यालय परिसर को ही भूगोल की प्रयोगशाला में परिवर्तित कर एक आकर्षक जियोग्राफिकल पार्क विकसित किया। इस पार्क में 6 फुट का ग्लोब तथा भारत और हरियाणा के मानचित्रों के मॉडल स्थापित किए गए हैं। इन संसाधनों के माध्यम से विद्यार्थी भूगोल की विभिन्न अवधारणाओं को केवल पुस्तकों तक सीमित न रखकर प्रत्यक्ष रूप से समझने का अवसर प्राप्त करते हैं। इस पहल से विद्यार्थियों में विषय के प्रति रुचि बढ़ी तथा उन्हें मानचित्र, स्थान, दिशाओं और भौगोलिक संरचनाओं को व्यावहारिक रूप से समझने में सहायता मिली। शिक्षण को नवाचार और गतिविधि-आधारित बनाने के उनके प्रयासों को व्यापक सराहना मिली। उनके प्रयास यह दर्शाते हैं कि रचनात्मक सोच और उपलब्ध संसाधनों के प्रभावी उपयोग से विद्यालय परिसर को सीखने का जीवंत केंद्र बनाया जा सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें **राज्य शिक्षक पुरस्कार-2024** से सम्मानित किया गया।

है कि वर्ष 2026 में सुपर-100 के 38 विद्यार्थी आईआईटी और 44 विद्यार्थी एनआईटी में पहुँचे हैं। यही नहीं, कई विद्यार्थियों ने नीट उत्तीर्ण करके एमबीबीएस में प्रवेश प्राप्त किया है।

शिक्षकों के व्यावसायिक विकास और कल्याण पर विशेष ध्यान-

उन्होंने कहा कि सरकार शिक्षकों के कल्याण के लिए भी निरंतर कार्य कर रही है। शिक्षक स्थानांतरण व्यवस्था को पारदर्शी बनाने के लिए नई शिक्षक

स्थानांतरण नीति लागू की गई है। शिक्षकों के निरंतर व्यावसायिक विकास पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इसके लिए सीपीडी फ्रेमवर्क तैयार किया गया है। इसे विशेषज्ञ संस्थानों के सहयोग से विकसित किया गया है। निपुण हरियाणा के तहत शिक्षकों के दो प्रशिक्षण चरण पूरे हो चुके हैं और अगले माह लगभग 32 हजार पीआरटी शिक्षकों को प्रशिक्षण देने की योजना है।

हिंदी अध्यापिका

रामा विद्यालय सेक्टर-25, पंचकूला





शिक्षक दिवस

गुरु चरित्र-निर्माता ही नहीं, बल्कि जीवन का मार्गदर्शक- महीपाल ढांडा



सुभाष शर्मा



हरियाणा के शिक्षा मंत्री श्री महीपाल ढांडा ने शिक्षक दिवस पर संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षक दिवस केवल पुरस्कार बाँटने का एक

औपचारिक समारोह नहीं है। यह दिन हमारी उस महान भारतीय गुरु-परंपरा को स्मरण करने का अवसर है, जिसने सदियों से इस देश की नींव को सींचा है। हमारे शास्त्रों और संस्कृति में गुरु को केवल ज्ञान देने वाली एक इकाई नहीं माना गया; गुरु चरित्र का निर्माता है, जीवन का मार्गदर्शक है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जैसे एक महान शिक्षक का देश के सर्वोच्च राष्ट्रपति पद तक पहुँचना इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि हमारे भारतवर्ष में शिक्षक के योगदान को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है।

शिक्षकों की मेहनत से बेहतर हुए परीक्षा परिणाम-

उन्होंने कहा कि एक दशक पहले हरियाणा में बोर्ड परीक्षा परिणाम 40 प्रतिशत के आसपास रहता था, आज वही परिणाम बढ़कर 90 प्रतिशत के ऐतिहासिक स्तर को छू रहा है! यह चमत्कार कागजों पर नहीं हुआ है। इसके पीछे हमारे अध्यापकों की एक्स्ट्रा क्लास, कमजोर बच्चों को दी गई व्यक्तिगत सहायता, अथक प्रयास और अभिभावकों के साथ बनाया गया भरोसा है।

शिक्षा मंत्री ने कहा कि परीक्षा परिणामों में आया यह सुधार केवल आँकड़ों की उपलब्धि नहीं है, बल्कि इसके पीछे शिक्षकों की प्रतिबद्धता, विद्यार्थियों की मेहनत और अभिभावकों के सहयोग की साझा भूमिका है। शिक्षक ने बदलते समय की आवश्यकताओं को समझते हुए अपने

शिक्षण के तौर-तरीकों में भी निरंतर बदलाव किया है। यही कारण है कि आज कक्षा में सीखने की प्रक्रिया पहले की तुलना में अधिक गतिविधि-आधारित, तकनीक-सक्षम और विद्यार्थी-केन्द्रित हो रही है।



शिक्षा व्यवस्था में हो रहे निरंतर सुधार-

मंत्री ने कहा कि आज हरियाणा शिक्षा के हर क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। मुख्यमंत्री की

गुलाब सिंह, टीजीटी संस्कृत, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कृष्णपुरा (पानीपत)

लगभग 30 वर्षों के शिक्षण-अध्यापन अनुभव वाले गुलाब सिंह शिक्षा के साथ साहित्य, मंच-संचालन और सामाजिक गतिविधियों में भी सक्रिय रहे हैं। वे राष्ट्रीय स्तर के कवि हैं और अनेक प्रतिष्ठित काव्य-सम्मेलनों में काव्य-पाठ कर चुके हैं तथा खेल, सांस्कृतिक और सामाजिक आयोजनों में एक हजार से अधिक मंचों का संचालन किया है।

वे लेखक के रूप में तीन पुस्तकों का सृजन कर चुके हैं, जिनमें कविता-संग्रह भी शामिल हैं। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय गोष्ठियों, विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में विभिन्न विषयों पर व्याख्यान देकर वे साहित्यिक एवं बौद्धिक गतिविधियों को निरंतर आगे बढ़ा रहे हैं। उन्हें काव्य भूषण सम्मान, कवि गौरव, साहित्य गौरव तथा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड सहित अनेक सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है।

शिक्षण क्षेत्र में उनका विशेष जोर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, पाठ्यक्रम के साथ सह-पाठ्यचर्या, खेल एवं सांस्कृतिक गतिविधियों तथा नवाचार पर रहा है। वे विभिन्न सामाजिक एवं साहित्यिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं और समाज में जागरूकता एवं समरसता के लिए कार्य करते रहे हैं। शिक्षा, नवाचार एवं सामाजिक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए उन्हें राज्य शिक्षक पुरस्कार 2025 से सम्मानित किया गया।

बबिता, प्राथमिक अध्यापिका, राजकीय प्राथमिक पाठशाला, बेरी नंबर-2, झज्जर

श्रीमती बबिता ने राजकीय प्राथमिक पाठशाला, बेरी नंबर-2, झज्जर में प्राथमिक अध्यापिका के रूप में कार्य करते हुए विद्यालय की शैक्षिक एवं सामाजिक पहचान को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने शिक्षा से वंचित रह जाने वाले गरीब एवं श्रमिक परिवारों के बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए निरंतर प्रयास किए। अभिभावकों को बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूक करने के लिए समय-समय पर अनेक सेमिनार आयोजित किए गए। इसके साथ ही, नशे की समस्या से प्रभावित अभिभावकों को नशा छोड़ने के लिए प्रेरित करने हेतु जागरूकता अभियान चलाया। उनके प्रयासों में शिक्षा के साथ सामाजिक सरोकारों को भी विशेष स्थान मिला। बच्चों की नियमित शिक्षा, अभिभावकों की जागरूकता और विद्यालय के सामाजिक दायित्वों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने विद्यालय की पहचान को मजबूत करने में योगदान दिया। शिक्षा एवं सामाजिक क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें राज्य शिक्षक पुरस्कार-2024 से सम्मानित किया गया।





घोषणा के अनुसार इसे कक्षा 5 तक विस्तारित किया गया है। बालवाटिका कक्षा 3 से कक्षा 4 तक के बच्चों का 'निपुण हरियाणा टीचर एप' से डिजिटल मूल्यांकन हो रहा है। बच्चों के लिए 10 करोड़ रुपये की लागत से मुफ्त स्टेशनरी, ड्रेस और बैग उपलब्ध कराए गए हैं।

160 मानकों से विद्यालयों का सटीक मूल्यांकन-

उन्होंने कहा कि विद्यालयों के सटीक मूल्यांकन के लिए 160 मानकों वाला एक मूल्यांकन तंत्र लागू किया गया है। सभी स्कूलों में ड्यूल् डेस्क और आधुनिक क्लासरूम उपलब्ध कराए जा रहे हैं। 250 सीएम श्री, पीएम श्री और संस्कृति मॉडल स्कूलों को मॉडल के रूप में विकसित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि आधुनिक सुविधाओं के साथ-साथ विद्यालयों में ऐसा वातावरण तैयार करना भी आवश्यक है, जहाँ विद्यार्थी बिना किसी संकोच के अपनी जिज्ञासाएँ व्यक्त कर सकें। शिक्षक विद्यार्थियों की प्रतिभा को पहचानकर उसे सही दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विद्यालय केवल पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करने का स्थान नहीं, बल्कि अनुशासन, सहयोग, संवेदनशीलता और जिम्मेदारी जैसे जीवन-मूल्यों को सीखने का भी केंद्र है।

वैश्विक अवसर और कौशल-

बच्चों को ग्लोबल अवसरों से जोड़ने के लिए 26 स्कूलों में फ्रेंच और जर्मन भाषाएँ शुरू की गई हैं। हमारे विद्यार्थी इसरो जा रहे हैं और भविष्य में उन्हें फ्रांस व जर्मनी के शैक्षणिक भ्रमण पर भी भेजा जाएगा। शिक्षा मंत्री ने कहा कि बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्था में विद्यार्थियों के लिए केवल पारंपरिक विषयों का ज्ञान पर्याप्त नहीं है। उन्हें भाषाओं, तकनीक, नवाचार और व्यावहारिक कौशल से भी परिचित कराना आवश्यक है। इससे विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ेगा और वे राष्ट्रीय ही नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर उपलब्ध अवसरों के लिए भी स्वयं को तैयार कर सकेंगे।

उन्होंने कहा कि 'सुपर 100' की सीटें 400 से बढ़ाकर 500 की गई हैं। मिशन बुनियाद, 2,238 स्कूल लैब्स, इंटरनेट और स्मार्ट बोर्ड से हरियाणा का बच्चा-बच्चा लैस हो रहा है। मेवात कैडर में 1,200 नए पीआरटी अध्यापकों की नियुक्ति से ढाँचे को और मजबूती मिली है।

उन्होंने कहा कि सरकार का प्रयास है कि प्रदेश का प्रत्येक विद्यार्थी अपनी क्षमता के अनुरूप आगे बढ़े और उसे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आधुनिक संसाधन तथा उचित मार्गदर्शन उपलब्ध हो। इसके लिए शिक्षक सबसे महत्वपूर्ण कड़ी हैं। शिक्षकों के ज्ञान, अनुभव और संवेदनशीलता से ही शिक्षा व्यवस्था को नई दिशा मिलती है और विद्यार्थियों में भविष्य की चुनौतियों का सामना करने का आत्मविश्वास पैदा होता है।

प्रधानाचार्य

रावमा विद्यालय, खुड्डाकलौ, अंबाला

पुरस्कृत किए गए शिक्षक		
1.	डॉ. राजेंद्र सिंह	रावमा विद्यालय, दसौली (रेवाड़ी)
2.	श्री सत्येंद्र कुमार	रामोंसंवमा विद्यालय, सेक्टर-55, फरीदाबाद
3.	श्री श्याम कुमार	शहीद सुबेदार कुँवरपाल सिंह राघव रावमा विद्यालय, भोंडसी (गुरुग्राम)
4.	श्री सुभाष शर्मा	रावमा विद्यालय, टिककर हिल्स (पंचकूला)
5.	श्री सुरेंद्र कुमार	रावमा विद्यालय, सांगा (भिवानी)
6.	श्रीमती सीमा रानी	शहीद जिले सिंह राकवमा विद्यालय, बड़ौदा (जौद)
7.	श्री नरेंद्र सिंह	रावमा विद्यालय, सीठाना (पानीपत)
8.	श्रीमती मीनू गोयल	रावमा विद्यालय, जौली (सोनीपत)
9.	श्रीमती सुमन सहारण	शहीद मेजर विनाय चौधरी रामोंसंवमा विद्यालय, डिफेंस कॉलोनी, जौद
10.	श्री रोहित कुमार शर्मा	शहीद सिपाही हरिचंद रावमा विद्यालय, नैना धांस (केथल)
11.	श्रीमती माया यादव	शहीद मेजर विनाय यादव, राकवमा विद्यालय, कोसली (रेवाड़ी)
12.	श्री राकेश कुमार	रामोंसंवमा विद्यालय, धौलेड़ा(महेन्द्रगढ़)
13.	श्री कुलदीप सिंह	रावमा विद्यालय, रामराय (जौद)
14.	श्री विजय कुमार	शहीद सुबेदार कुमरपालसिंह राघव रावमा विद्यालय, भोंडसी (गुरुग्राम)
15.	श्री राम मेहर	रामोंसंवमा विद्यालय, जीटी रोड, पानीपत
16.	श्री सुभाष	रामा विद्यालय, निमड़ी (चरखी दादरी)
17.	श्री मदन लाल	रामा विद्यालय, मुसेपुर (करनाल)
18.	श्रीमती बबली देवी	रामा विद्यालय, सेहरी (सोनीपत)
19.	श्री सोनू कुमार	रावमा विद्यालय, सराय अलावर्दी (गुरुग्राम)
20.	श्री महेंद्र सिंह	रामा विद्यालय, बाल जहान (पानीपत)
21.	श्री सदीप कुमार	रावमा विद्यालय, चिड़िया (चरखी दादरी)
22.	श्री धिनोद कुमार	रामा विद्यालय, भटसाना (रेवाड़ी)
23.	श्रीमती अंजू	रावमा विद्यालय, शेरगढ़ (केथल)
24.	श्री मुकेश कुमार	रामोंसंवमा विद्यालय, ततारपुर इस्तमुरा (रेवाड़ी)
25.	श्री राजेश कुमार	रावमा विद्यालय, बरस (करनाल)
26.	श्रीमती शांति देवी	स्व. से. चौ. चंदन सिंह रावमा विद्यालय, बैयापुर लहरा (सोनीपत)
27.	श्री मुकेश	शहीद धर्म सिंह रावमा विद्यालय, लूखी (रेवाड़ी)
28.	श्री राजेश कुमार	शहीद मेजर अनुज राजपूत रामोंसंवमा विद्यालय, सेक्टर-20, पंचकूला
29.	श्री महेंद्र सिंह	राजा पाठशाला, काबड़ी (पानीपत)
30.	श्री हंस राज	रामोंसंप्रा पाठशाला, नलवी कलां (करनाल)
31.	श्री जयपाल	राजा पाठशाला, खंदरई (सोनीपत)
32.	श्री सतपाल सिंह	राजा पाठशाला, ढाणी सहजानपुर (भिवानी)
33.	श्री भूपेंद्र	राजा पाठशाला, गोविंदपुरा (चरखी दादरी)
34.	श्री राजीव	राजा पाठशाला, डेरा गुजरान (पानीपत)
35.	श्री देवेंद्र सिंह	रामोंसंप्रा पाठशाला, सोहंसड़ा (भिवानी)
36.	श्री राज कुमार	राजा पाठशाला, चांदुवास (रेवाड़ी)
37.	श्रीमती नीलू	राजा पाठशाला, डिंडवाड़ी (पानीपत)
38.	श्रीमती बबिता	राजा पाठशाला, बेरी नं.-2, झज्जर
39.	श्रीमती मुन्नी देवी	राजा पाठशाला, पुलिस लाइन, हिसार
40.	श्रीमती टीना कुमारी	राजा पाठशाला, अलावलपुर (रेवाड़ी)
41.	श्री हीरा लाल	शहीद सूर्य प्रकाश राव विद्यालय, बाहवास (भिवानी)

पुरस्कृत किए गए शिक्षक		
42.	श्री विपिन कुंडू	रावमा विद्यालय, सिठाना (पानीपत)
43.	श्री नरेश कुमार	रामोंसंवमा विद्यालय, बाप (सिरसा)
44.	श्रीमती सरोज	पीएम श्री राकवमा विद्यालय, भिवानी
45.	श्री यशपाल	रावमा विद्यालय, कालीरावण (हिसार)
46.	श्री प्रदीप कुमार	शहीद रामस्वरूप रावमा विद्यालय, कँवाली (रेवाड़ी)
47.	डॉ. प्रवीण कुमार	रामोंसंवमा विद्यालय, नाहरी (सोनीपत)
48.	श्रीमती सुनील यादव	शहीद सुबेदार कुमरपाल सिंह राघव रावमा विद्यालय, भोंडसी (गुरुग्राम)
49.	श्री शैलेन्द्र कुमार	पीएम श्री रावमा विद्यालय, लेधां (भिवानी)
50.	श्री शीशपाल	रावमा विद्यालय, बलाही (कुरुक्षेत्र)
51.	श्री राज कुमार	रामोंसंवमा विद्यालय, भूना (फतेहाबाद)
52.	श्री सत्य नारायण	रामा विद्यालय, पाथरी (पानीपत)
53.	श्री श्याम सुंदर	रामा विद्यालय, कंसाली (नैह-मेवात)
54.	डॉ. बीरमती	रामा विद्यालय, शिवजी नगर, गुरुग्राम
55.	श्रीमती यशवंती	रामा विद्यालय, खेड़ी बहिया (सोनीपत)
56.	श्री मुकेश कुमार	रामोंसंवमा विद्यालय, बीकानेर (रेवाड़ी)
57.	श्री कृष्ण सिवाच	स्व. से. बाबू मूलचंद जैन राठ विद्यालय, सिकंदरपुर माजरा (सोनीपत)
58.	श्री धिनोद कुमार	राकवमा विद्यालय, करौड़ा (केथल)
59.	श्रीमती स्वस्ति रानी	राकवमा विद्यालय, पाली (फरीदाबाद)
60.	श्री अनिल कौशिक	डॉ. स्वप्न सिंह रामोंसंवमा विद्यालय, सांधी (रोहतक)
61.	श्री सतीश कुमार	रावमा विद्यालय, खेड़ा खेमावती (जौद)
62.	श्री करण सिंह पुनिया	रावमा विद्यालय, काबड़ी (पानीपत)
63.	श्री जगवीर सिंह	पीएम श्री रावमा विद्यालय, अकबरपुर बरोटा (सोनीपत)
64.	श्री सतपाल मलिक	पीएम श्री रावमा विद्यालय, बड़ागाँव (करनाल)
65.	श्री गुलाब सिंह	रावमा विद्यालय, कृष्णपुरा (पानीपत)
66.	श्रीमती मीनाक्षी शर्मा	रामा विद्यालय, अजराना खुर्द (कुरुक्षेत्र)
67.	श्री सुरेंद्र राठी	रावमा विद्यालय, निजामपुर (पानीपत)
68.	श्री अनिल कुमार	राजा पाठशाला, वार्ड नं.-11, पानीपत
69.	श्री बलविंद सिंह	राजा पाठशाला, रसलापुर (पानीपत)
70.	श्री हितेश मेहरा	रामोंसंप्रा पाठशाला, श्रीमगढ़ खेड़ी (गुरुग्राम)
71.	श्री कर्मवीर सिंह दुहन	रामोंसंप्रा पाठशाला, सिंधड़ (हिसार)
72.	श्री बलजीत सिंह	राकमोंसंप्रा पाठशाला, डुमरखां (जौद)
73.	श्री लीलाराम	राजा पाठशाला, ढाणी गंगा बिशन (भिवानी)
74.	श्री पवन कुमार	राजा पाठशाला, मिन्क खास (यमुनानगर)
75.	श्री पवन कुमार	राजा पाठशाला, रमान रमानी (केथल)
76.	श्रीमती पूनम	रामोंसंप्रा पाठशाला, सांवड़ (चरखी दादरी)
77.	श्रीमती शांता कुमारी	राकपा पाठशाला, मामड़िया अहीर (रेवाड़ी)
78.	श्रीमती अरविन कुमारी	राजा पाठशाला, हरिजन बस्ती (भिवानी)
79.	श्री राजा सिंह जिंजर	शहीद सिपाही करनैल सिंह रावमा विद्यालय हरिगढ़ किंगन (केथल)





शिक्षक दिवस

रोहतक के शिक्षक अनिल कौशिक को मिला नेशनल अवॉर्ड

गणित को प्रयोग, नवाचार और तकनीक से सरल बनाने वाले शिक्षक हैं अनिल कौशिक



डॉ. सुदेश रानी



अनिल कौशिक, सुपुत्र श्री लक्ष्मी नारायण, गाँव धिलौड़ खुर्द, रोहतक, राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सांघी, रोहतक में

गणित अध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। गणित शिक्षण को प्रयोगात्मक, रुचिकर और तकनीक आधारित बनाने के साथ-साथ विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों को बढ़ाने तथा शिक्षकों के क्षमता-विकास में उनका उत्त्प्रेरक योगदान रहा है। उनके कार्यों को राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार-2026 तथा राज्य शिक्षक पुरस्कार-2025 के लिए चुना गया है।

श्री कौशिक ने सत्र 2024-25 के दौरान एक वर्चुअल मैथमेटिक्स लैब स्थापित की। इस वर्चुअल लैब को 12 भागों में विभाजित किया गया है। इसमें कक्षा छठी से दसवीं तक गणित विषय की एनसीईआरटी पाठ्य-पुस्तकें, भारतीय गणितज्ञों की जीवनीयों एवं उनके कार्य, कक्षा अनुसार गणित के फॉर्मूले, टीएलएम एवं मॉडल के वीडियो, गणित के खेल और पहलियाँ



शामिल हैं। इसमें 130 हरबंस पजल भी शामिल किए गए हैं। इसके अतिरिक्त गणित विषय के विषयवार और कक्षावार वीडियो लेक्चर, गणितज्ञों के उद्धरण, गणितीय सॉफ्टवेयर, वैदिक गणित की पुस्तक की

पीडीएफ, 30 ऑनलाइन लैब गतिविधियाँ तथा गणित की प्रश्नोत्तरी और असाइनमेंट भी उपलब्ध हैं। विद्यार्थी इन सभी संसाधनों का निःशुल्क उपयोग अपने घर पर बैठकर मोबाइल फोन या कंप्यूटर के माध्यम से कर सकते हैं तथा प्रयोग एवं अभ्यास के माध्यम से गणित सीख सकते हैं।

गणित को प्रयोग के माध्यम से समझाने की उनकी पहल नई नहीं है। सत्र 2017-18 में उन्होंने विद्यालय परिसर में गणित प्रयोगशाला का निर्माण कराया। इस प्रयोगशाला का उद्घाटन उस समय की एससीईआरटी निदेशक किरणमई द्वारा किया गया। प्रयोगशाला को चार भागों में विभाजित किया गया है। पहले भाग में भारतीय गणितज्ञों के कार्य एवं जीवनीयों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। दूसरे भाग में गणितज्ञों के उद्धरणों को स्थान दिया गया है। तीसरे भाग में कक्षा छठी से दसवीं तक के सभी फॉर्मूले चार्ट के माध्यम से प्रस्तुत किए गए हैं। चौथे भाग में लगभग 50 सक्रिय गणितीय मॉडल तैयार कर प्रस्तुत किए गए हैं, जिनके माध्यम से विद्यार्थी 'लर्निंग बाय सेल्फ इडूंग' अर्थात् स्वयं करके सीखते हैं। गणित प्रयोगशाला के कार्य की जाँच के बाद हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी द्वारा भी उन्हें प्रशंसा-पत्र प्राप्त हुआ।

गणित शिक्षण में किए गए इन दोनों प्रकार के





नवाचारों को देखते हुए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् ने उन्हें सत्र 2024-25 के दौरान राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी में विशेष पजल पर स्टॉल लगाने के लिए आमंत्रित किया। विद्यार्थियों को गणित विषय में प्रयोगात्मक और रचनात्मक अवसर उपलब्ध कराने के उनके प्रयासों का प्रभाव विद्यार्थियों की उपलब्धियों में भी दिखाई देता है। गणित प्रयोगशाला के प्रयोग के उपरान्त विद्यार्थियों ने पाँच बार राज्य स्तर पर गणित प्रदर्शनी में उत्कृष्ट उपलब्धि हासिल की। वहीं, सत्र 2015-16 से सत्र 2025-26 तक विद्यार्थियों ने जिला स्तर पर भी उत्कृष्ट स्थान प्राप्त किए।

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों के क्षेत्र में भी श्री कौशिक का योगदान उत्तेजनीय रहा है। सत्र 2025-26 तक उनके मार्गदर्शन में 65 विद्यार्थियों को राष्ट्रीय साधन-सह-योग्यता छात्रवृत्ति (NMMS) प्राप्त हुई, जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी को ₹48,000 की राशि मिलती है। सत्र 2018-19 में दसवीं कक्षा के 13 विद्यार्थियों को ₹24,000 की छात्रवृत्ति प्राप्त हुई। सत्र 2025-26 तक पाँच विद्यार्थी इंस्पायर अवार्ड मानक के लिए जिला स्तर पर चुने गए, जिन्हें ₹10,000 प्रति विद्यार्थी प्राप्त हुए। उनके पूर्ण सेवा-काल के दौरान वार्षिक परीक्षा परिणाम 100 प्रतिशत रहा है।

शिक्षक के रूप में वे केवल कक्षा शिक्षण तक सीमित नहीं रहे, बल्कि शिक्षकों के प्रशिक्षण और शैक्षिक सामग्री के निर्माण में भी सक्रिय रहे हैं। अब तक वे लगभग 1000 से ज्यादा शिक्षा विभाग के कर्मचारियों को प्रशिक्षण दे चुके हैं तथा लगभग 150 से ज्यादा प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूरे कर चुके हैं। राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् हरियाणा के मार्गदर्शन में सत्र 2021-22 से अब तक कक्षा छठी से आठवीं के गणित विषय के प्रश्न-पत्र तैयार करने तथा प्रश्न बैंक तैयार करने वाली कमेटी के सदस्य के रूप में कार्य कर रहे हैं। वे एससीईआरटी हरियाणा के मार्गदर्शन में वीडियो समीक्षक के रूप में भी कार्य कर रहे हैं और लगभग 400 से अधिक ई-कंटेंट तैयार कर चुके हैं।

सत्र 2024-25 के दौरान वे मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स कमेटी के सदस्य रहे, जिसमें विषय तैयार करने का कार्य किया। कक्षा 9वीं के ऑनलाइन अधिगम आधारित एससीईआरटी हरियाणा के नींव प्रोग्राम के सदस्य के रूप में भी वे कार्य कर रहे हैं। राष्ट्रीय दीक्षा पोर्टल पर गणित विषय के उनके 22 वीडियो आज भी विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। सत्र 2022-23 के दौरान एससीईआरटी हरियाणा के तत्वावधान में ई-कंटेंट तैयार करने के लिए गाइडलाइन तैयार करने वाली कमेटी के सदस्य के रूप में भी उन्होंने कार्य किया। सत्र 2023-24 के दौरान वे सीआईईटी के लिए एसआरजी के सदस्य रहे।

शैक्षिक विषय-वस्तु के विकास के साथ-साथ राष्ट्रीय स्तर की समितियों में भी उनकी सहभागिता रही है। सत्र 2022-23 तथा सत्र 2025-26 में उन्होंने 'MODIFICATION AND DEVELOPMENT OF MATH-



EMATICAL LABORATORY KIT' कमेटी के सदस्य के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर कार्य किया। हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी में गठित वैदिक मेथमेटिक्स कमेटी के सदस्य के रूप में भी उन्होंने कार्य किया। अब तक उनके छह रिसर्च पेपर इंटरनेशनल लेवल पर प्रकाशित हो चुके हैं।

कोरोना काल में भी उन्होंने विद्यार्थियों की शिक्षा को निरंतर बनाए रखने में योगदान दिया। राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् हरियाणा के मार्गदर्शन में उड़ान प्रोजेक्ट के अंतर्गत कक्षा आठवीं के दो अध्यायों की वर्कशीट और टीचर मैन्युअल तैयार किए। राष्ट्रीय शिक्षा संसाधनों से जुड़ी डिजिटल पहलों में भी उनकी सहभागिता रही है। डिजिटल जिला रिपोजिटरी सीसीआरटी के मार्गदर्शन में छह फ्रीडम फाइटर्स की जीवनीयों को ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से प्रदर्शित करने में सफलता मिली है।

विद्यालय के विकास में भी उनका योगदान रहा है। राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सांघी, रोहतक को अब तक ₹9,00,000 से अधिक की धनराशि उनके प्रोत्साहन के परिणामस्वरूप प्राप्त हुई है। विद्यार्थियों के ड्रापआउट को कम करने के लिए भी उन्होंने कार्य किया है। इक्लूसिव एजुकेशन को बढ़ावा देते हुए सीडब्ल्यूएसएन विद्यार्थियों की विशेष सहायता तथा मॉडल आधारित अधिगम पर कार्य किया गया। कोरोना काल के दौरान विद्यार्थियों को पाठ्य-पुस्तकों की प्रति उपलब्ध करवाने में भी उन्होंने विशेष भूमिका निभाई, जिसके लिए जिला शिक्षा अधिकारी, रोहतक तथा उपायुक्त, रोहतक द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया।

विद्यालय के प्रशासनिक और डिजिटल कार्यों में भी उनका योगदान रहा है। विद्यालय के पुराने विद्यार्थियों के वर्ष 1974 से 2017 तक के एडमिशन विडिओ को ऑनलाइन किया गया है। यह कार्य विद्यालय के पुराने अभिलेखों को डिजिटल स्वरूप में व्यवस्थित करने की दिशा में महत्वपूर्ण रहा।

सामाजिक सरोकारों के क्षेत्र में भी श्री कौशिक सक्रिय रहे हैं। अपनी कार्यस्थली के समीप चार बार रक्तदान शिविर लगाने में उन्होंने विशेष योगदान दिया। इस प्रकार उनका कार्यक्षेत्र कक्षा-कक्षा से आगे बढ़कर शैक्षिक नवाचार, डिजिटल सामग्री निर्माण, शिक्षक प्रशिक्षण, विद्यार्थी उपलब्धियों, समावेशी शिक्षा, विद्यालय विकास और सामाजिक सहभागिता तक विस्तृत है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 'परीक्षा पर चर्चा' कार्यक्रम में सत्र 2023-24 के दौरान उनके प्रश्नों और विचारों को शामिल किया गया, जिसके लिए प्रधानमंत्री कार्यालय द्वारा विशेष प्रशंसा-पत्र भेजकर उन्हें सम्मानित किया गया। सत्र 2024-25 के दौरान नेशनल वोटर्स डे में ऑनलाइन भागीदारी के लिए भी उन्हें प्रशंसा-पत्र प्राप्त हुआ।

अनिल कौशिक का शैक्षिक कार्य गणित को केवल पाठ्य-पुस्तक तक सीमित रखने के बजाय प्रयोग, मॉडल, पहेली, डिजिटल संसाधन और स्व-अधिगम से जोड़ने पर केंद्रित रहा है। उनके प्रयासों से विद्यार्थियों को विद्यालय और घर, दोनों स्थानों पर गणित सीखने के विविध अवसर मिले हैं। इसी निरंतरता में उनका अनुभव, नवाचार, प्रशिक्षण, शोध, डिजिटल सामग्री निर्माण और विद्यार्थियों की उपलब्धियों के लिए किए गए प्रयास एक ऐसे शिक्षक की कार्य यात्रा को प्रस्तुत करते हैं, जो गणित शिक्षण को अधिक प्रयोगात्मक और विद्यार्थी-केंद्रित बनाने के लिए निरंतर सक्रिय रहे हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में अपने नवाचारों और समर्पण से नई राहें प्रशस्त करने वाले श्री कौशिक को हार्दिक शुभकामनाएँ। उनकी ज्ञान-यात्रा निरंतर नई ऊँचाइयों छूती रहे और उनके प्रयासों से विद्यार्थियों के सपनों को सदैव नई उड़ान मिलती रहे।

हिंदी अध्यापिका

रामा विद्यालय सेक्टर-25, पंचकूला





नव-नियुक्त 1054 प्राथमिक शिक्षकों का ओरिएंटेशन कार्यक्रम



मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने नूँह की अनाज मंडी में भीते दिनों आयोजित राज्य स्तरीय ओरिएंटेशन कार्यक्रम के दौरान मेवात कैंडर के 1054 नव-नियुक्त प्राथमिक (पीआरटी) शिक्षकों को संबोधित किया। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने कहा कि नए शिक्षकों की तैनाती से क्षेत्र में शिक्षक-विद्यार्थी का अनुपात सुधरेगा और प्राथमिक शिक्षा का स्तर और अधिक मजबूत होगा।

कार्यक्रम की शुरुआत में दीप प्रज्वलित करके मुख्यमंत्री ने उस दिन को खास बताते हुए कहा कि वीर हसन खॉं मेवाती की शौर्य भूमि पर इतने बड़े आयोजन का होना मेवात क्षेत्र के लिए गर्व की बात है। इस अवसर पर नव-नियुक्त शिक्षकों के लिए शिक्षा विषयक 22 स्टॉल की एक भव्य प्रदर्शनी आयोजित की गई, जिसका मुख्यमंत्री ने अवलोकन किया। साथ ही, शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल को निखारने के लिए विशाल एलईडी स्क्रीन पर पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन के जरिए एक प्रभावी प्रशिक्षण सत्र भी आयोजित हुआ। इस दौरान 'मुख्यमंत्री मेवात छात्र प्रतिभा सम्मान योजना' के तहत सम्मान राशि भी जारी की गई। इस दौरान हरियाणा के उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री

राव नरबीर सिंह, शिक्षा मंत्री श्री महीपाल दांडा, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री श्याम सिंह राणा मौजूद थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मेवात, जो कभी शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ा माना जाता था, अब होनहार बच्चों का क्षेत्र बन गया है। रोजगार और शिक्षा के सुदृढ़ीकरण से मेवात में एक नया शैक्षणिक सूर्योदय हो रहा है।

मुख्यमंत्री ने पाँच संकल्प लेने का किया आह्वान-

मेवात कैंडर के नव-नियुक्त शिक्षकों को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि यह नियुक्ति उनकी वर्षों की मेहनत और परिवार के त्याग का सुखद परिणाम है। उन्होंने शिक्षकों से आग्रह किया कि वे अपनी नियुक्ति को कठिन पोस्टिंग नहीं, बल्कि परिवर्तन की पोस्टिंग के रूप में देखें और जहाँ अवसर कम दिखें, वहीं अपना सर्वश्रेष्ठ दें। उन्होंने कहा कि खेल, कहानी, चित्र, गतिविधि और स्थानीय उदाहरणों के जरिए पढ़ाई को रोचक बनाया जाए, बच्चों की मातृभाषा और स्थानीय बोली का सम्मान किया जाए तथा कक्षा में ऐसा माहौल बने, जहाँ प्रश्न पूछना जिज्ञासा माना जाए, न

कि कमजोरी।

मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि तकनीक शिक्षा का महत्वपूर्ण साधन है और डिजिटल सामग्री सीखने को रोचक बना सकती है, लेकिन मशीन जानकारी दे सकती है, संस्कार नहीं दे सकती। इसलिए शिक्षक को मानवीय संबंध को हमेशा केंद्र में रखना चाहिए।

इस अवसर पर उन्होंने शिक्षकों से पाँच संकल्प लेने का आह्वान किया, हर बच्चे को अपना बच्चा मानना, किसी बच्चे को सीखने में पीछे न छूटने देना, समय व ईमानदारी से विद्यालय जाना, अभिभावकों व समाज को शिक्षा से जोड़ना तथा अपने आचरण से बच्चों को वे बातें सिखाना जो किताबों से नहीं सिखाई जा सकती।

विभागीय कार्यप्रणाली से कराया परिचित-

राज्य स्तरीय इंडक्शन कार्यक्रम के मुख्य आयोजन से पूर्व नव नियुक्त मेवात (नूँह) कैंडर के शिक्षकों के लिए विशेष अभिमुखीकरण सत्र आयोजित किए गए। प्रथम सत्र में एससीईआरटी, गुरुग्राम के वरिष्ठ विषय विशेषज्ञ डॉ. मनोज वर्मा एवं डॉ. महूप ने शिक्षा विभाग की संरचना, विभागीय व्यवस्था तथा प्रभावी शिक्षण-अधिगम पद्धतियों पर विस्तार से जानकारी दी।

द्वितीय सत्र में कार्यक्रम अधिकारी डॉ. प्रमोद कुमार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की प्रमुख अवधारणाओं, शिक्षक की बदलती भूमिका तथा अनुभवात्मक अधिगम जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर शिक्षकों का मार्गदर्शन किया।

तृतीय सत्र में नूँह जिले की एफएलएन के ऑर्डिनेटर कुसुम मलिक ने निपुण हरियाणा मिशन के अंतर्गत जिले में किए जा रहे कार्यों और विभिन्न गतिविधियों की जानकारी साझा की।

इस अवसर पर प्रधान सचिव, विद्यालय शिक्षा विभाग, श्री विजय सिंह दहिया ने मुख्यातिथि सहित सभी गणमान्य अतिथियों एवं नवनियुक्त शिक्षकों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि शिक्षक के रूप में सरकारी सेवा में प्रवेश गौरव के साथ-साथ एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी भी है। शिक्षक शिक्षा-व्यवस्था की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी हैं और उनका दायित्व केवल पाठ्यक्रम पूरा करना नहीं, बल्कि प्रत्येक बच्चे की प्रतिभा को पहचानकर उसके सर्वांगीण विकास के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना है। उन्होंने नवनियुक्त शिक्षकों से विभाग की नीतियों एवं कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से कक्षा-कक्षा तक पहुँचाने तथा पूरी निष्ठा, संवेदनशीलता और समर्पण के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करने का आह्वान किया।

इस दौरान विधायक तेजपाल तँवर, मोहम्मद इत्यास, मोहम्मद इसराइल, जिला परिषद् के चैयरमैन जान मोहम्मद, वक्फ बोर्ड के प्रशासक जाफिर हुसैन, ओएसडी राज नेहरू सहित अन्य गणमान्य मौजूद थे।

-शिक्षा सारथी डेस्क

नई शिक्षा नीति भारत को विश्व गुरु बनाने का दस्तावेज : शिक्षा मंत्री महीपाल दांडा



इस दौरान शिक्षा मंत्री श्री महीपाल दांडा ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने मेवात क्षेत्र को बड़ी सौगात दी है। उन्होंने नव नियुक्त पीआरटी को बधाई देते हुए कहा कि आज ये धरती नए संकरूपों की ऊर्जा को आलोकित कर रही है। उन्होंने कहा कि प्राइमरी शिक्षा किसी भी बच्चे की नींव होती है। अगर नींव मजबूत होगी तो भविष्य भी मजबूत होगा। उन्होंने शिक्षकों से कहा कि आप सभी बच्चों की मजबूत नींव गढ़ने वाले आदरणीय गुरुजन हैं। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति भारत को विश्व गुरु बनाने का दस्तावेज है। उन्होंने कहा कि आप सभी गुरुजन नौकरी करने नहीं, बदलाव के संवाहक बनकर आए हैं। बच्चों को शिक्षित करना नौकरी नहीं बल्कि एक पवित्र राष्ट्रीय सेवा है।





डॉ. सुधीर कुमार



हरियाणा के अटल टिकरिंग लैब्स (एटीएल) वाले विद्यालयों के 40 शिक्षकों के लिए नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्निकल टीचर्स ट्रेनिंग एंड

रिसर्च (एनआईटीटीआर), सेक्टर-26, चंडीगढ़ में आयोजित पाँच दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफलतापूर्वक समापन हुआ। 17 से 21 अगस्त 2026 तक आयोजित इस प्रशिक्षण का उद्देश्य शिक्षकों को विज्ञान, प्रौद्योगिकी, नवाचार और उभरती तकनीकों के व्यावहारिक उपयोग से परिचित कराते हुए विद्यालयों में नवाचार-आधारित एवं अनुभवात्मक अधिगम को प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक दक्षताओं से सज्जित करना था।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में स्कूल शिक्षा विभाग, हरियाणा के प्रधान सचिव विजय सिंह दहिया मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर एनआईटीटीटीआर के निदेशक भोला राम गुर्जर तथा राज्य परियोजना निदेशक (एसपीडी), हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् स्वप्निल रविंद्र पाटिल उपस्थित रहे। उद्घाटन सत्र का मंच-संचालन डॉ. प्रदीप राठौर द्वारा किया गया।

प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकों को केवल तकनीकी उपकरणों के संचालन तक सीमित न रखते हुए उन्हें यह समझने का अवसर दिया गया कि एटीएल को विद्यालय में विद्यार्थियों के रचनात्मक चिंतन, प्रयोग, समस्या-समाधान और नवाचार के सक्रिय केंद्र के रूप में किस प्रकार विकसित किया जा सकता है। प्रशिक्षण में रोबोटिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, कोडिंग एवं कंप्यूटेशनल थिंकिंग, खगोल विज्ञान, उभरती प्रौद्योगिकियों तथा नवाचार आधारित अधिगम से जुड़े व्यावहारिक सत्र आयोजित किए गए।

प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकों ने रोबोटिक्स एवं प्रोटोटाइप निर्माण, कोडिंग की बुनियादी अवधारणाओं, कंप्यूटेशनल थिंकिंग के माध्यम से समस्याओं को छोटे और समाधान योग्य चरणों में बाँटने, एआई के

अटल टिकरिंग लैब्स के शिक्षकों का पाँच दिवसीय प्रशिक्षण

शैक्षणिक उपयोग तथा विद्यार्थियों को परियोजना-आधारित गतिविधियों से जोड़ने की प्रक्रियाओं को व्यावहारिक रूप से समझा। इससे शिक्षक विद्यार्थियों को केवल तैयार समाधान बताने के बजाय उन्हें स्वयं समस्या पहचानने, विचार विकसित करने, प्रयोग करने, त्रुटियों से सीखने और समाधान का मॉडल या प्रोटोटाइप तैयार करने के लिए मार्गदर्शन दे सकेंगे।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और उभरती प्रौद्योगिकियों से संबंधित सत्रों के माध्यम से शिक्षकों को नई तकनीकों की कार्यप्रणाली, उनके संभावित शैक्षणिक उपयोग और विद्यार्थियों को भविष्य की तकनीकी दुनिया के लिए तैयार करने की दृष्टि से आवश्यक समझ प्रदान की गई। वहीं, खगोल विज्ञान से जुड़े सत्रों ने विद्यार्थियों में वैज्ञानिक जिज्ञासा और अवलोकन की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए गतिविधि-आधारित अधिगम की संभावनाओं से परिचित कराया।

प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह रहा कि शिक्षकों को विद्यार्थियों के विचारों को परियोजना में बदलने की प्रक्रिया को समझने का अवसर मिला। किसी समस्या की पहचान, विचार-विमर्श, समाधान की रूपरेखा, प्रोटोटाइप तैयार करना, उसका परीक्षण करना और आवश्यक सुधार करना—इस पूरी प्रक्रिया को विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के साथ अपनाने की संभावनाओं पर कार्य किया गया। प्रशिक्षणार्थियों को यह भी समझाया गया कि एटीएल की सफलता केवल अत्याधुनिक उपकरणों की उपलब्धता से नहीं, बल्कि उनके सार्थक शैक्षणिक उपयोग और विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी से सुनिश्चित होती है। शिक्षक की भूमिका एक प्रशिक्षक से आगे बढ़कर मार्गदर्शक और मेंटर की हो जाती है, जो विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने, नए विचार सोचने, प्रयोग करने और अपने समाधान विकसित करने के लिए प्रेरित करता है।

उद्घाटन अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए प्रधान सचिव, स्कूल शिक्षा, हरियाणा, श्री विजय

सिंह दहिया ने तकनीक और नवाचार के तेज़ी से बदलते दौर में शिक्षकों को नई आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करने के महत्त्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि अटल टिकरिंग लैब्स केवल उपकरणों और आधारभूत सुविधाओं तक सीमित न रहें, बल्कि विद्यार्थियों की रचनात्मकता, प्रयोग, समस्या-समाधान और नवाचार के सक्रिय केंद्र के रूप में विकसित हों।

इस अवसर पर एनआईटीटीटीआर के निदेशक भोला राम गुर्जर ने भी प्रशिक्षणार्थियों का स्वागत करते हुए तकनीकी शिक्षा में व्यावहारिक एवं अनुभवात्मक अधिगम के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने शिक्षकों को विद्यार्थियों में खोज, प्रयोग और वास्तविक जीवन की समस्याओं के समाधान के प्रति जिज्ञासा विकसित करने के लिए प्रेरित किया।

पाँच दिवसीय प्रशिक्षण के बाद शिक्षक अपने-अपने विद्यालयों में एटीएल गतिविधियों को अधिक योजनाबद्ध एवं विद्यार्थी-केन्द्रित ढंग से संचालित करने, नवाचार एवं परियोजना-आधारित अधिगम को बढ़ावा देने तथा विद्यार्थियों को रोबोटिक्स, कोडिंग, एआई और अन्य उभरती तकनीकों से परिचित कराने में अधिक सक्षम होंगे। प्रशिक्षण से प्राप्त अनुभवों का उपयोग विद्यालय स्तर पर टिकरिंग गतिविधियों, नवाचार परियोजनाओं, प्रोटोटाइप निर्माण और समस्या-समाधान आधारित अधिगम को बढ़ावा देने में किया जा सकेगा।

इस प्रकार यह प्रशिक्षण केवल शिक्षकों की तकनीकी क्षमता बढ़ाने तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसका व्यापक उद्देश्य विद्यालयों में ऐसी नवाचार संस्कृति विकसित करना रहा, जिसमें विद्यार्थी जिज्ञासा के साथ प्रश्न पूछें, स्वयं प्रयोग करें, असफलताओं से सीखें और अपने विचारों को उपयोगी समाधानों में बदलने का प्रयास करें।

एसोसिएट कंसल्टेंट
हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद्, पंचकूला



साहस, प्रकृति और संस्कृति की अविस्मरणीय यात्रा

राजकीय पीएम श्री स्कूलों के विद्यार्थियों का केरल में शैक्षणिक भ्रमण

डॉ. रेखा रानी



हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा राष्ट्रीय साहसिक एवं तटीय प्रकृति अध्ययन शिविर का आयोजन केरल राज्य के जिला अलपुड़ा

के चेरथल्ला में 24 से 28 दिसंबर 2025 तक किया गया। इस शिविर में हरियाणा के सभी 250 पीएम श्री स्कूलों के कुल 265 प्रतिभागियों ने भाग लिया। यह पाँच दिवसीय शैक्षणिक-अभियान न केवल विद्यार्थियों के लिए रोमांचक रहा, बल्कि उनके समग्र शैक्षिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के लिए भी अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुआ।

इस शिविर की रूपरेखा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद, हरियाणा में कार्यरत एसोसिएट कंसल्टेंट डॉ. धीरज द्वारा तैयार की गई। प्रकृति एवं तटीय अध्ययन शिविर में ओवरऑल को-ऑर्डिनेटर की भूमिका डॉ. रामकुमार ने निभाई। नेशनल हेडक्वार्टर, भारत स्काउट एंड गाइड में असिस्टेंट डायरेक्टर के रूप में कार्यरत श्री राजेंद्र ठाकुर ने लीडर ऑफ कोर्स की भूमिका निभाई। प्रशिक्षण के दौरान उन्होंने प्रतिभागियों को एडवेंचर कोर्स से संबंधित प्रशिक्षण दिया।

यात्रा की शुरुआत 21 दिसंबर, 2025 की रात नई दिल्ली तथा निजामुद्दीन स्टेशन पर दो समूहों के एकत्र होने से हुई। यहाँ सभी सदस्यों का एक-दूसरे से परिचय हुआ। इसके बाद केरल एक्सप्रेस एवं मंगला लक्ष्मीप रेलगाड़ियों से रेलयात्रा आरंभ हुई। रेलमार्ग के दौरान

विद्यार्थियों ने विभिन्न स्थानों और स्टेशनों के बारे में जाना तथा स्थानीय संस्कृति, जलवायु और वनस्पति का अनुभव किया।

जैसे-जैसे यात्रा आगे बढ़ती गई, मथुरा, आगरा, ग्वालियर जैसे स्टेशन आते गए और विद्यार्थी अनुरक्षक अध्यापक-अध्यापिकाओं से उन स्थानों पर मौजूद स्मारकों तथा ऐतिहासिक तथ्यों पर चर्चा करते रहे। मडगाँव व गोवा के पास आते-आते रेलगाड़ी से नारियल के पेड़ दिखाई देने लगे और फिर केरल में प्रवेश के समय कई पुलों तथा समुद्री हिस्सों से होते हुए रेलगाड़ी गुजरी। यह पूरी यात्रा विद्यार्थियों के लिए अविस्मरणीय अनुभव बन गई। यह रेलवे ट्रैक विश्व के सबसे खूबसूरत ट्रैक्स में से एक है, जिसका अनुभव सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों ने लिया।

24 दिसंबर, 2025 को एर्नाकुलम स्टेशन पहुँचने पर कंटीजेंट लीडर डॉ. रामकुमार के नेतृत्व में रिसोर्स पर्सन की टीम एवं अनुरक्षक अध्यापक-अध्यापिकाओं द्वारा विद्यार्थियों को पंक्तिबद्ध कर विभाग द्वारा उपलब्ध करवाई गई बसों में व्यवस्थित ढंग से बैठाया गया। बस यात्रा के दौरान क्रिसमस की तैयारियों और स्थानीय उत्सव की झलक रास्ते में ही देखकर विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ा।

शिविर स्थल सेंट फ्रॉंसिस असीसी हाई स्कूल, अर्थगल में रहने और कैम्पिंग की व्यवस्था की गई, जो समुद्र तट पर स्थित है। प्रतिभागियों के रहने की व्यवस्था सुनिश्चित करने के बाद थोड़ी देर विश्राम किया गया। इसके पश्चात सभी प्रतिभागियों का विस्तृत परिचय करवाया गया तथा अगले पाँच दिनों की गतिविधियों के





बारे में सूचित किया गया। इसके उपरान्त भारत स्काउट एंड गाइड के नियमानुसार ध्वजारोहण किया गया और प्रार्थना गीत व झंडा गीत का आयोजन हुआ।

केरल ऑर्गनाइजिंग टीम से श्रीमती लिन्नेट बेसिल, केरल जिला ऑर्गनाइजिंग कमिश्नर, और श्री जी. जी. चंद्रन, असिस्टेंट स्टेट ऑर्गनाइजिंग कमिश्नर, भारत स्काउट एंड गाइड, केरल, अपनी टीम के साथ शिविर में उपस्थित रहे। उन्होंने अपना परिचय एवं अनुभव साझा किया।

शिविर की कक्षाएँ एवं गतिविधियाँ सजीव और अनुभवात्मक रहीं। पहले दिन समुद्र किनारे बैठकर समुद्री परिस्थितिकी, जलवायु, वेशभूषा तथा आसपास के वातावरण पर कक्षा आयोजित की गई। समुद्र के किनारे बैठकर सूर्यास्त देखना और समुद्री वातावरण में कक्षा लेना विद्यार्थियों के लिए अत्यंत रोमांचकारी अनुभव साबित हुआ।

पहली शाम सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम शुरू हुआ तथा कैपफायर में कुछ चुनिंदा प्रस्तुतियाँ दी गईं। विद्यार्थियों ने हरियाणवी वेशभूषा में समूह नृत्य एवं गायन प्रस्तुत कर दिनभर की थकान को मिटा दिया।

दूसरे दिन श्री राजेंद्र ठाकुर ने सुबह-सुबह बीपी-6 एक्सरसाइज का संचालन किया। उनका माउंटैनियरिंग तथा एडवेंचर कोर्से में अनुभव प्रतिभागियों के लिए प्रेरणास्पद रहा। ट्रैकिंग कार्यक्रम के दौरान लगभग 6-7 किलोमीटर समुद्र किनारे ट्रैकिंग करवाई गई, जिसमें विद्यार्थियों ने तटीय वनस्पति, नारियल और केले के पेड़ों तथा रेत की बनावट आदि का निकट से अवलोकन किया।

ट्रैकिंग के पश्चात् सभी प्रतिभागी शिविर में लौटकर ध्वजारोहण व प्रार्थना गीत में सम्मिलित हुए। इसके साथ ही माउंटैनियरिंग से संबंधित थ्योरी क्लास भी दी गई।

अगले दिन प्रतिभागियों को समुद्र तट पर सुरक्षित स्नान की अनुमति दी गई। चेती बीच (जिला एलिपी) पर विद्यार्थियों ने पानी में प्रवेश कर मस्ती की और समुद्री लहरों का अनुभव किया। रिसोर्स पर्सन एवं अनुरक्षक शिक्षकों ने तट की सुरक्षा के नियमों के प्रति सभी को

सतर्क किया तथा जीवनरक्षक निर्देशों का पालन करवाया।

विद्यार्थियों ने नावों का अवलोकन भी किया। उन्होंने नावों की बनावट, किस प्रकार वे तैरती हैं तथा मछुआरों का व्यावहारिक जीवन कैसे चलता है, यह सब देखा। स्थानीय मछुआरों के साथ संवाद के दौरान भाषा की बाधा होने पर भी विद्यार्थियों ने भाव-भंगिमाओं और सरल संवादों के माध्यम से तालमेल स्थापित करने की क्षमता दिखाई।

शिविर में यूथ एंड इको क्लब मिशन फॉर लाइफ के अंतर्गत पेंटिंग प्रतियोगिता कराई गई, जिसका विषय पर्यावरण संरक्षण रखा गया। विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट पेंटिंग्स बनाईं। कई विद्यार्थियों ने समुद्र किनारे से एकत्र की गई वस्तुओं का उपयोग कर कोलाज कृतियाँ निर्मित कीं।

रंगोली में प्राकृतिक वस्तुओं, जैसे- रेत, कंकर, बजरी, सूखे पत्ते, सूखी घास तथा समुद्र किनारे मिले अवशेषों का उपयोग किया गया। इनसे बनाई गई रचनाएँ प्रभावशाली रहीं। इन सभी गतिविधियों ने छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता और पर्यावरण संबंधी संवेदना को उजागर किया।

प्रतिभागियों को पडिरामानल द्वीप का भ्रमण



करवाया गया। भ्रमण के दौरान प्रतिभागियों को वहाँ की वनस्पतियों और पर्यावरण का निकटतम अनुभव प्राप्त हुआ। कैप साइट से बसों द्वारा समुद्र तट तक ले जाकर 40-40 छात्रों को फेरी में बैठाकर द्वीप तक ले जाया गया।

वहाँ सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों को मंच प्रदान किया गया, जहाँ उन्होंने भी अपनी प्रस्तुतियाँ दीं। कार्यक्रम में भावनात्मक तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान तब चरम सीमा पर पहुँच गया, जब विद्यार्थियों ने अपनी स्थानीय प्रस्तुतियाँ दीं।

अंतिम दिन ग्रैंड कैप फायर का आयोजन हुआ तथा सभी बेस्ट परफॉर्मेंस को पुनः मंच पर प्रस्तुत कराया गया। शिविर के बेस्ट कैपर्स एवं बेस्ट एस्कॉर्ट टीचर्स का सम्मान किया गया, जिससे प्रतिभागियों में मान्यता और प्रोत्साहन की भावना पैदा हुई।

पूरे कार्यक्रम के दौरान सुरक्षा, अनुशासन और समुचित देखरेख का विशेष ध्यान रखा गया। रिसोर्स पर्सन और अनुरक्षक अध्यापक-अध्यापिकाएँ लगातार विद्यार्थियों के साथ रहीं और उनकी शारीरिक व मानसिक सुरक्षा सुनिश्चित की। प्राथमिक चिकित्सा व सुरक्षा संबंधी आवश्यक इंतजाम मौजूद थे और जल-गतिविधियों के दौरान सुरक्षा निर्देशों का सख्ती से पालन कराया गया।

शिविर के समापन पर आयोजित समारोह में सभी प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। अंतिम दिन के ग्रैंड कैप फायर और पुरस्कार वितरण कार्यक्रम ने आयोजन को गरिमापूर्ण समापन दिया। प्रतिभागियों ने पुरस्कार प्राप्त कर आत्मविश्वास बढ़ाया और नई ऊर्जा व उमंग के साथ वापस लौटे। वे अपने साथ जीवन भर याद रहने वाले अद्भुत दृश्य, सांस्कृतिक अनुभव तथा पाँच दिनों में मिली शिक्षाओं की अनमोल स्मृतियाँ लेकर लौटे, जिनका प्रभाव उनके शैक्षणिक एवं व्यक्तिगत विकास पर दीर्घकालिक रहेगा।

संस्कृत प्रवक्ता
रा.असंक्ता विद्यालय
नलवा, हिसार, हरियाणा





रंगों से सपनों की उड़ान



दीपा रानी

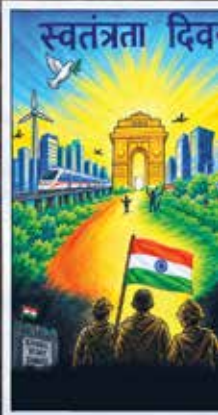
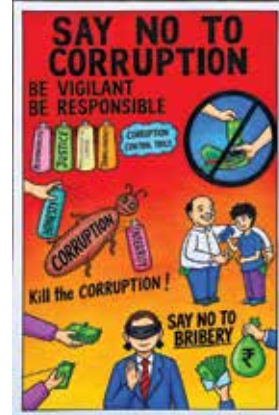


कूचियों से रंग भरना, आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचना और उन रेखाओं में अपनी कल्पनाओं के रंग घोल कर-चित्रकारी करना हर बच्चे

की पहली पसंद होती है। रंगों और रेखाओं के माध्यम से मन में बसे सपनों, भावनाओं और कल्पनाओं को कागज पर उतारना बच्चों को एक अनोखा आनंद देता है। उनके लिए चित्रकारी केवल कागज पर रंग भरना नहीं, बल्कि अपने मन की दुनिया को अभिव्यक्त करने का सहज और सुंदर माध्यम है।

इस डिजिटल कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दौर में, जब पढ़ाई, प्रतियोगिता और अपेक्षाओं का बढ़ता दबाव बच्चों के कोमल मन पर तनाव का बोझ डाल रहा है, तो ऐसे में कला उन्हें सुकून की एक खुली खिड़की प्रदान करती है। रंगों के साथ खेलते हुए बच्चा कुछ क्षणों के लिए बाहरी दबावों से मुक्त होकर अपनी ही कल्पना की दुनिया में विचरण करता है। यही तल्लीनता उसके मन को शांति

देती है और भीतर छिपी रचनात्मक ऊर्जा को अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करती है। वास्तव में, जब कला को पूरी एकाग्रता, लगन और तल्लीनता के साथ साधा जाता



है, तो वह किसी योग और ध्यान से कम नहीं होती। रंगों में डूबा हुआ बालमन न केवल एक सुंदर चित्र रचता है, बल्कि अनजाने में अपने भीतर भी शांति, आत्मविश्वास और आनंद के रंग भरता चलता है।

प्रतिभावान विनीता का जन्म 8 दिसंबर, 2009 को पंचकूला में हुआ। विनीता के माता-पिता मेहनतकश मजदूर हैं। परिवार का पालन-पोषण करने के लिए उन्हें सन् 2004 में बिहार के पटना जिले से पंचकूला पलायन करना पड़ा। विनीता बचपन से ही बहुत होनहार और परिश्रमी विद्यार्थी रही है। उसने कक्षा पहली से आठवीं तक की पढ़ाई राजकीय माध्यमिक विद्यालय, अभयपुर, पंचकूला से की। कक्षा नौवीं में उसने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सेक्टर-19 में प्रवेश लिया। चित्रकारी और पेंटिंग का शौक उसे बचपन से ही था। कक्षा आठवीं तक चित्रकला और रंगोली में उसने अनेक पुरस्कार जीते और सफलता की पताका लहराई।

विनीता को स्केचिंग और कैलीग्राफी करना बहुत अच्छा लगता है। उसने कई महापुरुषों, अपने मित्रों और

मेरा नाम विनीता है। मैं राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सेक्टर-19 में कक्षा 10वीं की छात्रा हूँ। मुझे ड्राइंग का शौक बचपन से ही था, परंतु कब यह मेरा जुनून बन गया, मुझे पता ही नहीं चला। अपनी पेंटिंग्स और पोस्टर के जरिए मैं समाज में फैली कुश्रितियों को दूर करने का प्रयास करना चाहती हूँ।

मैंने अपने विद्यालय में बहुत कुछ सीखा। मैं अपने सभी अध्यापकों और प्रधानाचार्या मैम का धन्यवाद करना चाहती हूँ, जिन्होंने मेरे अंदर यह विश्वास जगाया कि मैं अपनी बात रख सकूँ। बड़ी होकर मैं एक सफल चित्रकार बनना चाहती हूँ, ताकि मेरे माता-पिता, भाई-बहन और गुरुजन को मुझ पर गर्व हो।

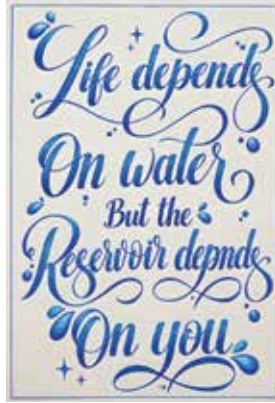
मैं कक्षा दसवीं की बोर्ड परीक्षाओं के लिए भी बहुत मेहनत कर रही हूँ, ताकि मैं अच्छे अंक लेकर अपने विद्यालय का नाम रोशन कर सकूँ।

विनीता

कक्षा 10वीं

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सेक्टर-19, पंचकूला





परिवार के सदस्यों के स्केच बनाए और उपहार स्वरूप उन्हें भेंट दिए। विनीता को लोककलाएँ भी बहुत आकर्षित करती हैं। उसने मधुबनी, वली और गोद आर्ट पर बहुत सारी पेंटिंग्स बनाईं।

गत वर्ष शिक्षा विभाग, हरियाणा द्वारा भारत की लोक कलाओं पर आधारित एक कला प्रतियोगिता करवाई गई, जिसमें विनीता ने वली आर्ट विधा में जिला स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके साथ ही राज्य स्तर पर भी प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया। पोस्टर मेकिंग और रंगोली प्रतियोगिता में भी वह खंड स्तर और जिला स्तर पर कई बार विजेता रही है।

उसने सामाजिक मुद्दों जैसे पर्यावरण, ऊर्जा संरक्षण, जल संरक्षण, नशा मुक्ति, लखपति दीदी, करप्शन और स्वतंत्रता दिवस आदि विषयों पर बहुत से पोस्टर बनाए हैं। उसकी रंग योजना किसी भी पोस्टर में जान भर देती है। वह चित्रकारी की हर विधा में पारंगत है। चाहे वह पोस्टर रंग हो, जल रंग हो, ऑयल पेस्टल हो या एक्रेलिक कलर इत्यादि। पेंसिल स्केचिंग के अतिरिक्त, उसे जल रंग चित्रकारी का विशेष शौक है। प्रकृति के सुंदर दृश्य उसे अत्यधिक आकर्षित करते हैं।

विनीता ने लीगल लिटरेसी स्लोगन राइटिंग प्रतियोगिता में जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया। नशा मुक्त भारत, विकसित भारत प्रतियोगिता में स्लोगन राइटिंग में जिले में प्रथम स्थान, रंगोली प्रतियोगिता में जिले में तृतीय स्थान, जिला स्तरीय गीता जयंती पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान, विश्व एड्स दिवस पर आयोजित रंगोली प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त कर विद्यालय का नाम गर्व से ऊँचा किया है।

कला के साथ-साथ उसकी बाकी विषयों पर भी बहुत अच्छी पकड़ है। सभी विषयों में वह अव्वल आती है। विनीता की विज्ञान प्राध्यापिका पूजा ढींगड़ा ने बताया कि विनीता एक बहुत ही होनहार और परिश्रमी विद्यार्थी है। वह कक्षा में सदैव अग्रणी रहती है और किसी भी काम को सीखने की उसकी जिज्ञासा सच में हैरान कर देती है। कक्षा-कक्षा में उसका ध्यान कभी विचलित नहीं होता।

कक्षा के बाकी विद्यार्थियों के लिए वह एक उदाहरण है। विनीता जैसे विद्यार्थी स्कूल के लिए ही नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के लिए एक सुनहरा भविष्य हैं। विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों में उसके द्वारा बनाई हुई रंगोली एवं पेंटिंग्स सभी को मंत्रमुग्ध कर देती हैं।

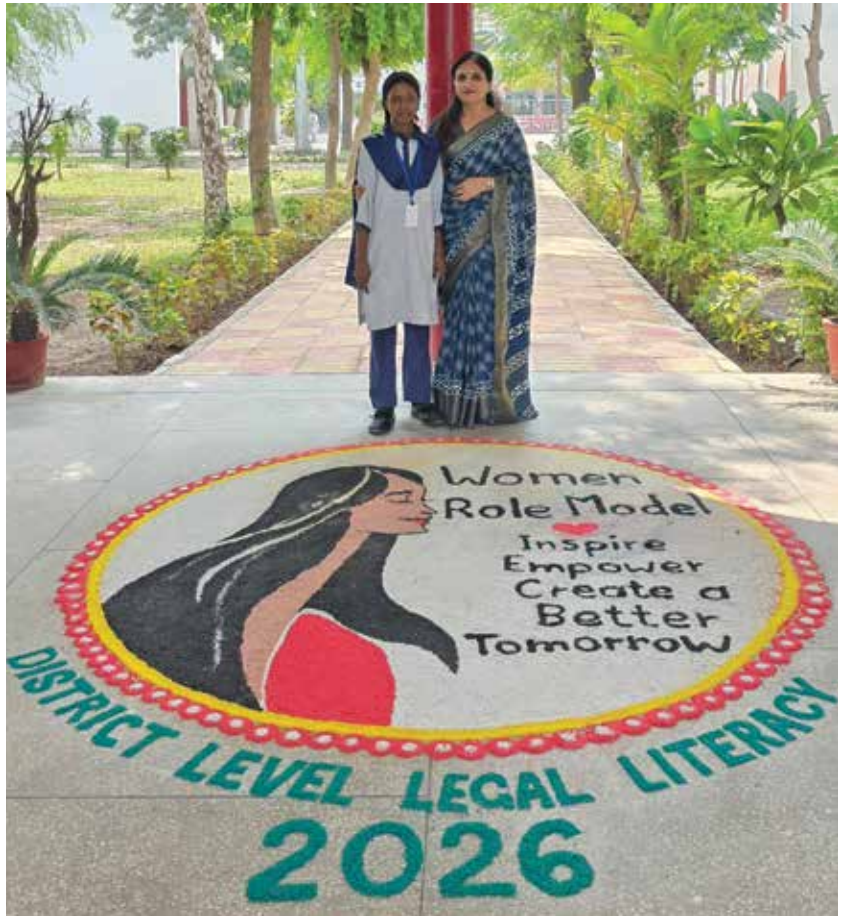
विद्यालय की प्रधानाचार्या निर्मल दुल ने बताया कि विनीता बहुत ही कुशाग्र बुद्धि की छात्रा है। कोई भी कार्य

सीखने में उसे क्षण भर का समय ही लगता है। विनीता ने प्रत्येक कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है और दसवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षाओं के लिए भी वह कड़ी मेहनत कर रही है। उन्हें पूरी उम्मीद है कि वह जिला स्तर पर ही नहीं, बल्कि राज्य स्तर पर भी प्रथम तीन स्थानों में खुद का नाम अंकित करके विद्यालय का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखेगी। इसकी चित्रकला के प्रति रुचि, समर्पण, निरंतर अभ्यास व अनुशासन का ही परिणाम है कि ये आज बाल कलाकार के रूप में अपनी एक विशिष्ट पहचान बना चुकी हैं।

विनीता के माता-पिता मजदूर हैं, किंतु उसकी मेहनत और लगन ने उसे कभी अपने सपनों के साथ समझौता नहीं करने दिया। विनीता जैसे विद्यार्थी न केवल विद्यालय का गौरव बढ़ाते हैं, बल्कि वे समाज के लिए भी प्रेरणास्रोत बनते हैं। उसकी शिक्षिका होने के नाते, मैं उस पर गर्व अनुभव करती हूँ। विनीता जैसे प्रतिभावान विद्यार्थी इस बात का उदाहरण हैं कि दृढ़ संकल्प और सही मार्गदर्शन से हर लक्ष्य हासिल किया जा सकता है।

पीजीटी ललित कला

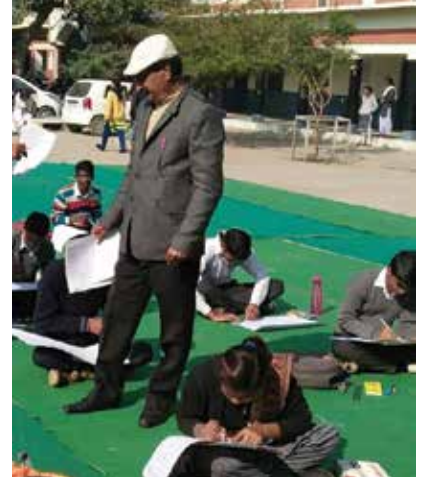
रावमा विद्यालय, सेक्टर-19, पंचकूला





बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी शिक्षक गुलशन कुमार

पेंटिंग, स्काउटिंग एवं मंच संचालन में भी पारंगत



डॉ. भूप सिंह



ऐतिहासिक परिदृश्य के झरोखे से देखें तो अनेक व्यक्तित्व ऐसे मिल जाएंगे, जिनका जीवन केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों तक सीमित नहीं है, बल्कि वे समाज के निर्माण, संवर्धन एवं विकास की प्रेरणादायक कहानी बन जाते हैं। कुछ ऐसे व्यक्तित्व भी होते हैं, जो कुछ ऐसा करना चाहते हैं, जिसका फायदा पूरे समाज को हो। कुछ हटकर करने का जुनून रखने वाले व्यक्ति पूरे समाज को अपना मानकर चलते हैं। उनका जीवन अनेक प्रकार के फूलों से सुसज्जित गुलदस्ते के समान होता है, जिसमें ज्ञान, सेवा, संस्कार और नेतृत्व के अनेक गुण स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। ऐसे व्यक्ति, जो बहुमुखी, बहुरंगी, बहुआयामी प्रतिभा के धनी होते हैं, अनेक क्षेत्रों में बेहतरीन कार्य करके दूसरों के लिए प्रेरणास्रोत और प्रेरणापुंज बन जाते हैं। ऐसे ही एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं श्री गुलशन कुमार, कला अध्यापक।

एक ऐसे शरत्स, जिन्होंने एक साथ शिक्षा, स्काउटिंग, एडवेंचर व कला के क्षेत्र में अपनी अहम भूमिका अदा की है। आपका समग्र जीवन समाज के लिए प्रेरणापुंज व प्रेरणा स्रोत बना। श्री गुलशन कुमार का जन्म 4 अप्रैल, 1958 को रोहतक जिले में हुआ। आप बचपन से ही कला-प्रेमी रहे हैं। आपकी प्रारंभिक शिक्षा राजकीय माध्यमिक विद्यालय, जींद जंक्शन से शुरू हुई। बचपन से ही आप विलक्षण प्रतिभा के धनी रहे हैं। अपनी रुचि के अंतर्गत छठी कक्षा से ही प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों को कागज



पर उतारना शुरू कर दिया। आपका कला के प्रति विशेष लगाव रहा है। रंगों का चित्र बनाने की इसी ललक के फलस्वरूप आपने वर्ष 1974 में राजकीय कला स्कूल, रोहतक में दाखिला ले लिया। यहाँ से आपने आर्ट एंड क्राफ्ट टीचर ट्रेनिंग की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

प्रशिक्षण के दौरान आपने कला में निखार लाने के लिए भरपूर प्रयास किया। विद्यार्थी जीवन में अंतर्मन की सुखद अनुभूतियों की अभिव्यक्ति हेतु कला का सहारा लेकर उसे ही सेवा-भाव से जीवन में अपनाकर अपनी आजीविका का साधन बनाया। श्री गुलशन कुमार ने वर्ष 1977 में शिक्षा विभाग में जिला करनल के राजकीय माध्यमिक विद्यालय ददलाना में कला अध्यापक के पद पर कार्य ग्रहण किया। उसके बाद जिला जींद के काब्रछा, मोहनगढ़, बुडायन, रूपगढ़, जींद, जामनी, जींद जंक्शन, मालवी पोली, ब्राह्मणवास, कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, जींद व जुलाना आदि कार्यस्थलों पर आपने अपनी सेवाएँ



प्रदान कीं। अब आपके सामने लक्ष्य अपनी योग्यता और क्षमताओं को अपने विद्यार्थियों के अंदर उतारना था। आपने अपने बाल्यकाल से ही कला के प्रति रुचि, लगाव व निष्ठा के बल पर अपने छात्रों का मार्गदर्शन किया। आपने बच्चों के सर्वांगीण विकास में विश्वास रखते हुए उनकी प्रतिभा निखारने में भरसक प्रयास किया और उन्हें अपनी संस्कृति से परिचित होने का अवसर दिया। आपके छात्रों ने सफलता के नए आयाम स्थापित किए। उन्होंने खंड एवं जिला स्तर पर अनेक उपलब्धियों अपने नाम कीं।

क्ले मॉडलिंग, पेंटिंग, पेपर कटिंग, संगीत आदि क्षेत्रों में आपकी विशेष रुचि और दक्षता रही, जिसके कारण स्कूल ही नहीं, बल्कि कॉलेज स्तर पर भी आयोजित प्रतियोगिताओं में निर्णायक के रूप में आपको विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। शिक्षा गतिविधियों में अपना योगदान देने के लिए आप 1986 में सेवा-भावना तथा कर्तव्यनिष्ठ नागरिकों का निर्माण करने वाली संस्था



भारत स्काउट एवं गाइड्स का हिस्सा बन गए। इस संस्था की मूल संवेदना को अपनते हुए आपने बेसिक हिमालय युड बैज, असिस्टेंट लीडर ट्रेनर तथा लीडर ट्रेनर (स्काउट) का प्रशिक्षण सफलतापूर्वक प्राप्त किया। आपकी कर्तव्यपरायणता और मेहनत के कारण शीघ्र ही आपकी गिनती कुशल, पारंगत एवं अग्रिम पंक्ति के प्रशिक्षकों में होने लगी।

गुलशन कुमार जी ने अपने शिक्षक दायित्व को निष्ठा से निभाते हुए जिला संगठन आयुक्त (स्काउट), जींद के पद पर लगभग 10 वर्षों तक कार्य किया। इन्होंने बच्चों को सदा यही सिखाया कि स्काउटिंग सेवा के लिए होती है, पूरी दुनिया के लोगों को जोड़ने का कार्य करती है तथा प्रकृति एवं जीव-जंतुओं के संरक्षण में अपना अभिन्न योगदान देती है। शिक्षक के रूप में आप दोहरा दायित्व निभा रहे थे—एक तरफ आप कक्षा-कक्ष में बच्चों को रंगों के साथ उड़ान भरना सिखा रहे थे, तो वहीं दूसरी तरफ स्काउटिंग के माध्यम से बच्चों के अंदर अच्छे नागरिक बनने के गुणों को विकसित कर रहे थे। स्काउटिंग के क्षेत्र में आपका योगदान सराहनीय रहा। आपके नेतृत्व में जिला जींद ने जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशेष पहचान बनाई। आपके कुशल नेतृत्व में जिला जींद के अनेक स्काउट्स को राष्ट्रपति एवं राज्य पुरस्कार प्राप्त करने का अवसर मिला।

स्काउटिंग के माध्यम से आपने बच्चों को रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड आदि स्थानों पर गर्मियों में जल सेवा करने के लिए प्रेरित किया और कई वर्षों तक जल सेवा शिविरों का आयोजन किया। पर्यावरण को बचाने के लिए वृक्षारोपण को बढ़ावा दिया। समाज में फैली विभिन्न कुश्रितियों के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए आपने अनेक बार रैलियों का आयोजन किया। जब भी जिला प्रशासन द्वारा खेलकूद या अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता, तो उनमें आप और आपके स्काउट्स का सेवा-भाव देखने योग्य होता था।

आपने वर्ष 1989-90 में प्रथम बार राष्ट्रीय स्काउट जंबूरी, भोपाल में जिला जींद स्काउट दल का नेतृत्व किया। उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए जिला जींद को शील्ट से सम्मानित किया गया। वर्ष 1990 से लेकर आज तक लगभग प्रत्येक राष्ट्रीय स्काउट जंबूरी में आप सक्रिय रूप से भाग लेते रहे हैं। राष्ट्रीय मुख्यालय, नई दिल्ली

द्वारा आयोजित राष्ट्रीय जंबूरी-मैसूर, पाली, त्रिचापल्ली, लखनऊ, बालोद (छत्तीसगढ़) आदि में आपको सब-कैंप चीफ की ड्यूटी सौंपी गई, जिसे आपने पूर्ण उत्साह और कुशलता के साथ निभाया।

आपकी कार्यकुशलता एवं उपलब्धियों को देखते हुए जिला स्तर पर अनेक बार जिला प्रशासन, जिला शिक्षा अधिकारी एवं हरियाणा सरकार के मंत्रियों द्वारा आपको सम्मानित किया गया। स्काउटिंग में आपकी उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए आपको मेडल ऑफ मेरिट, लॉन्ग सर्विस डेकोरेशन अवार्ड, बार टू मेडल ऑफ मेरिट तथा उच्च प्रशिक्षण लीडर ट्रेनर अवार्ड से राज्यपाल हरियाणा द्वारा सम्मानित किया गया। पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी जींद एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, गुरुग्राम से सेवानिवृत्त निदेशक स्नेहलता अहलावत ने बताया कि गुलशन कुमार बहुरंगी, बहुआयामी प्रतिभा के धनी हैं। उन्होंने अपने दायित्व को पूर्ण निष्ठा, लगन व ईमानदारी के साथ निभाया और स्काउटिंग के क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन लाए।

राज्य प्रशिक्षण आयुक्त (स्काउट) श्री लक्ष्मी सिंह वर्मा ने बताया कि आपके नेतृत्व में जिला जींद को स्काउटिंग के क्षेत्र में नई पहचान मिली। शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित एडवेंचर कैम्पों के सफल आयोजन में भी आपकी अहम भूमिका रही। आपके मार्गदर्शन में सैकड़ों बच्चों को एडवेंचर कैम्प में जाने का अवसर मिला। पूर्व कंसल्टेंट एडवेंचर कार्यक्रम एवं प्राचार्य डॉ. रामकुमार ने बताया कि गुलशन कुमार कर्मठ कार्यकर्ता हैं और उनकी भूमिका सराहनीय रही है।

आपको 2003 में राज्य शिक्षक पुरस्कार से और 2007 में राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आप अप्रैल 2018 में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, जुलाना (जींद) से सेवानिवृत्त हुए। आज भी आप स्काउटिंग गतिविधियों से जुड़े हुए हैं। जनवरी 2026 में प्रथम रोवर रेंजर जंबूरी, बालोद (छत्तीसगढ़) में सब-कैंप चीफ के रूप में आपने अपनी सेवाएँ दीं। मैं आशा करता हूँ कि आपकी जीवन यात्रा समाज को सदा प्रेरणा देती रहेगी।

**एलटी (स्काउट) एवं प्राचार्य
पीएमश्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
पीपलथा (हरियाणा)**



मुख्यमंत्री ने किया छायाचित्र-प्रदर्शनी का उद्घाटन



हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, पंचकूला की ओर से पण्डित लख्मीचन्द की जयन्ती के अवसर पर बीते दिनों दादा लख्मीचन्द राज्य प्रदर्शन एवं दृश्य कला विश्वविद्यालय, रोहतक में आयोजित साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान प्रसिद्ध साहित्यकार, चित्रकार व छायाकार डॉ. ओमप्रकाश कादयान द्वारा खींचे छायाचित्रों की प्रदर्शनी का उद्घाटन हरियाणा के मुख्यमन्त्री नयब सिंह सैनी ने किया। इस अवसर पर प्रदेश के सहकारिता मन्त्री डॉ. अरविन्द शर्मा, पूर्व मन्त्री मनीष गोवर, हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के कार्यकारी उपाध्यक्ष प्रो. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री आदि मौजूद थे।

मुख्यमन्त्री ने डॉ. ओमप्रकाश कादयान को बधाई दी तथा कहा कि ये चित्र हरियाणवी कला-संस्कृति, सांस्कृतिक सम्पदा, जन-जीवन व मेहनती स्त्री-पुरुषों की सजीव झोंकी हैं।

मुख्यमन्त्री ने कहा कि किसी भी समाज की पहचान उसकी ऊँची इमारतों या आर्थिक प्रगति से नहीं, बल्कि उसकी भाषा, साहित्य, संस्कृति व कलाकारों से होती है। उन्होंने कहा कि कलाकारों की कला मनोरंजन करने के साथ-साथ संस्कृति को पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीवित रखती है। मुख्यमन्त्री ने कलाकारों को समाज का मार्गदर्शक बताया।

इस अवसर पर प्रो. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री तथा मनजीत सिंह ने डॉ. कादयान के चित्रों की सराहना करते हुए कहा कि छायाचित्र हरियाणवी समाज का आईना हैं। हिन्दी व हरियाणवी प्रकोष्ठ के निदेशक डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी ने कहा कि छायाकार ने हरियाणा की होलियों, चौपालों, तालाबों, कुओं, छतरियों, भित्तिचित्रों, काम करती महिलाओं, किसानों, बचपन में खोए बच्चों, कलात्मक किवाड़ों, पनघट, मनोरंजन व कला के साधनों, तीज-त्योहारों, पर्वों, मेलों, पशु-पक्षियों, बावड़ियों, प्रकृति के चित्र प्रदर्शित किए हैं, जो समृद्ध हरियाणवी संस्कृति को उजागर करते हैं।

-शिक्षा सारथी डेस्क



बाल सारथी

‘बाल सारथी’ आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

‘बाल सारथी’ आपको कैसा लगा, जरूर लिखना, अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- तुम्हारी यामिका दीदी

महाभारत में रिश्ते बूझें-

1. भीष्म थे गंगा के
 2. द्रुपद थे अर्जुन के
 3. पाण्डु थे कृष्ण के
 4. कुंती थीं कृष्ण की
 5. शल्य थे पांडवों के
 6. भीम थे बर्बरिक के
 7. नकुल थे सुभद्रा के
 8. द्रौपदी थीं द्रुपद की
 9. कुंती थीं द्रौपदी की
 10. बलराम थे कृष्ण के
 11. पाण्डु थे दुर्योधन के
 12. माद्री थीं सहदेव की
 13. उत्तरा थीं अर्जुन की
 14. सुभद्रा थीं कृष्ण की
 15. गांधारी थीं कुंती की
 16. कुंती थीं गांधारी की
 17. अर्जुन थे रोहिणी के
 18. कुंती थीं दुर्योधन की
 19. धृतराष्ट्र थे पांडवों के
 20. कृष्ण थे रुक्मिणी के
 21. गांधारी थीं पाण्डु की
 22. परीक्षित थे अर्जुन के
 23. युधिष्ठिर थे सुभद्रा के
 24. हिडिम्बा थीं भीम की
 25. अभिमन्यु थे कृष्ण के
- उत्तर- 1. पुत्र, 2. ससुर, 3. फूफा, 4. बुआ, 5. मामा
6. पिता, 7. ममेरे भाई, 8. पुत्री, 9. सास, 10. बड़े भाई, 11. चाचा, 12. माता, 13. पुत्रवधू, 14. बहन, 15. जेठानी, 16. देवराणी, 17. भांजे, 18. चाची, 19. ताऊ, 20. पति, 21. भाभी, 22. पौत्र, 23. जेठ 24. पत्नी, 25. भांजे

पहेली-निर्माता :

प्रशान्त अग्रवाल

प्राथमिक विद्यालय डहिया

फतेहगंज पश्चिमी, जिला-बरेली, उत्तरप्रदेश



मैं भी पढ़ने जाऊँगा

मम्मी-मम्मी मुझे नहलाओ।
नई वर्दी मुझे पहनाओ।

सुंदर-सा बस्ता लाऊँगा।
मैं भी पढ़ने जाऊँगा।

गुरुजनों को शीश नवाऊँ।
शिक्षा की अलख जगाऊँ।

मम्मी मुझको पढ़ना है।
पढ़कर आगे बढ़ना है।

रोज स्कूल जो जाता है।
अच्छा बच्चा कहलाता है।

बलबीर सिंह वर्मा ‘वागीश’

रा. प्रा. पाठशाला,

मोहम्मदपुरिया

खण्ड - रानियाँ (सिरसा)

पहेलियाँ

1. तीन अक्षर का नाम है मेरा,
बोलो मेरे भाई।
लोग बैठते मुझ पर बच्चो!
कहते लोग -----।
 2. तीन अक्षर का नाम है मेरा,
बोलो मेरे भाई।
सर्दी से मैं सदा बचाती,
कहते लोग -----।
 3. एक वर्ष का एक महीना,
बोलो मेरे भाई।
प्रेमचंद का दिवस मनाते,
कहते लोग -----।
 4. सदा दूध से बनती हूँ मैं,
बोलो मेरे भाई।
तीन अक्षर का नाम है मेरा,
कहते लोग -----।
 5. किससे बनते टोपा, मफलर,
बोलो मेरे भाई।
मम्मी बुनतीं इसको लेकर,
कहते लोग -----।
 6. मीठा-मीठा स्वाद हमारा,
बोलो मेरे भाई।
त्योहारों में सब मिल खाते,
कहते लोग -----।
 7. कौन बनाता हलवा-पूड़ी,
बोलो मेरे भाई।
और बनाते रबड़ी, चमचम,
कहते हैं -----।
 8. तीन अक्षर का नाम है मेरा,
बोलो मेरे भाई।
हैं करते रक्षा जन-जन की,
कहते लोग -----।
 9. चार पैर हैं इसके बच्चो!
बोलो मेरे भाई।
देख मुझे विश्राम करो तुम,
कहते हैं -----।
 10. तीन अक्षर का नाम है इसका,
बोलो मेरे भाई।
सदा जर्म को दूर भगाऊँ,
कहते लोग -----।
 11. सदा रोग को दूर भगाऊँ,
बोलो मेरे भाई।
डॉक्टर हाथों पाते इसको,
कहते लोग -----।
 12. तीन अक्षर का नाम हमारा,
बोलो मेरे भाई।
सुई-धागों का साथ मेरा,
कहते लोग -----।
 13. निटिंग-निटिंग अंग्रेजी में कहते,
बोलो मेरे भाई।
स्वेटर, टोपा, मोजा बनते,
कहते लोग -----।
 14. खड़ा-खड़ा स्वाद है मेरा,
बोलो मेरे भाई।
आम्र, इमली से मैं बन जाती,
कहते लोग -----।
 15. गोद में किसकी खेले-कूदे,
मेरे किछन कन्हाई।
मारवन-मिश्री जमकर खाते,
बोलो मेरे भाई।
 16. सदा रोशनी से बनती हूँ,
बोलो मेरे भाई।
काला-काला रंग है मेरा,
कहे सभी -----।
 17. लेंगड़ा, चौसा, रहे दशहरी,
बोलो मेरे भाई।
भिन्न-भिन्न के आम जहाँ,
कहे लोग -----।
- उत्तर- 1. चटाई, 2. रजाई, 3. जुलाई,
4. मलाई, 5. सलाई, 6. मिठाई,
7. हलवाई, 8. सिपाही, 9.
चारपाई, 10. सफ़ाई, 11. दवाई,
12. सिलाई, 13. बुनाई, 14.
खटाई, 15. यशोधा, 16. पराछाई,
17. अमराई।

डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव
रावगंज, कालपी जिला-जालौन
पिन- 285204





माइक्रोवेव ओवन के आविष्कार की कहानी

एक ठंडी सुबह थी। बर्फीली हवा बोस्टन शहर की गलियों में डेरा जमाए हुए थी। रेथियॉन कंपनी की प्रयोगशाला में वैज्ञानिक पर्सी स्पेंसर एक मशीन का परीक्षण कर रहे थे। पर्सी बचपन से ही मशीनों के प्रति बहुत जिज्ञासु थे। वे दूटी रेडियो तक खोलकर देख लेते थे कि अखिर इनमें से आवाज कैसे निकलती है!

बाद में वे रेथियॉन कंपनी में इंजीनियर बने। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान वे रडार बनाने के काम में जुटे थे। रडार में एक विशेष यंत्र, मैग्नेट्रॉन, लगाया जाता था, जिससे शक्तिशाली माइक्रोवेव तरंगें निकलती थीं।

एक दिन मैग्नेट्रॉन का परीक्षण करते समय पर्सी को अपनी जेब में रखी चॉकलेट के पिघलने का पता चला। वे हैरान रह गए। इतनी ठंडी जगह में चॉकलेट कैसे पिघल गई? उनके मन में सवाल उठा-क्या मैग्नेट्रॉन की तरंगों के कारण ऐसा हुआ?

उन्होंने तुरंत कुछ पॉपकॉर्न के दाने लाकर मशीन के पास रखे। थोड़ी ही देर में दाने उछलने लगे और पॉपकॉर्न बन गए। पर्सी की जिज्ञासा और बढ़ गई। उन्होंने अंडे पर भी प्रयोग किया। गर्मी के कारण अंडा फट गया और दोनों हैंस पड़े।

अब पर्सी समझ चुके थे कि माइक्रोवेव तरंगों की सहायता से भोजन गर्म किया जा सकता है। कई प्रयोगों और महीनों की मेहनत के बाद उन्होंने दुनिया का पहला माइक्रोवेव ओवन बनाया। इसका नाम 'रेडारेंज' रखा गया।

शुरुआत में यह बहुत बड़ा और महँगा था, लेकिन धीरे-धीरे इसका आकार छोटा और उपयोग आसान होता गया। आज यह अनेक घरों में भोजन गर्म करने और पकाने के काम आता है।

कभी-कभी एक छोटी-सी घटना भी किसी बड़े आविष्कार की शुरुआत बन जाती है। पर्सी की पिघली हुई चॉकलेट इसका मजेदार उदाहरण है!



आओ, पढ़ने की बात करें

अँधियारे पर आघात करें,
आओ, पढ़ने की बात करें।

पढ़ना-लिखना बड़े काम का,
शिक्षा बहुत जरूरी है।
जो शिक्षा से वंचित हैं,
उन्हें लाना भी जरूरी है।
जो वंचित हैं मजबूरी में,
उनको प्यारी सौगात दें।
आओ, पढ़ने की बात करें।

शाला जाएँ, शिक्षा पाएँ,
अज्ञान पर सब चोट करें।
पढ़-लिखकर जीवन सँवारें,
पढ़ने का संकल्प करें।
राह कठिन है, सरल बना दें,
मेहनत हम दिन-रात करें।
आओ, पढ़ने की बात करें।

देखो प्यारी, किताब हमारी,
शिक्षा की अलख जगाती है।
भूले-भटके, दिशा-भ्रमित जो,
उनको राह दिखाती है।
निरखरे-बिरखरे जज्बातों को,
आओ, मिलकर साथ करें।

-डॉ. सत्यनारायण 'सत्य'

पता : समता भवन के पास, रायपुर, जिला- भीलवाड़ा
राजस्थान- 311 803

हिम्मत

हिम्मत से हम कर सकते हैं,
मुश्किल पथ आसान।
और बना सकते हैं अच्छी,
दुनिया में पहचान।

करना होगा हिम्मत के संग,
हर दिन हमको श्रम।
मिल जाएगा बिना किए श्रम,
कभी न पाएँ भ्रम।
सफल व्यक्तियों को ही मिलता,
है जग में सम्मान।

हिम्मत, श्रम के सदा साथ ही,
सत्य पथ अपनाएँ।
काम करें धीरज रखकर हम,

तब खुशी हम पाएँ।
मदद करें भरसक हम सबकी,
बनें नेक इंसान।

राह भले ही बहुत कठिन हो,
रुके कभी नहीं हम।
बलशाली के सम्मुख भी तो,
झुके कभी नहीं हम।
अवरोधों का करें सामना,
तभी मिलेगा मान।

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
मोहल्ला- बरगदवा (नई कॉलोनी),
निकट गीता पब्लिक स्कूल
पोस्ट- मड़वा नगर (पुरानी बस्ती)
जिला- बस्ती (उ. प्र.) 272 002





खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा



आदरणीय अध्यापक साथियो व उत्साही विद्यार्थियो! 'खेल-खेल में विज्ञान' शृंखला के अंतर्गत कुछ नई व रुचिकर विज्ञान व अन्य आवश्यक गतिविधियाँ आपके समक्ष प्रस्तुत हैं-

इस बार विद्यालय में कक्षा 10+1 जीव विज्ञान में जिन विद्यार्थियों ने दाखिला लिया, उन्हें मानसून के दौरान प्राकृतिक जैव-विविधता से रूबरू करवाने के लिए जीव विज्ञान प्रवक्ता के साथ एक खास प्रकृति भ्रमण गतिविधि कराई गई।

1. लार्वा से तितली तक कार्यांतरण को प्रत्यक्ष देखना-

कक्षा 10+1 जीवविज्ञान संकाय के विद्यार्थियों को विद्यालय परिसर में एक लार्वा मिला, जो संभवतः पेड़ से नीचे गिर गया था। विद्यार्थियों ने उसे पतियों के साथ एक धातु के बेलनाकार डिब्बे में सुरक्षित रखा। कुछ समय बाद लार्वा ने पतियाँ खाना शुरू कर दिया और नए वातावरण के अनुरूप ढलने लगा। अब विद्यार्थी प्रतिदिन उसके व्यवहार, भोजन और शारीरिक परिवर्तनों का अवलोकन और रिकॉर्ड करने लगे। उनका उद्देश्य लार्वा से



प्यूपा और फिर वयस्क कीट अथवा तितली बनने की प्रक्रिया, कार्यांतरण, को प्रत्यक्ष रूप से समझना है। यह गतिविधि विद्यार्थियों के लिए प्रकृति को एक जीवंत प्रयोगशाला के रूप में समझने और वैज्ञानिक जिज्ञासा विकसित करने का सुंदर अवसर के रूप में मिली है।

2. महुआ की लाल-भूरी पतियाँ, प्रकृति की रंगीन प्रयोगशाला-

विद्यालय के प्रांगण में खड़ा महुआ का पेड़ इन दिनों विद्यार्थियों के लिए विज्ञान की एक जीवंत प्रयोगशाला बना हुआ है। पेड़ पर निकलने वाली नई पतियाँ जब हथेली से भी बड़ी हो जाती हैं, तब भी उनका रंग हरा न होकर लाल-भूरा या ताँबे जैसा दिखाई देता



है। कुछ दिनों बाद यही पतियाँ धीरे-धीरे हरी होने लगती हैं। विद्यार्थियों की स्वाभाविक जिज्ञासा है, आखिर ऐसा क्यों होता है? इसका उत्तर पतियों में मौजूद विभिन्न प्राकृतिक वर्णकों में छिपा है। महुआ की नई पतियाँ जब विकसित होती हैं, तब उनमें क्लोरोफिल की मात्रा अभी पूरी तरह विकसित नहीं हुई होती। क्लोरोफिल वही हरा वर्णक है, जो प्रकाश संश्लेषण के दौरान सूर्य के प्रकाश को ग्रहण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके साथ-साथ नई पतियों में लाल, गुलाबी, बैंगनी या भूरापन देने वाले एंथोसाइनिन जैसे वर्णक अपेक्षाकृत अधिक दिखाई दे सकते हैं। इन्हीं वर्णकों के कारण नई पतियों का रंग लाल-भूरा अथवा ताँबे जैसा नजर आता है। इस प्रकार पत्ती का लाल-भूरा रंग केवल सुंदरता नहीं, बल्कि उसके विकास के दौरान होने वाली एक उपयोगी जैविक प्रक्रिया का संकेत भी है। जैसे-जैसे पत्ती परिपक्व होती जाती है, उसमें क्लोरोफिल का निर्माण और संचय बढ़ता जाता है। धीरे-धीरे हरे रंग का प्रभाव अन्य वर्णकों पर प्रमुख हो जाता है। परिपक्व होने पर क्लोरोफिल का हरा रंग प्रमुख हो जाता है।

3. कचनार के पते में चॉंदी जैसी चमक-

विद्यार्थियों ने कचनार के पते को कप का आकार देकर उसमें पानी डाला। पानी डालते ही पते के भीतर चॉंदी जैसी चमक दिखाई देने लगी। यह चमक किसी चॉंदी या धातु के कारण नहीं, बल्कि प्रकाश के परावर्तन के कारण उत्पन्न हुई। कचनार के पते की बाहरी सतह पर एक बहुत पतली सुरक्षात्मक परत होती है, जिसे क्यूटिकल कहते हैं। इस परत में मोम जैसे पदार्थ पाए जाते हैं, जो पते से पानी के अत्यधिक वाष्पीकरण को रोकते हैं और सतह को जलरोधी बनाते हैं। पते पर पानी की एक पतली परत बनने पर प्रकाश पते की चिकनी सतह और पानी के बीच से परावर्तित होता है। इस परावर्तित प्रकाश के कारण पता चमकीला या चॉंदी जैसा दिखाई देता है। पते की सूक्ष्म सतह-रचना और मोम की परत भी प्रकाश को अलग-अलग दिशाओं में बिखेरती है, जिससे यह प्रभाव और स्पष्ट हो जाता है। यह एक सुंदर प्राकृतिक घटना है, रासायनिक प्रतिक्रिया नहीं। अलग-अलग कोणों से देखने या धूप की दिशा बदलने पर चमक की तीव्रता भी बदल सकती है। इस छोटे-से प्रयोग से विद्यार्थियों ने समझा कि पौधों की पतियाँ केवल





भोजन बनाने का काम नहीं करती, बल्कि उनकी सतह की सूक्ष्म संरचना प्रकाश के साथ अद्भुत प्रभाव भी उत्पन्न कर सकती है।

4. दीवार पर मिली मेडेनहेयर फर्न-

इस मानसून के मौसम में विद्यार्थियों ने विद्यालय परिसर में फर्न की तलाश के लिए एक रोचक अभियान चलाया। इसी दौरान उन्हें नम और छायादार दीवार पर मेडेनहेयर फर्न उगी हुई मिली। इसकी पतली, काली और चमकदार डंठलियों पर लगे छोटे-छोटे कोमल पत्ते इसे अन्य फर्न से अलग और आकर्षक बनाते हैं। मेडेनहेयर फर्न का वैज्ञानिक नाम सामान्यतः एडिप्टम वंश से संबंधित माना जाता है। यह फूल और बीज नहीं बनाती, बल्कि पत्तियों की निचली सतह पर बनने वाले सूक्ष्म बीजाणुओं से फैलती है। वर्षा ऋतु में नमी बढ़ने के कारण यह दीवारों की दरारों, पत्थरों और पेड़ों की छाल



पर आसानी से उग आती है।

विद्यार्थियों का यह अभियान प्रकृति को करीब से समझने और विद्यालय परिसर में मौजूद जैव-विविधता को पहचानने का सुंदर प्रयास रहा। मेडेनहेयर फर्न ने दीवार के एक साधारण हिस्से को भी हरियाली और प्राकृतिक सुंदरता से भर दिया।

5. बरसात की मेहमान, मॉस को जानो-

स्कूल की दीवार पर उगी यह हरी मखमली वनस्पति मॉस है, जिसे विज्ञान में ब्रायोफाइट समूह का पौधा कहा जाता है। यह पृथ्वी के सबसे प्राचीन पौधों में से एक है जो करोड़ों साल पहले से मौजूद है। इसमें असली जड़, तना, फूल या बीज नहीं होते और यह बीजाणुओं से फैलती है। यह बरसात में नम, छायादार और पुरानी दीवारों पर उगती है। दीवार पर इसका उगना साफ हवा का संकेत माना जाता है, क्योंकि यह प्रदूषण में जीवित नहीं रह पाती। यह नमी और प्रदूषण को सोखकर पर्यावरण की मदद करती है। गर्मी में यह सूख जाती है और अगली बरसात में फिर से हरी-भरी हो जाती है। इसका एक रोचक तथ्य यह है कि वैज्ञानिक इसे पृथ्वी पर मिट्टी बनाने वाला पहला पौधा मानते



हैं। यह वनस्पति बंजर पत्थर या दीवार पर उगकर उसे धीरे-धीरे मिट्टी में बदलने की शुरुआत करती है। इसे हैंड लेंस से देखा तो इसके छोटे-छोटे तारे जैसे नाजुक पत्ते स्पष्ट दिखाई दिए, जो पानी की एक बूँद पाते ही खिल उठते हैं।

अच्छा तो आदरणीय अध्यापक साथियो व प्रिय विद्यार्थियो! आगामी अंक में फिर से मिलते हैं नई विज्ञान गतिविधियों के साथ। आशा है, आप उनको भी पसंद करेंगे व करके देखेंगे।

साईंस मास्टर/ईएसएचएम
पीएमश्री रावमा विद्यालय, दामला
खंड जगाधरी, यमुनानगर





मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला

थाली में छुपा ताकत, कैलोरी और पोषण का विज्ञान

डॉ. मोनिका शर्मा



क्या आपने कभी सोचा है कि आपकी रोज की साधारण-सी दिखने वाली थाली भी किसी सुपरहीरो से कम नहीं है? अगर आपकी थाली में कोई सुपरपावर होती, तो वह क्या होती? इसका जवाब है—ऊर्जा और पोषण देना। हम सभी ने अनुभव किया है कि जब खेलते-खेलते हम थक जाते हैं और मम्मी हमें गुड़-चना, दूध या लस्सी देती हैं, तो कुछ समय बाद शरीर में फिर से स्फूर्ति महसूस होती है। यह कोई जादू नहीं, बल्कि हमारी रसोई में छुपा विज्ञान है। वास्तव में, मम्मी की रसोई एक ऐसी 'सीक्रेट लैब' है, जहाँ रोज बनने वाला भोजन हमारे शरीर के लिए इंधन और पोषण का काम करता है। जिस तरह इंधन के बिना गाड़ी नहीं चल सकती, उसी तरह भोजन के बिना हमारा शरीर अपनी जरूरी गतिविधियाँ ठीक से नहीं कर सकता।

कैलोरी क्या है? - ऊर्जा की गिनती का तरीका-

अब सवाल उठता है कि हमें कैसे पता चलता है कि कौन-सा भोजन कितनी ऊर्जा देता है? इसके लिए विज्ञान में कैलोरी शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। भोजन की ऊर्जा सामान्यतः किलो कैलोरी (किलो कैलोरी) में बताई जाती है, जिसे आम बोलचाल में कैलोरी कहा जाता है।

अलग-अलग खाद्य पदार्थों में ऊर्जा की मात्रा अलग होती है। रोटी, चावल, फल, दूध, दाल, मेवे और घी—सभी हमें ऊर्जा देते हैं, लेकिन उनकी ऊर्जा और पोषक तत्वों की मात्रा अलग-अलग होती है। उदाहरण के लिए, घी में ऊर्जा की मात्रा अधिक होती है, जबकि फल और सब्जियाँ ऊर्जा के साथ-साथ विटामिन, खनिज और रेशे भी प्रदान करते हैं।

जब मम्मी हमें गुड़-चना देती हैं, तो यह केवल स्वादिष्ट पारंपरिक नाश्ता नहीं होता। गुड़ मुख्यतः कार्बोहाइड्रेट से ऊर्जा देता है, जबकि चना प्रोटीन, रेशा और कई अन्य पोषक तत्वों का अच्छा स्रोत है। इसलिए यह एक उपयोगी खाद्य संयोजन बन जाता है।

कार्बोहाइड्रेट - शरीर का इंधन-

अगर हम अपने शरीर को एक गाड़ी मानें, तो कार्बोहाइड्रेट उसके प्रमुख इंधनों में से एक हैं। रोटी, चावल, आलू, अनाज, फल और गुड़ जैसे खाद्य पदार्थ कार्बोहाइड्रेट के प्रमुख स्रोत हैं। जब हम कार्बोहाइड्रेट युक्त भोजन करते हैं, तो पाचन के दौरान इनका एक बड़ा भाग छोटे अणुओं, विशेष रूप से ग्लूकोज में टूट जाता है। ग्लूकोज रक्त के माध्यम से शरीर की कोशिकाओं तक पहुँचता है और वहाँ ऊर्जा बनाने में उपयोगी होता है।



यही ऊर्जा हमें चलने, दौड़ने, खेलने, पढ़ने और सोचने जैसी गतिविधियों में मदद करती है। इसीलिए दाल-चावल, रीखड़ी, बाजरे की रोटी और सब्जियों से बना भोजन शरीर को आवश्यक ऊर्जा और पोषण प्रदान करता है।

वसा - ऊर्जा का भंडार-

वसा हमारे शरीर के लिए ऊर्जा का सघन स्रोत है। घी, तेल, मक्खन, मूँगफली और विभिन्न मेवे वसा के स्रोत हैं। वसा शरीर को ऊर्जा देने के साथ कुछ आवश्यक विटामिनों के अवशोषण में भी सहायता करती है और शरीर में ऊर्जा के भंडारण में भूमिका निभाती है। हरियाणा के पारंपरिक भोजन में घी, बाजरा, चूरमा, पिन्ही और विभिन्न प्रकार के मेवों का प्रयोग लंबे समय से होता आया है। ये खाद्य पदार्थ पौष्टिक हो सकते हैं, लेकिन वसा और ऊर्जा की अधिक मात्रा वाले खाद्य पदार्थों का सेवन संतुलित मात्रा में करना आवश्यक है। भोजन में विविधता और संतुलन सबसे महत्वपूर्ण है।

प्रोटीन - शरीर का निर्माणकर्ता-

हमारे शरीर के विकास, मांसपेशियों और ऊतकों के निर्माण तथा उनकी मरम्मत के लिए प्रोटीन आवश्यक है। इसलिए इसे शरीर का 'बिल्डिंग ब्लॉक' यानी निर्माणकर्ता कहा जा सकता है। दाल, चना, राजमा, दूध, दही, पनीर, सोयाबीन और कई अन्य खाद्य पदार्थ प्रोटीन के अच्छे स्रोत हैं। पाचन के दौरान प्रोटीन छोटे घटकों, जिन्हें अमीनो अम्ल कहा जाता है, में टूटता है। शरीर इनका उपयोग नई कोशिकाओं और ऊतकों के निर्माण तथा मरम्मत में करता है। बढ़ते बच्चों के लिए पर्याप्त और विविध पोषण विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

रसोई में छुपा रासायनिक जादू-

हमारी रसोई केवल खाना बनाने की जगह नहीं, बल्कि रोज होने वाले वैज्ञानिक परिवर्तनों की छोटी-सी प्रयोगशाला भी है। रोटी या पराठा सेंकते समय उसका रंग, स्वाद और सुगंध बदलती है। अधिक तापमान पर भोजन की सतह पर होने वाली मैयाई अभिक्रिया इसके भूरे रंग और विशिष्ट स्वाद-सुगंध में योगदान करती है।

इसी तरह, दूध का दही में बदलना किण्वन की प्रक्रिया का उदाहरण है। इसमें सूक्ष्मजीव दूध में मौजूद लैक्टोज को बदलकर लैक्टिक अम्ल बनाते हैं, जिससे दूध का स्वाद और बनावट बदल जाती है। यानी हमारी रसोई में विज्ञान हर दिन हमारे सामने घटित होता है।

हमारी बॉडी की ऊर्जा मुद्रा - एटीपी-

भोजन से मिलने वाली ऊर्जा का उपयोग शरीर की कोशिकाएँ सीधे भोजन के रूप में नहीं करती। कोशिकीय श्वसन की प्रक्रियाओं के माध्यम से भोजन से प्राप्त ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण भाग एटीपी (एडेनोसिन ट्राइफॉस्फेट) के निर्माण में लगाया जाता है। एटीपी को शरीर की 'ऊर्जा मुद्रा' कहा जाता है। जब कोशिकाओं को ऊर्जा की आवश्यकता होती है, तो एटीपी से ऊर्जा उपलब्ध होती है। यही ऊर्जा मांसपेशियों की गतिविधि, कोशिकीय कार्यों और शरीर की अनेक आवश्यक प्रक्रियाओं में काम आती है। इसलिए भोजन से प्राप्त ऊर्जा और शरीर में एटीपी का निर्माण एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

संतुलित आहार - परफेक्ट थाली-

केवल एक प्रकार का भोजन हमारे शरीर की सभी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता। हमें ऐसा संतुलित आहार चाहिए, जिसमें अलग-अलग प्रकार के पोषक तत्व उचित मात्रा और विविधता में मिलें। एक अच्छी थाली में अनाज या बाजरा, दाल या अन्य प्रोटीन स्रोत, हरी अथवा रंग-बिरंगी सब्जियाँ, फल, दूध या दही और आवश्यकतानुसार थोड़ी मात्रा में स्वस्थ वसा शामिल की जा सकती है। पर्याप्त पानी पीना भी स्वस्थ जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

जंक फूड बनाम पौष्टिक देसी भोजन-

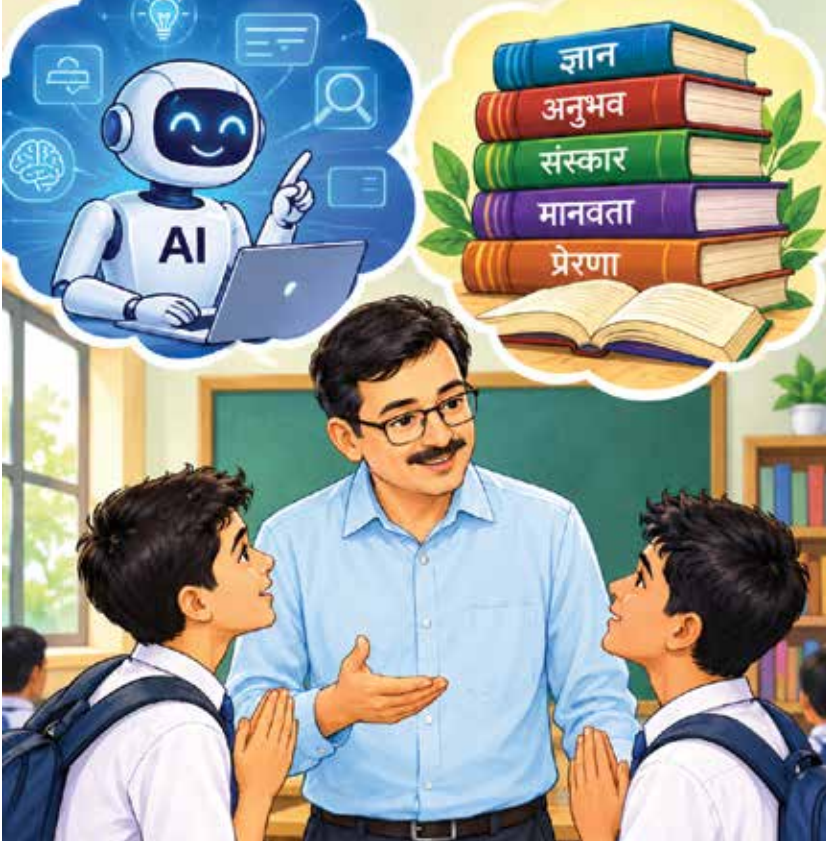
जंक फूड का आकर्षण बच्चों और युवाओं में स्वाभाविक रूप से हो सकता है, लेकिन हर स्वादिष्ट भोजन पौष्टिक हो, यह जरूरी नहीं। कुछ अत्यधिक प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों में ऊर्जा, नमक, चीनी या वसा अधिक हो सकती है, जबकि आवश्यक पोषक तत्व अपेक्षाकृत कम होते हैं।

इसके विपरीत, घर का बना विविध और संतुलित भोजन—जैसे दाल, चना, बाजरा, सब्जियाँ, दही और मौसमी फल—शरीर को कई आवश्यक पोषक तत्व प्रदान कर सकता है। इसलिए भोजन का चुनाव केवल स्वाद देखकर नहीं, बल्कि उसके पोषण को समझकर करना चाहिए।

- डॉ. मोनिका शर्मा

बीआरपी (साईंस) मोरनी हिस्स
जिला-पंचकूला, हरियाणा





मास में खास



2026

सितंबर-अक्टूबर माह के त्यौहार व विशेष दिवस

- 4 सितंबर - श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
- 5 सितंबर - शिक्षक दिवस
- 14 सितंबर - हिंदी दिवस
- 17 सितंबर - विश्वकर्मा पूजा
- 23 सितंबर - हरियाणा शहीदी दिवस
- 2 अक्टूबर - गांधी जयंती
- 5 अक्टूबर - विश्व शिक्षक दिवस
- 6 अक्टूबर - महाराजा अजमीद जयंती
- 8 अक्टूबर - भारतीय वायु सेना दिवस
- 11 अक्टूबर - महाराजा अग्रसेन जयंती
- 16 अक्टूबर - विश्व खाद्य दिवस
- 19 अक्टूबर - महाष्टमी/दुर्गा पूजा
- 20 अक्टूबर - महानवमी
- 21 अक्टूबर - विजयादशमी/दशहरा
- 26 अक्टूबर - महर्षि वाल्मीकि जयंती
- 29 अक्टूबर - कर्वा चौथ
- 31 अक्टूबर - सरदार वल्लभभाई पटेल जयंती

महान कौन ?

कुछ दिनों पहले की बात है। दो दोस्त थे। दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते थे। प्रतिदिन रास्ते में बातें करते हुए साथ-साथ स्कूल आते-जाते थे। एक दिन बात ही बात में दोनों के बीच बहस हो गई। एक कहने लगा, 'एआई किताबों से अधिक महान है। किसी भी विषय की जानकारी के लिए आजकल सभी बच्चे और नौजवान एआई का ही सहारा लेते हैं। दूसरा कहने लगा, 'नहीं, एआई से अधिक महान किताबें हैं। किताबें तो मानव की भावनाओं, अनुभवों तथा वर्षों के अनुसंधानों का निचोड़ होती हैं। ऑखों पर भी किसी प्रकार का अतिरिक्त दबाव नहीं पड़ता और इनका कोई बुरा प्रभाव नहीं होता।'

ये सब बातें सुनकर पहला दोस्त बोला, 'एआई लाखों किताबों का एक साथ विश्लेषण कर सकता है। यह कुछ ही सेकंड में किसी भी जटिल विषय को आसान भाषा में समझा सकता है तथा नए विचारों को खोजने और जानकारी को व्यवस्थित करने में बहुत तेज है। इससे समय की भी बचत होती है।' दूसरा दोस्त बोला, 'लेकिन एआई को यह सब ज्ञान मिला कहाँ से? पुस्तकों, शोधों और मानव के वर्षों के अनुभवों से ही तो!'

दोनों अपनी-अपनी बात को सही साबित करने में लगे थे। तभी देखते-देखते उनका घर आ गया। दोनों अपने-अपने घर चले गए।

अगले दिन जब वे स्कूल पहुँचे तो अन्य छात्रों ने उनके बीच हुई बहस के बारे में कक्षा-अध्यापक को बता दिया। अध्यापक ने दोनों छात्रों को अपने पास बुलाया। दोनों ने अध्यापक को अपनी-अपनी बातें विस्तार से बताईं। दोनों की बातें सुनकर अध्यापक मुस्कराए और बोले, 'बच्चों! किताबें और एआई दोनों एक-दूसरे के

पूरक हैं। हमें इनमें से किसी एक को दूसरे का विरोधी नहीं समझना चाहिए। सही उपयोग किया जाए तो दोनों मिलकर सीखने की प्रक्रिया को और बेहतर बना सकते हैं।'

अध्यापक ने आगे कहा, 'किताबें गुरु तथा मूल प्रेरणा हैं, जबकि एआई आधुनिक उपकरण है। महानता के मामले में किताबें ही ऊपर आती हैं। किताबों के बिना एआई का अस्तित्व संभव नहीं था, क्योंकि एआई ने भी ज्ञान के विशाल संसार से ही सीखना शुरू किया है।'

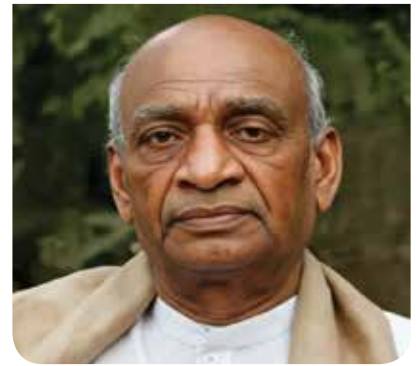
'किताबें ज्ञान का आधार और आत्मा हैं, जबकि एआई ज्ञान को तेजी से इस्तेमाल करने का आधुनिक औजार है। किताबें हमें केवल जानकारी ही नहीं देती, बल्कि जीवन के अनुभव, विचार, संस्कार और मानवीय संवेदनाएँ भी समझाती हैं। ज्ञान का सृजन करने तथा मानवीय संवेदनाओं को समझने के मामले में किताबें अधिक महान हैं, जबकि तेजी से जानकारी खोजने, उसका विश्लेषण करने और उसे सरल रूप में प्रस्तुत करने में एआई आगे है।'

अध्यापक की बातें दोनों छात्रों की समझ में आ गईं। उन्हें एहसास हुआ कि बहस में किसी एक को श्रेष्ठ सिद्ध करने के बजाय दोनों की उपयोगिता को समझना अधिक आवश्यक है। दोनों ने अध्यापक के पैर छुए और उनके प्रति आभार व्यक्त किया। इसके बाद वे प्रसन्न मन से कक्षा में चले गए।

- कविता

प्राथमिक अध्यापिका

राजकीय प्राथमिक विद्यालय, सराय अलावर्दी
गुरुग्राम, हरियाणा



'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत् से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत् की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।

मेल भेजने का पता-

shikhasaarthi@gmail.com





Call of the Wild



Ms. Rupam Jha



Man is exploratory by nature. He seeks new ventures and adventures. As tourism expands, new horizons are sought. After scaling the oft beaten path and of course the role played by social media, tourists are looking at National Parks, Tiger Reserves and Sanctuaries. In India there is a bounty. As Project Tiger is a success, viewing of a tiger in its natural

habitat is an optical delight.

There are so many videos of migration of animals from Serengeti to Maasai Mara, that is from Tanzania to Kenya. Zebras and Gazelles, all in hordes, move from one place to another. Tourists come a plenty for the sighting of the migration.

India is a country rich in flora and fauna. There is much to see. Tourism is booming and venture out to see new places and sights. Tiger sighting is now catching up. Forest reserves are not easily accessible and required permit is a must. Booking is done Online. A vehicle too has to be booked as personal vehicles are not allowed. Gypsies are the preferred vehicle as

they are easy to manoeuvre on the dirt track. The vehicles are open to enable better viewing.

In the midst of deciduous forests and ruins lies Ranthambore in Rajasthan. Here tiger sighting has been done. The Jim Corbett National Park is primarily in a Sal forest along a riverine. Bamboo groves as well as Flame of the Forest are found everywhere. Among the thick mangrove forest of Sundari trees is the Sundarbans of West Bengal, where the Royal Bengal Tiger resides. Along with the coveted tiger, the forests are host to a number of birds and animals, few examples being deer, elephants, monkeys, chipmunks.

Tadoba in Maharashtra and Pench





in Madhya Pradesh where tiger sighting is the maximum. Teak and dry deciduous forest cover in these areas. Panna is another reserve forest in Madhya Pradesh. Sariska and Similipal too boasts of tigers. Gir Forest, amidst deciduous trees, is a reserve for the Asiatic Lion at the Kamleshwar Dam in Gujarat. Leopards are spotted at Kaziranga in Assam has the Asiatic one horned Rhinoceros. Nestled at the border of Arunachal Pradesh and on the flood plains of the Brahmaputra. The elephant grasslands and silk cotton trees are home to the Royal Bengal tiger too. Manas National Park, also in Assam but bordering Bhutan, is said to be home to the Royal Bengal Tiger and many other wildlife. In Manas, along with riverine vegetation, there are semi evergreen trees, orchids and Savannah grasslands. Animals found are elephants, one horned rhinoceros, pygmy hog and golden langur. Jaldapara National Park in West Bengal too has the same animals.

Jawai Dam in Jodhpur, Rajasthan is home to another Big Cat, the leopard.

After a four hour drive, the water reservoir emerges and it is here in the granite hills, that the leopard resides. Dry, scrub forests and golden sunset and sunrise make for a very scenic space.

Elephants in the Annamalai National Park in Tamil Nadu and in the Periyar Wildlife Sanctuary, Kerala are in their natural habitat. Very often tourists drive through these natural parks in forest official permitted vehicles for a good viewing from a distance.

The Bandhavgarh Natural Park is famous for The Royal Bengal Tiger and also houses sloth bears, leopards, chital, wild boars and others. It is amidst sal forests, open meadows and ancient fort. Tiger viewing has a very good chance here. Kanha too is situated in Madhya Pradesh, an inspiration for Rudyard Kipling novel "The Jungle Book", has helped save the Barasingha from extinction. Panna, in Khajuraho, too is in the same State with a lot of plateaus and gorges and home to tigers and leopards.

Coral reefs, while scuba diving in the island Union Territories of Andaman & Nicobar as well as Lakshadweep. Dolphins of the sea and Olive Ridley Turtle of Odisha are a treat to see. Irrawaddy Dolphins may be viewed if you paddle into the delta or estuarine area and there will be crocodiles galore too.

Camel safaris are a popular tourist attraction in Jaisalmer. An animal only found in the desert becomes fascinating for tourist from other ecologies. Khangchendzonga National Park in Sikkim and the Valley of Flowers in Uttarakhand for rare mountain species. But carry with yourself a spirit of adventure.

So pack your bags, maybe a rucksack or a backpack. Throw in some sunscreen, a pair of sturdy walking shoes, shades for eyes, and comfortable clothing in earthy hues. Book your tickets and your slot for the Reserve Forest. Bring out the traveller in you.

**Sr. Specialist
REAP Cell**

SCERT Haryana, Gurugram



Green Schools: Building a Sustainable Future

Creating Greener Campuses, Healthier Students and a Better Tomorrow



Dr. Vijender Kumar



A Green School is more than just a school surrounded by trees and gardens. It is an educational institution that integrates sustainability and climate action into its infrastructure, daily operations, curriculum, governance and community engagement. The primary aim is to reduce environmental impact while creating a healthy learning environment and empowering students to become responsible citizens.

To becoming a green school there

are various activities involved like:

Energy Efficiency

One of the major objectives of a Green School is to reduce energy consumption. Solar panels, energy-efficient appliances, LED lighting, smart systems and motion-sensing lights can help ensure that energy is used only when required. Renewable sources of energy can significantly reduce the school's carbon footprint while teaching students the importance of energy conservation.

Water Conservation

Water is one of our most precious natural resources. Green schools promote responsible water management through rainwater harvesting, low-flow taps and water-efficient toilets. Regular maintenance of plumbing systems

helps prevent unnecessary leakage and wastage.

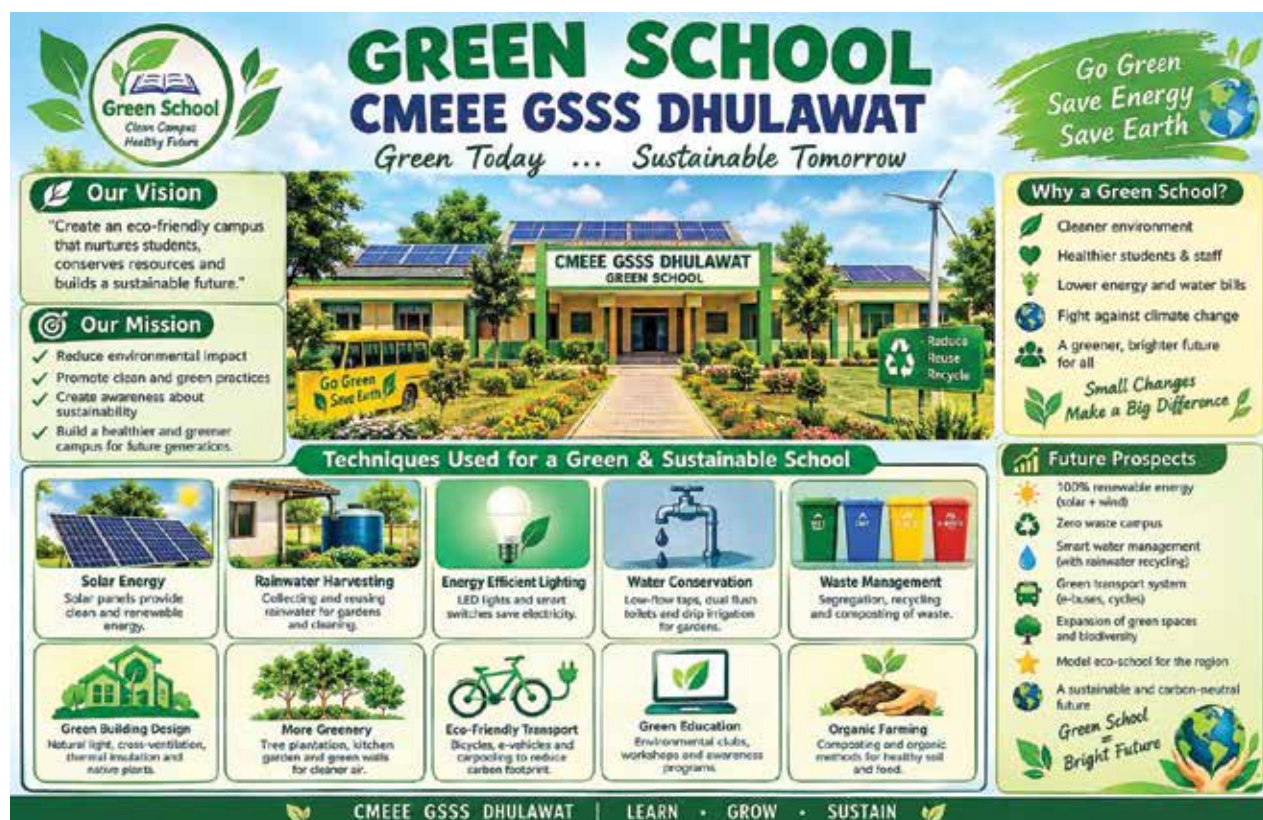
Students can also be encouraged to use reusable water bottles and participate in water-conservation activities, turning everyday habits into lifelong environmental values.

Reduce, Reuse and Recycle

A truly sustainable campus follows the principle of "Reduce, Reuse and Recycle." Schools can minimize waste by encouraging reusable lunch containers and materials, avoiding unnecessary single-use products and providing separate bins for recyclable and non-recyclable waste.

Waste-management activities and recycling programmes also help students understand that even small actions can make a meaningful





difference to the environment.

Sustainable Food for Healthy Living

Green schools can promote healthy and environmentally responsible eating by encouraging locally sourced, seasonal and organic food wherever possible. Local food can reduce the environmental impact associated with transportation while providing nutritious choices for students.

The use of reusable or biodegradable plates, cups and utensils can further reduce dependence on single-use plastics.

Eco-Friendly Transportation

Transportation contributes significantly to carbon emissions. Green schools encourage students and staff to adopt sustainable commuting practices such as walking, cycling and carpooling. Where feasible, electric school buses and other cleaner transportation options can also be considered.

Such initiatives not only reduce emissions but also promote healthy and environmentally responsible lifestyles.

Green Buildings and Smart Architecture

A sustainable school begins with a sustainable building. Green schools can incorporate eco-friendly construction materials, energy-efficient insulation, natural lighting and proper ventilation.

Features such as solar panels, green roofs and energy-efficient windows can improve the efficiency of the campus while creating a healthier environment for learning.

Learning Beyond the Classroom

Environmental education is at the heart of the Green School concept. Students can learn about climate change, conservation, renewable energy and sustainable living through classroom lessons as well as practical activities.

Nature visits, community clean-up drives, gardening projects and hands-

on activities such as building a solar oven can transform environmental education from a textbook concept into a real-life experience.

The Community as a Partner

Sustainability cannot stop at the school gate. Green schools involve parents, local communities, businesses and environmental organisations in activities such as tree plantation drives, recycling campaigns and sustainability workshops.

When students see their families and communities participating, they understand that environmental responsibility is a shared commitment.

Green Spaces for Healthy Minds and Bodies

Gardens, rooftop green spaces and outdoor classrooms can bring nature into students' daily lives. Such spaces encourage physical activity, provide opportunities to connect with nature and can support a calm and stimulating learning environment.





A healthy environment contributes to students' overall well-being and can encourage creativity and learning.

Preparing Students for the Future

The ultimate purpose of a Green School is not simply to create an environmentally friendly campus—it is to prepare young people for a sustainable future.

Students who understand environmental challenges and sustainable practices can carry these values into their homes, communities and future careers. Green schools therefore have the potential to nurture a generation capable of making responsible choices and addressing tomorrow's environmental challenges.

A Global Vision

The movement towards greener schools is part of a wider global effort. The source material notes a 2030 target of greening at least 50% of schools in every country worldwide, while regional frameworks such as the Indian Green Building Council (IGBC) Green Schools rating system assess areas including site sustainability, water efficiency, energy conservation and health.

"Green Today, Sustainable Tomorrow" is the foundational motto driving the transformation of our school i.e. CMEEE GSSS Dhulawat which is situated in district Nuh (an aspirational district) and going to be an eco-friendly school. Transitioning to a green school model is no longer

a luxury, but a necessity for building a healthier, climate-resilient future.

Recently PMSHRI GSSS Pathkhori FP Jhirka, Nuh got 6th rank in National Green School Rating 2025, that is an inspiration for our aspirational district.

Our school focuses on building an eco-friendly campus that simultaneously nurtures students and conserves vital natural resources. The ultimate objective is to significantly reduce environmental impact, promote clean practices, and instill deep sustainability awareness in the next generation. By executing small, conscious shifts in daily operations, educational environments can dramatically combat climate change while cultivating healthier students and staff.

Transforming our school into a sustainable campus requires a multi-pronged approach across various operational sectors:

- » **Renewable Energy & Efficiency:** Installing rooftop solar panels captures clean energy, while retro fitting classrooms with LED lighting and smart switches dramatically lowers electricity consumption.
- » **Resource Conservation:** Implementing rainwater harvesting systems collects water for cleaning and gardening. Combining this with low-flow taps and drip irrigation ensures zero water waste.
- » **Waste collection:** Setting up color-coded waste management bins (Wet,

Dry, Plastic, E-Waste) streamlines segregation.

- » **Kitchen Garden:** School kitchen gardens provide students with hands-on learning about food, nutrition, sustainability, and environmental stewardship while promoting healthy habits and life skills. It is a designated space within the school premises where students grow vegetables, fruits, and herbs for both learning purposes and consumption. Organic waste is redirected to composting setups to support organic farming and kitchen gardens on campus.

- » **Infrastructure & Transit:** Designing buildings with natural light, cross-ventilation, and thermal insulation minimizes artificial heating and cooling needs. Furthermore, promoting eco-friendly transport—such as bicycles, e-vehicles, and carpooling—helps shrink the daily carbon footprint.

We are continuously going to achieve the role of a complete green school by creating various sustainable green habits among the students by green ideas time to time.

Conclusion

A Green School is not simply a building with solar panels or a campus filled with plants. It represents a culture of sustainability in which every student, teacher and member of the community participates.

By conserving energy and water, reducing waste, promoting sustainable transportation, creating green learning spaces and integrating environmental education into the curriculum, schools can become powerful centres of positive change.

A greener school today can help create a greener, healthier and more sustainable world tomorrow.

Lecturer Biology
CMEEE GSSS Dhulawat
Block- Taoru, Distt- Nuh
(Haryana)





The Beauty of October

The leaves eventually loosen their hold,
They fall as if falling apart is an art,
And October teaches us what endings have always told:
That leaving can still be a beautiful start.

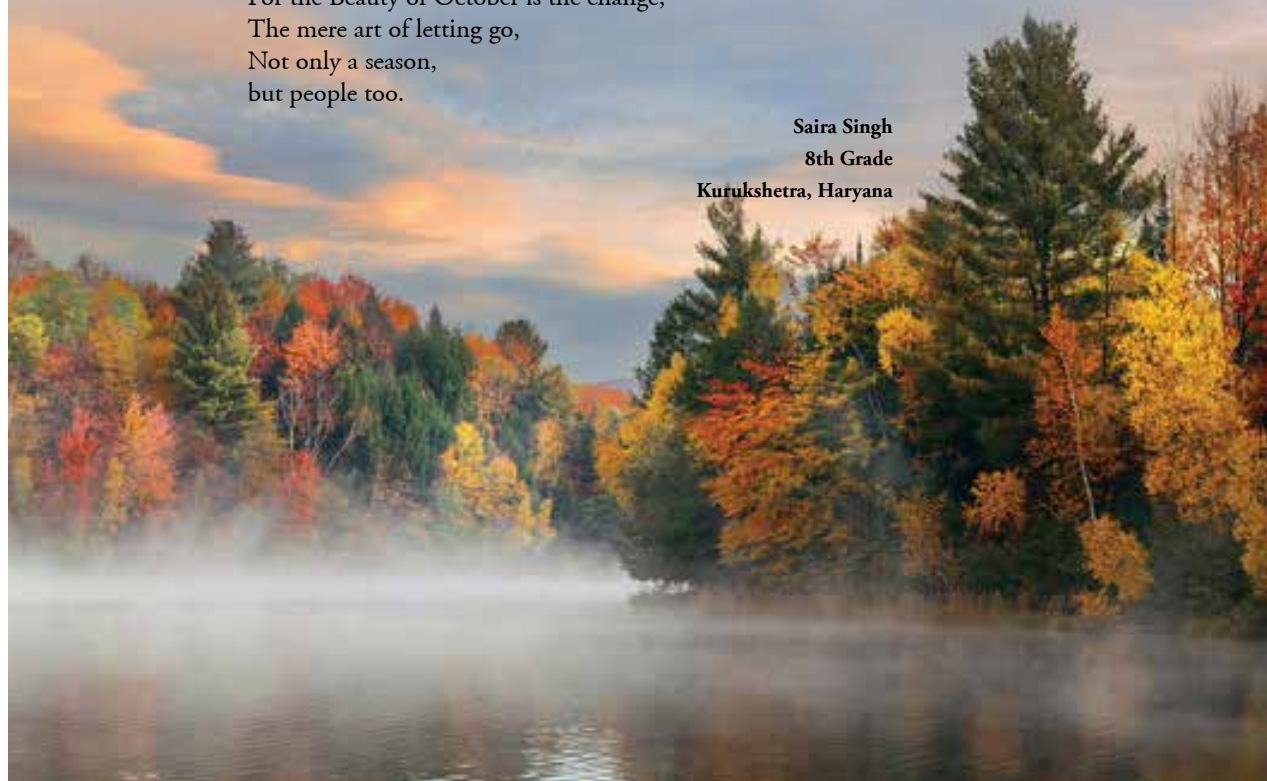
I like how October lets it all fade away.
How leaves leave the branches without asking why,
How the summer grows distant with each passing day.
Yet nobody teaches the trees how to say goodbye.

While still somehow bringing us closer to a new season,
It teaches us to adapt to each change.
Guiding us to a new world like a beacon.
It might sound a bit strange,

But this is the art of letting go.
This is the beauty of October.
There will always be days when you feel low,
But it is a part of life, and therefore, you ought to stay sober.

For the Beauty of October is the change,
The mere art of letting go,
Not only a season,
but people too.

Saira Singh
8th Grade
Kurukshetra, Haryana





Diwali - The Festival of Lights and New Beginnings



Diwali is the brightest and most loved festival of India. It is called the Festival of Lights because on this day, every home, street, shop and city glows with thousands of diyas, candles and colourful lights. Diwali usually comes in October or November on the new moon night of Kartik month. For children, Diwali means holidays, new clothes, sweets, gifts, rangoli, family get-together and lots of joy. But behind the lights there are deep stories and values that every school student should know.

The most famous story is from the Ramayana. Lord Rama, his wife Sita and his brother Lakshmana returned to their kingdom Ayodhya after 14 years in the forest and after defeating the

demon king Ravana of Lanka. Ravana had kidnapped Sita. Rama fought a great war with help of Hanuman and Vanar Sena and won. When people of Ayodhya heard that their beloved prince was coming back, they cleaned the whole city, decorated it with flowers, mango leaves and lit millions of oil lamps made of clay to welcome them. That night was a dark Amavasya night, but the lights of diyas made it as bright as day. Since then, we celebrate Diwali every year to remember the return of goodness, truth and light over darkness and evil.

In other parts of India, Diwali has other meanings too, which shows Unity in Diversity. In Bengal and Assam, people worship Goddess Kali,

the fierce form of Durga who destroys evil. In North India, in many homes, people worship Goddess Lakshmi, the goddess of wealth and prosperity, and Lord Ganesha, the remover of obstacles and god of wisdom. People believe that on Diwali night, Goddess Lakshmi visits clean homes and blesses them with wealth. That is why we clean our houses so well before Diwali — not just for guests, but to welcome positivity. In South India, Diwali is celebrated as Naraka Chaturdashi, when Lord Krishna killed demon Narakasura. In Jainism, it is the day Lord Mahavira attained nirvana. In Sikhism, it is Bandi Chhor Divas, when Guru Hargobind Ji released 52 kings from prison.

Diwali is a five-day festival, each day



has meaning. First day is Dhanteras, when people buy new utensils, gold or silver, worship Dhanvantari, god of health. Second day is Naraka Chaturdashi or Choti Diwali. Third day is main Diwali — Lakshmi Puja, fireworks, sweets. Fourth day is Govardhan Puja or Annakut, when people worship Govardhan hill lifted by Krishna, and Bali Pratipada. Fifth day is Bhai Dooj, which celebrates love between brothers and sisters, similar to Raksha Bandhan, where sister prays for brother's long life.

For children, Diwali teaches many important lessons beyond holidays. First, it teaches cleanliness and discipline. We clean every corner, throw away waste, arrange books. A clean room helps clean mind. Second, it teaches sharing and generosity. We distribute sweets, dry fruits, gifts to friends, neighbours, helpers, drivers, maids and even to those who have less. Third, it teaches that light always wins over darkness, knowledge over ignorance, good over evil. Just like one



small diya can remove darkness from a whole room, one small act of kindness can remove sadness from someone's heart. Fourth, it teaches gratitude — we thank wealth, knowledge and family.

Today, we must also celebrate a Green Diwali, which is very important for students to understand. Loud

firecrackers cause air pollution — Delhi's AQI goes above 400 after Diwali — and noise pollution that scares old people, babies, dogs and birds. Many children get burns. We can celebrate a better Diwali by lighting more diyas with oil, making beautiful rangoli with flowers and natural colours, meeting family, eating healthy home-made sweets instead of adulterated market sweets, gifting books, plants or handmade cards, and using electric lights instead of smoke. A safe and clean Diwali is a truly happy Diwali. Supreme Court also says burst only green crackers with less smoke and that too for limited time.

So this Diwali, let us light a diya outside on our door and also a diya inside our heart — a diya of honesty, kindness, hard work and courage. Let us promise to study well, help our parents daily, be good friends, and not bully anyone. That inner light will stay even when outside lights go off. That is the real light of Diwali and real education.





Dussehra - Why Good Always Wins



Ten days before Diwali comes another very important festival of India— Dussehra. It is also called Vijayadashami, which means the tenth day of victory. Dussehra is celebrated with great joy all over India, from Kashmir to Kanyakumari, but in different styles. In some places like Delhi and Punjab, huge effigies of Ravana, Meghnad and Kumbhakaran are burnt with fireworks. In West Bengal, Assam and Tripura, beautiful idols of Goddess Durga are worshipped for nine days and immersed on tenth day. In Mysore, Karnataka, it is celebrated as Nada Habba with grand elephant procession and palace lights. In Kullu, Himachal, it is a week-long international fair. But message everywhere is same— Good always wins over evil, truth always wins over lie.

Dussehra has two famous stories that every Indian child should know. First story is from Ramayana. Ravana, the powerful king of Lanka, had ten heads and twenty arms. He was son of sage Vishrava, he was very knowledgeable—he knew four Vedas, six Shastras, he was a great devotee of Lord Shiva, he wrote Shiv Tandav Stotram, he played Veena beautifully. But he became proud, arrogant and evil. He thought no one can defeat him because of boon from Brahma. He kidnapped Sita, wife of Lord Rama, when Rama was in forest exile for 14 years. Lord Rama, with help of his brother Lakshmana, his devotee Hanuman who could fly, and army of monkeys and bears led by Sugriva and Jambavan, fought fierce battle with Ravana for many days in Lanka. Finally, on tenth day, Shukla

Paksha of Ashwin month, Rama used Brahmastra and defeated Ravana. That day is celebrated as Dussehra. The ten heads of Ravana are symbolic—they represent ten bad qualities that live inside us— Kama (lust), Krodha (anger), Lobha (greed), Moha (attachment), Mada (pride), Matsarya (jealousy), Swarth (selfishness), Anyaya (injustice), Amanavta (cruelty) and Ahankara (ego). When we burn Ravana effigy, we should promise to burn one bad quality inside us too. Burning outside Ravana is easy, burning inside Ravana is real Dussehra.

Second story is about Goddess Durga and is celebrated as Navratri. There was a demon named Mahishasura, who was half buffalo, half man. He got a boon that no man or god can kill him. He became very powerful and defeated





all gods, captured heaven. All gods together— Brahma, Vishnu, Shiva— created a powerful goddess from their energies, Durga, with ten arms, weapons in each hand, riding a lion, with radiant face. She is also called Mahishasura Mardini— destroyer of Mahishasura. She fought with Mahishasura and his army for nine nights and nine days— Navratri. On tenth day, she finally beheaded him. That is why nine days before Dussehra are called Navratri (nine nights), and tenth day is Vijayadashami, day of victory of goddess. In Bengal, Durga Puja is a big festival, with huge pandals, dhunuchi dance, sindoorkhela.

What can children learn from Dussehra? Many lessons. First, knowledge without character is dangerous. Ravana was the most intelligent person of his time, but he used his knowledge to kidnap another's wife, to insult rishis, to be arrogant. So just being intelligent, getting 95% marks, is not enough; we must also be good, humble and respectful. Rama was not only a brave warrior but also kind, obedient to his parents— he left palace for 14 years just because promised he his father— respectful to elders, loving to younger brother, faithful to wife. That is why we call him Maryada Purushottam— ideal man. Second, courage and unity. Rama did not fight alone. He took help of monkeys, bears, humans, even squirrels who helped build Ram Setu bridge by carrying small stones. Small help matters. Third, women empowerment. Sita was brave— she refused to bow to Ravana even in Ashok Vatika. Durga shows feminine power can defeat biggest evil.

Today, evil does not mean only demons with ten heads and swords. Evil today can be telling lies to parents, bullying a weak child in class, cheating in exams, copying homework, wasting food when many sleep hungry, not respecting elders and teachers, watching wrong things on phone, being jealous

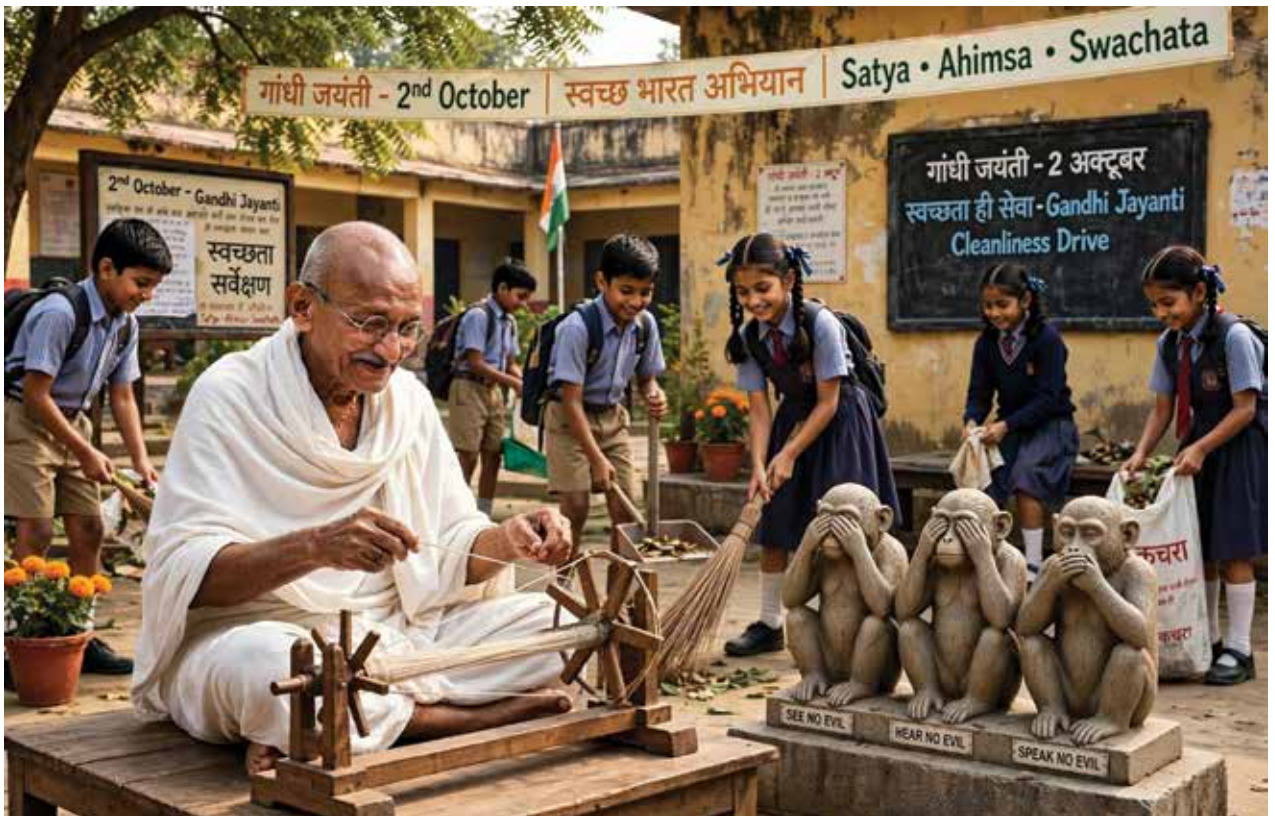


of friend's marks. Goodness means helping someone without expectation, speaking truth even if you will be scolded, studying honestly, keeping surroundings clean, respecting girls, helping mother in kitchen. Dussehra asks us to choose goodness daily.

In school, Dussehra teaches management also. Ramleela, which is played for 10 days, involves hundreds of students— actors, costume, lights, sound, crowd control. It teaches teamwork, leadership, public speaking.

Mysore Dussehra teaches culture, music, history.

So this Dussehra, let us not just watch Ravana burn and clap and eat candy floss. Let us write down on paper one bad habit we want to leave — like getting angry quickly, or watching too much a phone or lying, or not waking up early— and mentally burn that habit with Ravana. Ask parents to help. That will be true Vijayadashami— victory over your own weakness.



Gandhi Jayanti - The Power of Truth

Every year on 2nd October, we celebrate Gandhi Jayanti. It is the birthday of Mohandas Karamchand Gandhi, whom we lovingly call Bapu, Gandhiji and Mahatma — great soul. It is a national holiday in India, and also celebrated as International Day of Non-Violence all over the world by United Nations, because Gandhi's way of non-violence inspired Martin Luther King Jr in USA, Nelson Mandela in South Africa, and many other leaders.

Who was Gandhiji? He was a small boy born in Porbandar, Gujarat in 1869, in a middle-class family. He was shy, average in studies, afraid of

darkness as a child, scared of thieves and ghosts. He was not the strongest boy in his class, he could not speak loudly in court initially. But he had two very strong powers that no one could defeat — truth (Satya) and non-violence (Ahimsa). And with these two powers, without guns, without swords, without army, he gave freedom to a whole country of 30 crore people from mighty British Empire who ruled half the world. How amazing is that? That is why Einstein said, "Generations to come will scarce believe that such a one as this ever in flesh and blood walked upon this earth."

When Gandhi grew up, he became a lawyer and went to South Africa to fight a case. There he saw that Indians were treated very badly because of their colour — they were called coolie, they could not travel in first class, they had to remove their turbans. Once he was thrown out of a first-class train at Pietermaritzburg station despite having a ticket, because he was brown. That night in the cold waiting room, he decided to fight injustice, but not with fighting, not with revenge. He started a new way called Satyagraha — which means holding on to truth firmly, insistence on truth, soul force. He said, we will not hit back even if someone hits us, we will not abuse even if abused, but we will not obey wrong rules, we will bear punishment peacefully. Truth will win.

When he came back to India in 1915, India was ruled by the British for 200 years. Indians were not free,





they had no rights, they paid heavy taxes, they were made to grow indigo and not food. Gandhi led many movements that are in your history books— Champaran Satyagraha in 1917 for poor farmers in Bihar who were forced to grow indigo, Kheda Satyagraha for farmers hit by famine, Ahmedabad Mill Strike for workers, Non-Cooperation Movement in 1920 when he asked Indians to leave British schools, colleges, jobs and use swadeshi, Dandi March in 1930 when he walked 384 km from Sabarmati Ashram to Dandi beach in Gujarat to make salt and break salt law— British had monopoly on salt, poor could not make salt from sea— and Quit India Movement in 1942 when he said British must Quit India, Do or Die. He walked from village to village with a bamboo stick and a simple dhoti made of khadi, asking people to be clean, to spin their own cloth on a charkha to be self-reliant, to not drink alcohol, to remove untouchability, to love all religions— he sang Raghupati Raghav Raja Ram and also respected Quran and Bible. He called poorest people Harijans, meaning children of God,

and stayed in their colonies.

Gandhiji's life teaches children three golden lessons that are more important today for Class 12 students facing competition and social media pressure. First, Truth Always Wins— Satya Meva Jayate is our national motto. Gandhiji said that even if truth is painful for a moment, it is peaceful forever, while lie gives temporary relief but lifelong fear. If you break a glass at home or get low marks, tell the truth immediately to parents and teachers. They may scold you once, but they will trust you forever. A student who is truthful will sleep peacefully.

Second, Non-Violence is Real Strength, not weakness. Anyone can hit back, abuse back, anyone can troll on Instagram. But it takes real courage to stay calm and talk nicely when someone is angry, to forgive. If someone bullies you in school, don't bully back, don't fight. Tell a teacher, tell the counsellor, talk it out, use non-violent communication. Bapu said an eye for an eye will make whole world blind.

Third, Simple Living and High Thinking. Gandhiji had very few

things— a pair of spectacles, a stick, a charkha, a Gita, a watch. He believed happiness does not come from having many toys, branded clothes, expensive phones, but from good thoughts and good work. He used to wash his own clothes, clean his own toilet in ashram. Today when we waste money on fast fashion and new phones every year, Gandhi teaches sustainability— use less, reuse.

On Gandhi Jayanti, schools have cleaning programmes under Swachh Bharat, prayer meetings, spin charkha, sing his favourite bhajan Raghupati Raghav Raja Ram and Vaishnav Jan To. We remember his three monkeys from his ashram— See No Evil, Hear No Evil, Speak No Evil— which means don't see bad things, don't listen to bad talk, don't speak lies and abuse.

This Gandhi Jayanti, let us try to be little Gandhis for one week. Let us keep our classroom clean without waiting for a sweeper, let us tell only the truth for one full day even if difficult, let us share our tiffin with a new friend or poor child, and let us make something with our own hands instead of buying— a paper bag, a card, a bookmark. That is a real tribute.



World Space Week - Our Journey to the Stars



Look up at the night sky in October. What do you see? Thousands of shining stars, the bright moon, constellations like Saptarishi, and sometimes a fast-moving dot which is not a star but a satellite or International Space Station. Have you ever dreamed of going there, floating, seeing Earth as a blue ball? World Space Week, celebrated every year from October 4th to 10th, is a festival for dreamers like you, for future scientists, astronauts and engineers.

Why October 4th to 10th? On October 4th, 1957, humanity's space journey started when Soviet Union launched the first human-made satellite, Sputnik-1, a small beeping ball, into space. The whole world heard

its beep. And on October 10th, 1967, a treaty was signed at UN — Outer Space Treaty— that space belongs to everyone, all countries, no country can put weapons of mass destruction in space, and space should be used for peace. So these two dates mark the beginning of our space journey— technology and peace. United Nations declared World Space Week in 1999 to inspire students.

Space is huge, beyond imagination. Our Earth is just a tiny blue dot, like a grain of sand in a desert. Our Sun is a medium star, 13 lakh times bigger than Earth, and around it there are eight planets— Mercury, Venus, Earth, Mars, Jupiter, Saturn, Uranus, Neptune— plus dwarf planets like

Pluto, asteroids, comets. All these together are Solar System, which is 4.6 billion years old. And there are billions of such solar systems in our galaxy, Milky Way, which is so big that light takes 1 lakh years to cross it. And there are more than 2 trillion galaxies in the observable universe! So the universe is unimaginably big.

India is doing amazing work in space, and you should be proud as Indian students. Our space agency is called ISRO— Indian Space Research Organisation, headquartered in Bengaluru, started by Dr. Vikram Sarabhai, father of Indian space programme, in 1969. Do you know what ISRO has done with very less money? It sent Chandrayaan-1 in 2008



to the Moon and for the first time in world, it found water molecules on the Moon — NASA confirmed. Chandrayaan-2 in 2019 orbited the Moon and took high-resolution pictures. Chandrayaan-3 made history on 23rd August 2023 when its Vikram lander landed softly near the South Pole of the Moon— India was first country in world to land on Moon's south pole, where water ice may be present. Rover Pragyan roamed and did experiments. Then we sent Aditya-L1 in 2023 to study the Sun— it is now at Lagrange Point 1, 15 lakh km from Earth, studying solar flares. We sent Mangalyaan (Mars Orbiter Mission) in 2013 to Mars— and that too in the first attempt and at the cost of only 450 crore rupees, less than the Hollywood movie Gravity which cost 600 crore. World was shocked. ISRO also launched 104 satellites in one rocket in 2017— world record.

Why should school children care about space? Because space technology

helps us every day. When you watch TV, weather report, when your parents use Google Maps, when farmers check monsoon, when fishermen get cyclone warning, when soldiers guard the border— all comes from satellites like INSAT, GSAT, Cartosat in space. Space research also gives us new medicines, better water purifiers, lightweight materials, fire-resistant clothes, even memory foam used in mattresses came from NASA.

Space Week teaches us to dream big and work hard and be curious. To become a scientist like Kalpana Chawla— first Indian woman in space, born in Karnal, Haryana, went in Columbia shuttle in 1997 and 2003— Rakesh Sharma— first Indian in space in 1984 who said "Saare Jahan Se Achha" when asked how India looks from space— Dr. A.P.J. Abdul Kalam who made satellite launch vehicle SLV— you need to love maths and science, ask many questions, read books, do experiments, never be afraid

of failing. Kalam sir said, Dream is not what you see in sleep, dream is something that does not let you sleep.

This Space Week, you can do many fun things in school. Make a model of the Solar System with thermocol balls of different sizes painted— Jupiter biggest. Visit a planetarium if there is one in your city— Nehru Planetarium Delhi, Pushpa Gujral Science City Kapurthala. Read about astronauts, watch Chandrayaan-3 landing video. Try to spot Jupiter at night— it looks like a very bright star that does not twinkle, currently visible. Make a rocket with a bottle. Write an essay on 'If I become an Astronaut'.

Remember, 100 years ago people thought flying in the air was impossible, Wright Brothers were laughed at. Today we fly to the Moon and soon to Mars. 100 years later, in 2126, you may be living on a Mars colony, mining asteroids. So keep your eyes on the stars and your feet on ground, study hard now.





Festivals that Bring us Together - Unity in Diversity

India is not a country of one religion or one language or one dress. India is a garden with many types of flowers— different colours, different fragrances, but same garden, same soil. We have Hindus, Muslims, Sikhs, Christians, Jains, Buddhists, Parsis, tribals and many more— more than 9 major religions. We speak more than 22 official languages in Constitution and more than 19,500 dialects, we wear different clothes— saree, salwar, lungi, dhoti, pheran, mekhela. We eat different food— idli-dosa in South, chhole-bhature in North, dhokla in West, momos in North-East. But when it comes to festivals, we all become one family, we visit each other's homes, we share sweets. That is why India is famous in world for Unity in Diversity— Ekta Mein Aneka— and this is what our Constitution also teaches. No other country has such diversity living peacefully together.

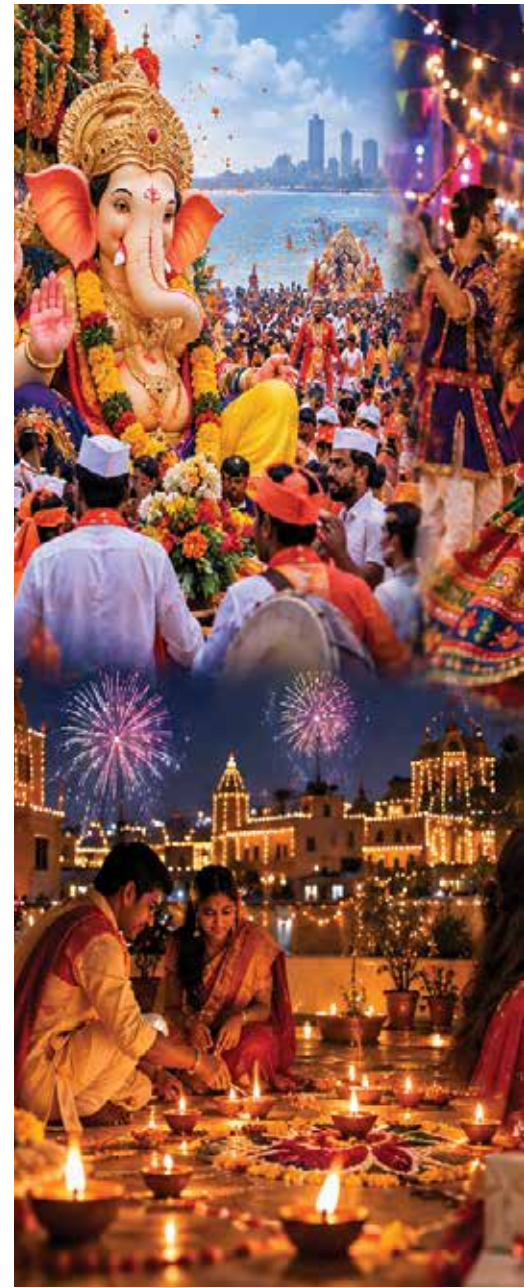
Let us take a journey through festivals that bring us together.

First, Eid. Eid is celebrated by Muslims, who are about 15% of India. There are two Eids— Eid-ul-Fitr after the holy month of Ramzan, and Eid-ul-Adha. During Ramzan, Muslims fast from morning 4 am to evening 7 pm for 30 days— no food, no water during day— to learn self-control, empathy for poor, and devotion. On Eid-ul-Fitr, they wear new clothes, often white kurta pajama, go to mosque or Eidgah to pray in large congregation, hug each other three times and say Eid Mubarak, you forgive everyone.

They make sweet sevaiyaan made of milk and vermicelli and share with all neighbours— Hindu, Sikh, Christian, everyone is invited. The meaning of Eid is happiness and sharing. On Eid, people give Zakat, which means giving 2.5% of savings to poor, and Fitra— food. What a beautiful thought— festival is incomplete without giving to poor.

Then comes Christmas, on 25th December, celebrated by Christians, about 2.3% of India. It is birthday of Lord Jesus Christ, who was born in Bethlehem, who taught love, forgiveness, compassion— Love thy neighbour, Love thy enemy, Help the poor. On Christmas, Christians go to church at midnight, sing carols like Silent Night, Jingle Bells, decorate a Christmas tree with lights and stars, and Santa Claus, inspired by Saint Nicholas, gives gifts to children, especially poor. Children make Christmas cards, sing Jingle Bells, make crib of Jesus birth, share cakes and chocolates, do plays about Jesus birth. The message of Christmas— peace, love, giving— belongs to everyone, not just one religion. Many Indian Christians in Kerala, Goa, North-East have celebrated Christmas for 2000 years— Christianity came to India in 52 AD with St. Thomas.

Then Gurpurab, the birthday of Guru Nanak Dev Ji and other Sikh Gurus. Guru Nanak Dev Ji, born in 1469 in Nankana Sahib, taught Ek Onkar— God is One, all humans are equal, no caste, honest living, share



food. On Gurpurab, Gurudwaras are decorated with lights. Nishan Sahib flag changed, people do Prabhat Pheri early morning with singing, sing Shabads and Kirtan, and arrange Langar— a community kitchen started by Guru Nanak where everyone, rich or poor, Hindu or Muslim, man or woman, sits on floor together in pangat





happens inside us— fear goes away, misunderstanding goes away. We understand each other's culture, food, language. A Hindu child who goes to his Muslim friend's house for Eid and eats sevaiyaan learns about his culture, that they also love family. A Muslim child who lights a diya on Diwali learns about light winning over darkness. A Sikh child who gets Christmas cake learns about love. This is how friendship grows, how India stays united.

We should celebrate all festivals together as Unity Week. Not just my festival or your festival, but OUR festival. We can have a calendar where every month we learn about one festival of a different religion— January Lohri and Pongal, February Maha Shivratri, March Holi and Good Friday, April Baisakhi and Easter and Eid, May Buddha Purnima, August Independence Day and Raksha Bandhan and Janmashtami, September Onam and Ganesh Chaturthi, October Gandhi Jayanti and Navratri and Dussehra, November Diwali and GURPURAB and Christmas in December. We can invite parents from different communities to tell stories, bring food. This is real secularism.

The Indian Constitution, written by Dr. B.R. Ambedkar, gives us Right to Freedom of Religion (Article 25-28)— you can follow any religion, but also says to respect all religions, and Article 51A says promote harmony and brotherhood. This is called Secularism— Sarva Dharma Sama Bhava— all religions are equal.

So let us promise on this October: We will not fight over whose festival is bigger, louder, more holidays. We will make every festival bigger by celebrating it together, inviting everyone. Because when we share sweets, we don't lose sweetness, we double it. When we share light, darkness goes faster.

and eats same simple food— dal, roti, sabzi, kheer— served by volunteers. At Golden Temple Amritsar, Langar feeds more than 1 lakh people every single day for free, 24 hours. That is true equality and unity— concept of no one sleeps hungry.

Then there are festivals like Buddha Purnima, when Buddhists remember

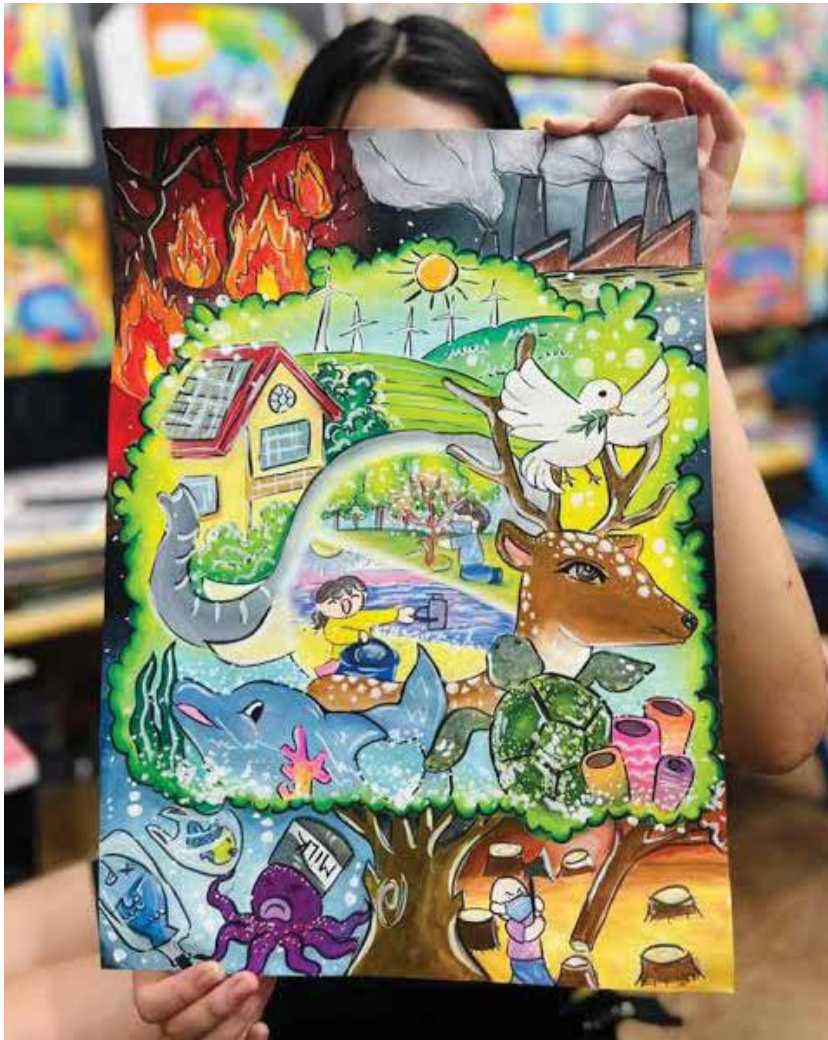
Lord Buddha's birth, enlightenment and nirvana— he taught Ahimsa and middle path. Mahavir Jayanti for Jains who teach non-violence. Good Friday and Easter for Christians. Hornbill Festival in Nagaland, where tribal culture is showcased.

When we celebrate each other's festivals, something magical





Save Our Earth - A Festival for Nature



We celebrate many festivals for gods, for harvests, for seasons, for historical events. We celebrate birthdays of great people. But now in 21st century, we need to celebrate a festival for the one who gives us everything— air to breathe, water to drink, food to eat, clothes, house, medicines, beauty— Mother Earth, Dharti Mata, Prakriti. Our Earth is not

just soil and stones. It is living— it has air (Vayu), water (Jal), trees and animals (Jeev), soil (Prithvi), sun energy (Agni). Our ancient rishis called it Pancha Mahabhoota— five great elements.

For many years, especially for last the 100 years after industrial revolution, we have not taken good care of Earth. We cut trees to make buildings, malls, roads— India lost 30% forest in 100



years. We throw plastic in rivers— Yamuna, Ganga all have plastic. We waste water— one person in city uses 150 litres per day while village gets 40 litres. We drive too many cars, burn coal for electricity, which makes air dirty— Delhi, Chandigarh AQI often 300+ which is hazardous. Because of this, Earth is getting sick— scientists call it climate change and global warming. Temperature increased by 1.2 degrees in 100 years. Glaciers in Himalayas are melting fast, sea level is rising— Mumbai, Chennai may go under water by 2100. Many animals like tigers, elephants, sparrows, vultures, Ganges dolphin are disappearing. 8 million tonnes of plastic go into oceans every year, fish eat plastic, we eat fish— plastic comes to us.

But just like we clean our house before Diwali, we can clean and heal our Earth too, if we start now, especially students because you will live next 70 years on this Earth. Every year, World Environment Day is celebrated on 5th June— theme 2024 was Land Restoration. Van Mahotsav is celebrated in first week of July in India since 1950, when we plant trees. Earth Day is on 22nd April since 1970. Chipko Movement in Uttarakhand where women hugged trees to save them is our own history. These are like festivals for nature, and we should





celebrate them as big as Diwali.

How can school children, like you, save Earth? You don't need to be big. Small actions every day by crores of students become big change, become andolan.

First, Save Trees, Plant Trees — Ped Lagao, Desh Bachao. One large tree gives oxygen to two people for whole year, absorbs 22 kg CO₂, gives shade reducing temperature by 5 degrees, gives fruits, gives home to 100 birds, insects, squirrels, and stops floods by holding soil. So plant trees in your school, at home, on birthdays. Instead of cutting trees for birthday decoration with plastic balloons that harm cows, gift a plant — Tulsi, Neem, Peepal, Mango. Take care of it, water it, give it a name, measure its height every month. Your school can have one tree per child programme.

Second, Save Water — Jal Hai To Kal Hai. Did you know that to make one litre of bottled water in factory, three litres of water is wasted? And to make one page of A4 paper, 10 litres of water is used? And one kg of cotton t-shirt needs 10,000 litres water? So close tap while brushing — you save 15 litres per day — fix leaking taps in school, use a bucket instead of shower, don't waste drinking water, use RO waste water for plants, and don't waste paper — both sides use.

Third, Say No to Plastic — Plastic Hatao, Prithvi Bachao. Plastic takes 500 years to decompose — that plastic bag you throw today will still be in Earth when your great-grand children are old. It chokes cows — 20 kg plastic found in cow stomach in some cities — chokes drains causing floods. Use cloth bags made by mother or self-help groups, steel bottles and steel tiffins, not plastic bottles that you throw. Don't throw wrappers on roads, keep in pocket. Bazaars can be made plastic-free if students campaign.

Fourth, Save Animals and Birds. Keep a small earthen bowl — sakora — of water and some grains like bajra

on your roof or balcony in summer — March to June — for birds, squirrels, pigeons. Don't throw stones at dogs, don't scare them. Feed community dogs leftover roti, not stones. Don't use glass manja for kites.

Fifth, 3Rs — Reduce, Reuse, Recycle — which is now taught in NEP 2020. Reduce what you need — do you need 10 pens or 2? Reuse old notebooks as rough books — last pages often blank. Reuse old clothes as bags. Recycle paper, plastic, metal by giving to kabadiwala, not throwing in dustbin.

Sixth, Save Electricity — Bijli Bachao. Switch off lights, fans when not in room. Use natural light in day. Use cycle or walk for short distance, not bike. Use public transport.

Imagine if every student in your school — say 1000 students — plants just one tree every year and takes care of it for 5 years. In 10 years, your school will have a forest of 10,000 trees! Temperature will drop by 2 degrees around school. Imagine if you save one bucket of water every day, 20 litres,

you will save more than 7,000 litres in a year — enough for one family for a month.

Earth is our only home. Scientists have searched, there is no Planet B, no second Earth within reachable distance. Mars has no air, no water. If we keep Earth happy, Earth will keep us happy with fresh air, clean water, good food, beautiful birds.

So this year, let us make a new festival in school calendar — Earth Festival or Prakriti Parv — on 5th June or any day in October. On that day, we will not burst crackers, we will plant saplings. We will not buy new plastic things, we will make toys from waste — best out of waste. We will thank Sun, River, Trees, Animals with songs. We will clean Ghaggar river bank or school pond.

Let us take pledge together, standing: I promise to keep my Earth green and clean, because I love my Earth, my India, my future. I will plant trees, save water, say no to plastic. Jai Hind, Jai Dharti.





आदरणीय संपादक महोदय!

सादर नमस्कार।

शिक्षा सारथी का गतांक जुलाई - अगस्त 2026 पढ़ा। आवरण पृष्ठ को देखते ही एहसास हुआ कि पत्रिका का यह अंक हमारे युवाओं के सपनों को पंख लगाने वाले सशक्त मंच, 'सुपर-100' के विषय में विशेष जानकारी देने वाला होगा।

डॉ. प्रदीप राठौर जी और दीपा रानी जी ने अपने लेखों के माध्यम से सुपर-100 की हर वो बात साँझा की, जो प्रत्येक शिक्षक और छात्र को पता होनी चाहिए। सुभाष शर्मा जी के प्रस्तुतीकरण- 'स्ट्रिप्ट प्रशिक्षण शिविर ने खिलाड़ियों में भरी नई ऊर्जा' को पढ़कर बोध हुआ कि केंद्र सरकार की इस परियोजना को लागू करने वाला हमारा हरियाणा देश का प्रथम राज्य है। सच कहूँ तो इस तरह की बातें सुनकर सीना गर्व से फूल जाता है। प्रवीण जी के आलेख में शिक्षा में एआई के प्रयोग पर बल दिया गया। एक ओर जहाँ पिकी जी ने 'मनाली की बर्फीली वादियों में साहस, संस्कृति और राष्ट्र-प्रेम' को अपनी शब्दमाला में पिरोया है, वहीं मनोज वशिष्ठ जी ने भी, 'मोरनी हिल्स की वादियों में स्काउट मास्टर की जीवंत डायरी' लिखकर पत्रिका को रंगीन बना दिया है। सुदेश रानी जी ने भी पहेलियों के इतिहास को वर्तमान से जोड़कर एक अनूठी जानकारी दी है। खेल-खेल में विज्ञान, बाल सारथी, श्री कृष्ण जन्माष्टमी, रक्षाबंधन आदि सभी विषय सामयिक रूप से प्रस्तुत किए गए।

आशा है, प्रत्येक पाठक पत्रिका के इस अंक से प्रभावित और लाभान्वित होगा। संपादन-मंडल को हार्दिक बधाई।

नीलम देवी

पीजीटी संस्कृत

रावमा विद्यालय गिगनाऊ

खंड - लोहारु, भिवानी, हरियाणा



आदरणीय संपादक महोदय!

सादर नमस्कार।

'शिक्षासारथी' का जुलाई-अगस्त अंक पढ़कर मन प्रसन्न हो गया। इस अंक में शिक्षा के विविध आयामों को जिस सुंदरता और सहजता से प्रस्तुत किया गया है, वह इसे केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनाता है।

हरियाणा के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धियों पर आधारित 'हरियाणा सुपर-100 बना प्रतिभाओं की उड़ान का सशक्त मंच' जैसे आलेख यह विश्वास जगाते हैं कि उचित मार्गदर्शन और अवसर मिलने पर प्रतिभाएँ किसी भी ऊँचाई को छू सकती हैं। सरकारी विद्यालयों से आईआईटी और एम्स तक पहुँचने वाले विद्यार्थियों की सफलता निश्चित रूप से अन्य विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायी है। इस अंक में शिक्षा के साथ खेल, विज्ञान, साहसिक गतिविधियों और सांस्कृतिक अनुभवों को भी समान महत्त्व दिया गया है। स्ट्रिप्ट प्रशिक्षण, साकुरा साईंस कार्यक्रम, कक्षा-तत्परता कार्यक्रम, मनाली और मोरनी के साहसिक अनुभव तथा भाषा और संस्कृति से जुड़े आलेख विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की सुंदर तस्वीर प्रस्तुत करते हैं।

'खेल-खेल में विज्ञान और 'मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला' जैसे विषय यह समझाने में सफल हैं कि सीखना केवल कक्षा और पुस्तकों तक सीमित नहीं है। हमारे आसपास की दुनिया भी सीखने की एक बड़ी प्रयोगशाला है। वहीं 'बालसारथी' जैसी सामग्री बच्चों के लिए पत्रिका को और अधिक आत्मीय बनाती है।

'शिक्षासारथी' की पूरी टीम को इस प्रेरक और ज्ञानवर्धक अंक के लिए हार्दिक बधाई। आशा है कि पत्रिका इसी प्रकार शिक्षा जगत् की उपलब्धियों, नवाचारों और विद्यार्थियों की प्रतिभाओं को पाठकों तक पहुँचाती रहेगी।

सरबजीत कौर

पीजीटी केमिस्ट्री

रावमा विद्यालय सेक्टर-19, पंचकुला



जागें जीवन गढ़ने वाले

कंटक पथ पर बढ़ने वाले,
अंधकार से लड़ने वाले।
द्वार खड़ा है प्रमुदित सूरज,
जागें जीवन गढ़ने वाले॥

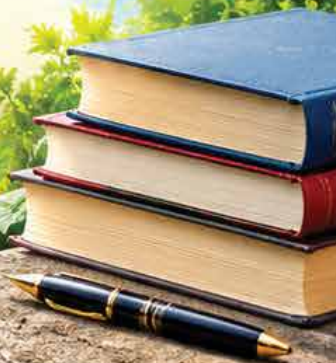
पंछी नभ में चित्र बनाते,
तरुवर पात हिला हरषाते।
नाचें जलचर दे-दे ताली,
जीवन में उत्साह जगाते॥

रजनी कब की है बीत गई,
उठ गरमी बारिश शीत गई।
समय फलक पर लिखना होगा,
मानव मन की मधु प्रीत नई॥

वसुधा अम्बर का प्यार जगा,
अनुबंध लिखा मनुहार पगा।
रवि किरणों से आँख मिली तो,
मुँह छिपा अँधेरा हार भगा॥



प्रमोद दीक्षित मलय
शिक्षक, बाँदा, उत्तर प्रदेश



भारत माता

दिशा-दिशा में गूँज रहा है, भारत माता का जयगान।
 भारत का संदेश विश्व को, मानव-मानव एक समान।
 यहाँ सृष्टि के आदि काल में, समता का सूरज चमका,
 करुणा की किरणों से खिलकर, धरती का मुखड़ा दमका।
 सुनो! मनुजता को हमने ही, आत्म-त्याग सिखलाया है,
 लालच और लोभ को तजकर, संयम का पाठ पढ़ाया है।
 जो जग के कण-कण में रहता, सब प्राणी उसकी संतान।
 भारत का संदेश विश्व को, मानव-मानव एक समान।
 रहें कहीं हम, लेकिन शीतल, मंद सुगंधें खींच रही,
 यह धरती अपनी बाहों में, परम प्रेम से भींच रही।
 सारे धर्मों, सभी जातियों, सब रंगों, सब नस्लों को,
 ब्रह्मपुत्र, कावेरी, गंगा, कृष्णा, झेलम सींच रही।
 ऊँच-नीच का भेद नहीं कुछ, सद्गुण का होता सम्मान।
 भारत का संदेश विश्व को, मानव-मानव एक समान।
 हमने सदा न्याय के हक में, ही आवाज उठाई है,
 अपनी जान हथेली पर ले, अपनी बात निभाई है।
 पुरजा-पुरजा कट मरने की, सदा रखी तैयारी भी,
 वंचित-पीड़ित-दीन-हीन की, अस्मत् सदा बचाई है।
 जन-गण के कल्याण हेतु हम, सत्पथ पर होते बलिदान।
 भारत का संदेश विश्व को, मानव-मानव एक समान।
 दिशा-दिशा में गूँज रहा है, भारत माता का जयगान।
 भारत का संदेश विश्व को, मानव-मानव एक समान।

— ऋषभ देव शर्मा
 (कविता कोश से साभार)